1 राजा

1 इस समय दाऊद बहुत अधिक बूढ़ा हो गया था। वह अपनी गरमाई खो चुका था। उसके सेवक उसे कम्बल ओढ़ाते थे किन्तु वह फिर भी ठंडा रहता था। 2इसलिये उसके सेवकों ने उससे कहा, “हम आपकी देखभाल के लिये एक युवती की खोज करेंगे। वह आपके समीप लेटेगी और आपको गरम रखेगी।” 3इसलिये राजा के सेवकों ने इस्राएल प्रदेश में चारों ओर एक युवती की खोज आरम्भ की। वे राजा को गरम रखने के लिये एक सुन्दर लड़की की खोज कर रहे थे। उन्हें अबीशग नाम की एक लड़की मिली। वह शूनेमिन नगर की थी। वे युवती को राजा के पास ले आए। 4लड़की बहुत सुन्दर थी। उसने राजा की देख–रेख और सेवा की। किन्तु राजा दाऊद ने उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध नहीं किया।

5–6राजा दाऊद का पुत्र अदोनिय्याह बहुत घमण्डी हो गया। उसने घोषणा की, “मैं राजा बनूँगा।” अदोनिय्याह की माँ का नाम हग्गीत था। अदोनिय्याह राजा बनने का बहुत इच्छुक था। इसलिये वह अपने लिये एक रथ, घोड़े और आगे दौड़ने वाले पाँच सौ व्यक्तियों को लाया। राजा ने अपने पुत्र अदोनिय्याह को कभी सुधारा नहीं। दाऊद ने उससे कभी यह नहीं पूछा, “तुम ये कार्य क्यों कर रहे हो?” अदोनिय्याह वह पुत्र था जो अबशालोम के बाद उत्पन्न हुआ था। अदोनिय्याह एक बहुत सुन्दर व्यक्ति था।

7अदोनिय्याह ने सरुयाह के पुत्र योआब और याजक एब्यातार से बातें कीं। उन्होंने उसकी सहायता की। 8किन्तु बहुत से लोग उन कामों को ठीक नहीं समझते थे जिन्हें अदोनिय्याह कर रहा था। वे नहीं समझते थे कि वह राजा होने के योग्य हो गया है। ये लोग याजक सादोक, यहोयादा का पुत्र बनायाह, नातान, नबी, शिमी, रेई और राजा दाऊद के विशेष रक्षक थे। इसलिये ये लोग अदोनिय्याह के साथ नहीं हुए।

9तब अदोनिय्याह ने कुछ जानवरों को मेलबलि के लिये मारा। उसने कुछ भेड़ों, कुछ गायों और कुछ मोटे बछड़ों को मारा। अदोनिय्याह ने एनरोगेल के पास जोहेलेत की चट्टान पर ये बलियाँ चढ़ाई। अदोनिय्याह ने इस विशेष उपासना में अपने साथ आने के लिये अनेक व्यक्तियों को आमन्त्रित किया। अदोनिय्याह ने अपने सभी भाईयों, (राजा के अन्य पुत्रों) तथा यहूदा के समस्त राज्य कर्मचारियों को आमन्त्रित किया 10किन्तु अदोनिय्याह ने नातान नबी, या बनायाह या अपने पिता के विशेष रक्षक या अपने भाई सुलैमान को आमन्त्रित नहीं किया।

11जब नातान ने इसके बारे में सुना, वह सुलैमान की माँ बतशेबा के पास गया। नातान ने उससे पूछा, “क्या तुमने सुना है कि हग्गीत का पुत्र अदोनिय्याह क्या कर रहा है? उसने अपने को राजा बना लिया है और वास्तविक राजा दाऊद इसके बारे में कुछ नहीं जानता। 12तुम्हारा जीवन और तुम्हारे पुत्र सुलैमान का जीवन खतरे में पड़ सकता है। किन्तु मैं तुम्हें बताऊँगा कि अपने को बचाने के लिए तुम्हें क्या करना चाहिए। 13राजा दाऊद के पास जाओ और उससे कहो, ‘मेरे राजा, आपने मुझे वचन दिया था कि आपके बाद मेरा पुत्र सुलैमान अगला राजा होगा। फिर, अदोनिय्याह राजा क्यों बन गया है?’ 14तब, जब तुम उससे बात कर ही रही होगी, मैं अन्दर आऊँगा। जब तुम चली जाओगी तब मैं जो कुछ घटित हुआ है उसके बारे में राजा को बताऊँगा। इससे यह प्रदर्शित होगा कि तुमने अदोनिय्याह के बारे में जो कुछ कहा है, वह सत्य है।”

15अत: बतशेबा राजा के सोने के कमरे में अन्दर उससे मिलने गई। राजा बहुत अधिक बूढ़ा था। शूनेमिन से आई लड़की अबीशग वहाँ उसकी देख–रेख कर रही थी। 16बतशेबा राजा के सामने प्रणाम करने झुकी। राजा ने पूछा, “तुम क्या चाहती हो?”

17बतशेबा ने उत्तर दिया, "मेरे राजा, आपने अपने
परमेश्वर, यहोवा का नाम लेकर मुझसे प्रतिज्ञा की थी।
आपने कहा था, 'तुम्हारा पुत्र सुलैमान मेरे बाद राजा होगा।
मेरे सिंहासन पर सुलैमान शासन करेगा।' 18किन्तु अब
अदोनिय्याह राजा हो गया है और आप इसे जानते भी
नहीं। 19अदोनिय्याह ने मेलबलि के लिये कई जानवरों
को मार डाला है। उसने बहुत से बैलों, मोटे बछड़ों और
भेड़ों को मारा है और उसने आपके सभी पुत्रों को आमन्त्रित
किया है। उसने याजक एब्यातार और आपकी सेना के
सेनापति योआब को भी आमन्त्रित किया है। किन्तु उसने
आपके पुत्र सुलैमान को आमन्त्रित नहीं किया, जो आपकी
सेवा करता है। 20मेरे राजा, इस्राएल के सभी लोगों की
आँखे आप पर लगी हैं। वे आपके इस निर्णय की प्रतीक्षा
कर रहे हैं कि आपके बाद कौन राजा होगा। 21जब आप
मरेंगे तो आप अपने पूर्वजों के साथ दफनाये जायेंगे। उस
समय लोग यहीं कहेंगे कि मैं और सुलैमान अपराधी हैं।"

22जब बतशेबा राजा से बातें कर रही थी, नातान नबी
उससे मिलने आया। 23सेवकों ने राजा से कहा, "नातान
नबी आये हैं।" अत: नातान ने प्रवेश किया और राजा के
पास गया। नातान राजा के सामने धरती तक झुका। 24तब
नातान ने कहा, "मेरे राजा, क्या आपने यह घोषणा कर
दी है कि आपके बाद अदोनिय्याह नया राजा होगा? क्या
आपने यह निर्णय कर लिया है कि आपके बाद अदोनिय्याह
लोगों पर शासन करेगा। 25आज उसने घाटी में विशेष
मेलबलियाँ भेंट की हैं। उसने कई बैलों, मोटे बछड़ों और
भेड़ों को मारा है और उसने आपके अन्य सभी पुत्रों, सेना
के सेनापति और याजक एब्यातार को आमन्त्रित किया
है। अब वे उनके साथ खा रहे हैं और पी रहे हैं और वे
कह रहे हैं, 'राजा अदोनिय्याह दीर्घायु हो!' 26किन्तु उसने
मुझे या याजक सादोक, यहोयादा के पुत्र बनायाह या आपके
पुत्र सुलैमान को आमन्त्रित नहीं किया। 27क्या यह आपने
किया है? हम आपकी सेवा और आपकी आज्ञा का पालन
करते हैं। आपने हम लोगों से पहले ही क्यों नहीं कहा कि
आपने उसे अपने बाद होने वाला राजा चुना है?"

28तब राजा दाऊद ने कहा, "बतशेबा से अन्दर
आने को कहो!" अत: बतशेबा अन्दर राजा के सामने
आई।

29तब राजा ने एक प्रतिज्ञा की: "यहोवा परमेश्वर
ने मुझे हर एक खतरे से बचाया है और यहोवा परमेश्वर
शाश्वत है। मैं तुम से प्रतिज्ञा करता हूँ। 30मैं आज वह
कार्य करूँगा जिसका वचन मैंने इसके पूर्व तुम्हें दिया
था। मैंने यह प्रतिज्ञा यहोवा इस्राएल के परमेश्वर की
शक्ति से की थी। मैंने प्रतिज्ञा की थी कि तुम्हारा पुत्र
सुलैमान मेरे बाद राजा होगा और मेरे बाद सिंहासन पर
मेरा स्थान वही लेगा। मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करूँगा।"

31तब बतशेबा राजा के सामने प्रणाम करने धरती
तक झुकी। उसने कहा, "राजा दाऊद दीर्घायु हों!"

32तब राजा दाऊद ने कहा, "याजक सादोक, नातान
नबी और यहोयादा के पुत्र बनायाह से यहाँ अन्दर आने
को कहो।" अत: तीनों व्यक्ति राजा के सामने आये।
33तब राजा ने उनसे कहा, "मेरे अधिकारियों को अपने
साथ लो और मेरे पुत्र सुलैमान को मेरे निजी खच्चर
पर बिठाओ। उसे गीहोन सोते पर ले जाओ। 34उस
स्थान पर याजक सादोक और नातान नबी, इस्राएल
के राजा के रूप में उसका अभिषेक करें। तुम लोग
तुरही बजाओगे और यह घोषणा करो, 'यह सुलैमान
नया राजा है।' 35तब इसके बाद उसके साथ यहाँ लौट
आओ। सुलैमान मेरे सिंहासन पर बैठेगा और हमारे
स्थान पर नया राजा होगा। मैंने सुलैमान को इस्राएल
और यहूदा का शासक होने के लिये चुना है।"

36यहोयादा के पुत्र बनायाह ने राजा को उत्तर
दिया, "आमीन! यहोवा परमेश्वर ने स्वंय यह कहा
है! 37मेरे स्वामी राजा, यहोवा ने हमेशा आपकी
सहायता की है। यहोवा सुलैमान की भी सहायता करे
और राजा सुलैमान आपसे भी बड़े राजा बनें।"

38अत: सादोक, नातान, बनायाह और राजा के
अधिकारियों ने राजा दाऊद की आज्ञा का पालन
किया। उन्होंने सुलैमान को राजा दाऊद के खच्चर
पर चढ़ाया और उसके साथ गीहोन के सोते पर गये।
39याजक सादोक ने पवित्र तम्बू से तेल लिया। सादोक
ने, यह दिखाने के लिये कि सुलैमान राजा है, उसके
सिर पर तेल डाला। उन्होंने तुरही बजाई और सभी
लोगों ने उद्घोष किया, "राजा सुलैमान दीर्घायु हों!"
40सभी लोग नगर में सुलैमान के पीछे आए। वे बीन
बजा रहे थे और उल्लास के नारे लगा रहे थे। वे
इतना उद्घोष कर रहे थे कि धरती काँप उठी।

41इस समय अदोनिय्याह और उसके साथ के सभी
अतिथि अपना भोजन समाप्त कर रहे थे। उन्होंने तुरही

की आवाज सुनी। योआब ने पूछा, "यह शोर कैसा है?
नगर में क्या हो रहा है?"

42जब योआब बोल ही रहा था, याजक एब्यातार
का पुत्र योनातन वहाँ आया। अदोनिय्याह ने कहा,
"यहाँ आओ! तुम अच्छे व्यक्ति* हो। अत: तुम मेरे
लिये शुभ सूचना अवश्य लाये होगे।"

43किन्तु योनातन ने उत्तर दिया, "नहीं! यह तुम्हारे
लिये शुभ सूचना नहीं है! हमारे राजा दाऊद ने सुलैमान
को नया राजा बनाया है 44और राजा दाऊद ने याजक
सादोक, नातान नबी, यहोयादा के पुत्र बनायाह और राजा
के सभी अधिकारियों को उसके साथ भेजा है। उन्होंने
सुलैमान को राजा के निजी खच्चर पर बिठाया। 45तब
याजक सादोक और नातान नबी ने गीहोन सोते पर सुलैमान
का अभिषेक किया और तब वे नगर में गये। लोगों ने
उनका अनुसरण किया और अब नगर में लोग बहुत
प्रसन्न हैं। यह शोर जो तुम सुनते हो, उसी का है। 46सुलैमान
अब राजा के सिंहासन पर बैठा है। 47राजा के सभी सेवक
राजा दाऊद से यह कहने आये हैं कि आपने यह अच्छा
कार्य किया है। वे कह रहे हैं, 'राजा दाऊद, आप एक
महान राजा हैं और अब हम प्रार्थना करते हैं कि आपका
परमेश्वर , सुलैमान को भी महान राजा बनाएगा। आपका
परमेश्वर सुलैमान को आपसे भी अधिक प्रसिद्ध राजा
बनाए और उसे आप जितने महान राजा थे उससे भी
अधिक महान राजा होने दे।' यहाँ तक कि राजा दाऊद
भी वहाँ थे, और राजा दाऊद अपने बिस्तर पर लेटे हुए
थे। 48राजा दाऊद ने कहा, 'इस्राएल के परमेश्वर यहोवा
की स्तुति करो। यहोवा ने मेरे पुत्रों में से एक को मेरे
सिंहासन पर बिठाया है और इसे मुझे देखने दिया है।'"

49तब अदोनिय्याह के सभी अतिथि डर गए और
शीघ्रता से चले गए। 50अदोनिय्याह भी सुलैमान से डर
गया था। इसलिये वह वेदी तक गया और वेदी के सींगो
को उसने पकड़ लिया।* 51तब किसी ने सुलैमान से
कहा, "अदोनिय्याह तुमसे बहुत भयभीत है। अदोनिय्याह
वेदी के पास है। उसने वेदी के सींगों* को पकड़ रखा
है और छोड़ने से इन्कार करता है। अदोनिय्याह
कहता है, 'राजा सुलैमान से यह प्रतिज्ञा करने को
कहो कि वह मुझे मारेगा नहीं।'"

52इसलिये सुलैमान ने उत्तर दिया, "यदि अदोनिय्याह
यह प्रमाणित करता है कि वह एक अच्छा आदमी है तो
मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि उसके सिर का एक बाल भी
बाँका नहीं होगा। किन्तु यदि वह कुछ बुरा करेगा तो
मार दिया जायेगा।" 53तब राजा सुलैमान ने कुछ व्यक्तियों
को अदोनिय्याह को लाने के लिये भेजा। वे व्यक्ति
अदोनिय्याह को सुलैमान के सामने ले आए। अदोनिय्याह
राजा सुलैमान के सामने आया और झुककर प्रणाम
किया। तब सुलैमान ने कहा, "घर जाओ।"

2 दाऊद के मरने का समय लगभग आ पहुँचा। इसलिये
दाऊद ने सुलैमान से बातें कीं और उससे कहा,
2"मेरे मरने का समय निकट आ गया है। जैसे हर एक
व्यक्ति का आता है। लेकिन तुम एक शक्तिशाली पुरुष
बन रहे हो। 3उन सभी आदेशों का सावधानीपूर्वक पालन
करो जिन्हें यहोवा परमेश्वर ने हमें दिया है।
सावधानीपूर्वक उसके सभी नियमों का पालन करो, और
वे कार्य करो जो उसने हमें कही है। सावधानी से उन
नियमों का पालन करो जो मूसा की व्यवस्था की किताब
में लिखी है। यदि तुम इन सभी का पालन करोगे तो तुम
जो कुछ करोगे और जहाँ कहीं जाओगे, सफल होगे
4और यदि तुम यहोवा की आज्ञा का पालन करते रहोगे
तो यहोवा मेरे लिये की गई प्रतिज्ञाओं का पालन करेगा।
मेरे लिये यहोवा ने जो प्रतिज्ञा की, वह यह है, 'तुम्हारे
पुत्रों को मेरी आज्ञा का पालन करना चाहिये और उन्हें
वैसे रहना चाहिये जैसा रहने के लिये मैं कहूँ। तुम्हारे
पुत्रों को पूरे हृदय और आत्मा से मुझमें विश्वास रखना
चाहिये। यदि तुम्हारे पुत्र यह करेंगे तो तुम्हारे परिवार
का एक व्यक्ति सदा इस्राएल के लोगों का शासक होगा।'"

5दाऊद ने यह भी कहा, "तुम यह भी याद रखो कि
सरुयाह के पुत्र योआब ने मेरे लिये क्या किया। उसने
इस्राएल की सेना के दो सेनापतियों को मार डाला। उसने
नेर के पुत्र अब्नेर और येतेर के पुत्र अमासा को मारा।
तुम्हें याद होगा कि उसने उन्हें बदले की भावना से प्रेरित
होकर शान्ति के समय इसलिये मारा क्योंकि उन्होंने दूसरों

अच्छे व्यक्ति "महत्वपूर्ण व्यक्ति" इस हिब्रू शब्द का अर्थ ऊँचे खानदान का व्यक्ति है।

वेदी के सींगों को पकड़ लिया यह प्रकट करता था कि वह दया की भीख माँग रहा है। यदि कोई व्यक्ति निरपराध होता था और वह पवित्र स्थान में भाग कर जाता था और वेदी के कोनों को पकड़ता था तब उस व्यक्ति को दण्ड नहीं मिलता था।

वेदी के सींगों वेदी के कोने सींग जैसे बने थे।

को युद्ध में मारा था। इन व्यक्तियों के रक्त का दाग उसकी
तलवार की मूठ और उसके पहने हुए सैनिकों के जूतों
पर लगा हुआ था। इसलिये मैं उसे अवश्य दण्ड दूँगा।
6किन्तु अब राजा तुम हो। अत: तुम्हें उसे इस प्रकार दण्ड
देना चाहिये जिसे तुम सबसे अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण समझो।
किन्तु तुम्हें यह निश्चय कर लेना चाहिये कि वह मार
डाला जाये। उसे बुढ़ापे की शान्तिपूर्ण मृत्यु न पाने दो!

7“गिलाद के, बर्जिल्लै के बच्चों पर दयालु रहो।
उन्हें अपना मित्र होने दो और अपनी मेज पर भोजन
करने दो। उन्होंने मेरी तब सहायता की, जब मैं तुम्हारे
भाई अबशालोम से भाग खड़ा हुआ था।

8“और याद रखो गेरा का पुत्र शिमी तुम्हारे साथ यहाँ
है। वह बहूरीम के बिन्यामीन परिवार समूह का है। याद
रखो कि उसने, उस दिन मेरे विरुद्ध बहुत बुरी बातें की,
जिस दिन मैं महनैम को भाग गया था। तब वह मुझसे
मिलने यरदन नदी पर आया था। किन्तु मैंने यहोवा के
सामने प्रतिज्ञा की थी, ‘शिमी मैं तुम्हें नहीं मारूँगा।’ 9परन्तु
शिमी को दण्ड दिये बिना न रहने दो। तुम बुद्धिमान
व्यक्ति हो, तुम समझ जाओगे कि उसके साथ क्या करना
चाहिये। किन्तु उसे बुढ़ापे की शान्तिपूर्ण मृत्यु न पाने दो।”

10तब दाऊद मर गया। वह दाऊद नगर में दफनाया
गया। 11दाऊद ने इस्राएल पर चालीस वर्ष तक शासन
किया। उसने हब्रोन में सात वर्ष और यरूशलेम में तैंतीस
वर्ष तक शासन किया। 12अब सुलैमान अपने पिता दाऊद
के सिंहासन पर शासन करने लगा और इसमें कोई
सन्देह नहीं था कि वह राजा है।* 13इस समय हग्गीत
का पुत्र अदोनिय्याह सुलैमान की माँ बतशेबा के पास
गया। बतशेबा ने उससे पूछा, “क्या तुम शान्ति के भाव
से आए हो?”

अदोनिय्याह ने उत्तर दिया, “हाँ! यह शान्तिपूर्ण आगमन
है। 14मुझे आपसे कुछ कहना है।” बतशेबा ने कहा, “तो
कहो।” 15अदोनिय्याह ने कहा, “तुम्हें याद है कि एक
समय राज्य मेरा था। इस्राएल के सभी लोग समझते थे कि
मैं उनका राजा हूँ। किन्तु स्थिति बदल गई। अब मेरा भाई
राजा है। यहोवा ने उसे राजा होने के लिये चुना। 16इसलिये
मैं तुमसे एक चीज़ माँगता हूँ। कृपया इन्कार न करें।”

बतशेबा ने पूछा, “तुम क्या चाहते हो?”

17अदोनिय्याह ने उत्तर दिया, “मैं जानता हूँ कि
राजा सुलैमान वह सब कुछ करेंगे जो तुम कहोगी।
अत: कृपया उनसे शूनेमिन स्त्री अबीशग को मुझे
देने को कहो। मैं उससे विवाह करना चाहता हूँ।”

18तब बतशेबा ने कहा, “ठीक है, मैं तुम्हारे लिये
राजा से बात करूँगी।”

19अत: बतशेबा राजा सुलैमान के पास उससे बात
करने गई। राजा सुलैमान ने उसे देखा और वह उससे
मिलने के लिये खड़ा हुआ। तब वह उसके सामने
प्रणाम करने झुका और सिंहासन पर बैठ गया। उसने
सेवकों से, अपनी माँ के लिये दूसरा सिंहासन लाने
को कहा। तब वह उसकी दायीं ओर बैठ गई।

20बतशेबा ने उससे कहा, “मैं तुमसे एक छोटी चीज़
माँगती हूँ। कृपया इन्कार न करना।” राजा ने उत्तर
दिया, “माँ तुम जो चाहो, माँग सकती हो। मैं तुम्हें मना
नहीं करूँगा।” 21अत: बतशेबा ने कहा, “शूनेमिन
स्त्री अबीशग को, अपने भाई अदोनिय्याह के साथ
विवाह करन दो।”

22राजा सुलैमान ने अपनी माँ से कहा, “तुम अबीशग
को उसे देने के लिये मुझसे क्यों कहती हो? तुम
मुझसे यह क्यों नहीं कहती कि मैं उसे राजा भी बना
दूँ क्योंकि वह मेरा बड़ा भाई है? याजक एब्यातार
और योआब उसका समर्थन करेंगे।”

23तब सुलैमान ने यहोवा से एक प्रतिज्ञा की। उसने
कहा, “मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मुझसे यह माँग करने
के लिये मैं अदोनिय्याह से भुगतान कराऊँगा। मैं प्रतिज्ञा
करता हूँ कि उसे इसका मूल्य अपने जीवन से चुकाना
पड़ेगा। 24यहोवा ने मुझे इस्राएल का राजा होने दिया है।
उसने वह सिंहासन मुझे दिया है जो मेरे पिता दाऊद का
है। यहोवा ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की है और राज्य मुझे
और मेरे परिवार को दिया है। मैं शाश्वत परमेश्वर के
सामने, प्रतिज्ञा करता हूँ कि अदोनिय्याह आज मरेगा!”

25राजा सुलैमान ने बनायाह को आदेश दिया। बनायाह
बाहर गया और उसने अदोनिय्याह को मार डाला।

26तब राजा सुलैमान ने याजक एब्यातार से कहा,
“मुझे तुमको मार डालना चाहिये, किन्तु मैं तुम्हें अपने
घर अनातोत में लौट जाने देता हूँ। मैं तुम्हें अभी मारुँगा
नहीं क्योंकि मेरे पिता दाऊद के साथ चलते समय तुमने
पवित्र सन्दूक को ले चलने में सहायता की थी जब तुम

इसमें ... राजा है “उसका राज्य दृढ़ता से स्थापित हो गया।”

मेरे पिता दाऊद के साथ थे और मैं जानता हूँ कि
उन सभी विपत्तियों के समय में मेरे पिता के समान
तुमने भी हाथ बटाया।" 27सुलैमान ने एब्यातार से
कहा कि तुम याजक के रूप में यहोवा की सेवा
करते नहीं रह सकते। यह सब वैसे ही हुआ, जैसा
यहोवा ने होने के लिये कहा था। परमेश्वर ने याजक
एली और उसके परिवार के बारे में शीलो में यह
कहा था और एब्यातार एली के परिवार से था।

28योआब ने इस बारे में सुना और वह डर गया।
उसने अदोनिय्याह का समर्थन किया था, किन्तु
अबशालोम का नहीं। योआब यहोवा के तम्बू की ओर
दौड़ा और वेदी के सींगो को पकड़ लिया। 29किसी ने
राजा सुलैमान से कहा कि योआब यहोवा के तम्बू में
वेदी के पास है। इसलिये सुलैमान ने बनायाह को जाने
और उसे मार डालने का आदेश दिया।

30बनायाह यहोवा के तम्बू में गया और योआब से
कहा, "राजा कहते हैं, 'बाहर आओ!'"

किन्तु योआब ने उत्तर दिया, "नहीं, मैं यहीं मरूँगा।"

अत: बनायाह राजा के पास वापस गया और उससे
वही कहा जो योआब ने कहा था। 31तब राजा ने
बनायाह को आदेश दिया, "वैसा ही करो जैसा वह
कहता है। उसे वहीं मार डालो। तब उसे दफना दो।
तब हमारा परिवार और हम योआब के दोष से मुक्त
होंगे। यह अपराध इसलिये हुआ कि योआब ने
निरपराध लोगों को मारा था। 32योआब ने दो व्यक्तियों
को मार डाला था जो उससे बहुत अधिक अच्छे थे। ये
नेर का पुत्र अब्नेर और येतेर का पुत्र अमासा थे।
अब्नेर इस्राएल की सेना का सेनापति था और उस
समय मेरे पिता दाऊद यह नहीं जानते थे कि योआब
ने उन्हें मार डाला था। इसलिये यहोवा योआब को उन
व्यक्तियों के लिये दण्ड देगा जिन्हें उसने मार डाला था।
33वह उनकी मृत्यु के लिये अपराधी होगा और उसका
परिवार भी सदा के लिये दोषी होगा। किन्तु परमेश्वर
की ओर से दाऊद को, उसके वंशजों, उसके राज
परिवार और सिंहासन को सदा के लिये शान्ति मिलेगी।"

34इसलिये यहोयादा के पुत्र बनायाह ने योआब को
मार डाला। योआब मरुभूमि में अपने घर के पास दफनाया
गया। 35सुलैमान ने तब यहोयादा के पुत्र बनायाह को
योआब के स्थान पर सेनापति बनाया। सुलैमान ने एब्यातार
के स्थान पर सादोक को महायाजक बनाया। 36इसके
बाद राजा ने शिमी को बुलवाया। राजा ने उससे कहा,
"यहाँ यरूशलेम में तुम अपने लिये एक घर बनाओ,
उसी घर में रहो और नगर को मत छोड़ो। 37यदि तुम
नगर को छोड़ोगे और किद्रोन के नाले के पार जाओगे
तो तुम मार डाले जाओगे और यह तुम्हारा दोष होगा।"

38अत: शिमी ने उत्तर दिया, "मेरे राजा, आपने जो कहा
है, ठीक है। मैं आपके आदेश का पालन करूँगा।" अत:
शिमी यरूशलेम में बहुत समय तक रहा। 39किन्तु तीन वर्ष
बाद शिमी के दो सेवक भाग गए। वे गत के राजा के पास
पहुँचे। उसका नाम आकीश था जो माका का पुत्र था।
शिमी ने सुना कि उसके सेवक गत में है। 40इसलिये शिमी
ने अपनी काठी अपने खच्चर पर रखी और गत में राजा
आकीश के पास गया। वह अपने सेवकों को प्राप्त करने
गया। उसने उन्हें ढूँढ लिया और अपने घर वापस लाया।

41किन्तु किसी ने सुलैमान से कहा, कि शिमी
यरूशलेम से गत गया था और लौट आया है। 42इसलिये
सुलैमान ने उसे बुलवाया। सुलैमान ने कहा, "मैंने
यहोवा के नाम पर तुमसे यह प्रतिज्ञा की थी कि यदि
तुम यरूशलेम छोड़ोगे, तो मारे जाओगे। मैंने चेतावनी
दी थी कि यदि तुम अन्य कहीं जाओगे तो तुम्हारे मारे
जाने का दोष तुम्हारा होगा और मैंने जो कुछ कहा
था तुमने उसे स्वीकार किया था। तुमने कहा कि
तुम मेरी आज्ञा का पालन करोगे। 43तुमने अपनी
प्रतिज्ञा भंग क्यों की? तुमने मेरे आदेश का पालन
क्यों नहीं किया? 44तुम जानते हो कि तुमने मेरे पिता
दाऊद के विरुद्ध बहुत से गलत काम किये, अब
यहोवा उन गलत कामों के लिये तुम्हें दण्ड देगा।
45किन्तु यहोवा मुझे आशीर्वाद देगा। वह दाऊद के
सिंहासन की सदैव सुरक्षा करेगा।"

46तब राजा ने बनायाह को शिमी को मार डालने
का आदेश दिया और उसने इसे पूरा किया। अब
सुलैमान अपने राज्य पर पूर्ण नियन्त्रण कर चुका था।

राजा सुलैमान

3 सुलैमान ने मिस्र के राजा फ़िरौन की पुत्री के साथ
विवाह करके उसके साथ सन्धि की। सुलैमान
उसे दाऊद नगर को ले आया। इस समय अभी भी सुलैमान
अपना महल तथा यहोवा का मन्दिर बनवा रहा था।

सुलैमान यरूशलेम की चहारदीवारी भी बनवा रहा था।
2मन्दिर अभी तक पूरा नहीं हुआ था। इसलिये लोग अभी
भी उच्चस्थानों पर जानवरों की बलि भेंट कर रहे थे।

3सुलैमान ने दिखाया कि वह यहोवा से प्रेम करता है।
उसके अपने पिता दाऊद ने जो कुछ करने को कहा
था, उसने उन सब का पालन किया किन्तु सुलैमान ने
कुछ ऐसा भी किया जिसे करने के लिये दाऊद ने नहीं
कहा था। सुलैमान अभी तक उच्चस्थानों का उपयोग
बलिभेंट और सुगन्धि जलाने के लिये करता रहा।

4राजा सुलैमान बलिभेंट करने गिबोन गया। वह
वहाँ इसलिये गया क्योंकि वह सर्वाधिक महत्वपूर्ण
उच्च स्थान था। सुलैमान ने एक हजार बलियाँ उस
वेदी पर भेंट कीं। 5जब सुलैमान गिबोन में था उसी
रात को उसके पास स्वप्न में यहोवा आया। परमेश्वर
ने कहा, "जो चाहते हो तुम माँगो, मैं उसे तुम्हें दूँगा।"

6सुलैमान ने उत्तर दिया, "तू अपने सेवक मेरे पिता
दाऊद पर बहुत दयालु रहा। उसने तेरा अनुसरण किया।
वह अच्छा था और सच्चाई से रहा और तूने उसके
प्रति तब सबसे बड़ी कृपा की जब तूने उसके पुत्र को
उसके सिंहासन पर शासन करने दिया। 7यहोवा मेरा
परमेश्वर, तूने मुझे अपने पिता के स्थान पर राजा
होने दिया है। किन्तु मैं एक छोटे बालक के समान हूँ।
मेरे पास, मुझे जो करना चाहिए उसे करने के लिये
बुद्धि नहीं है। 8तेरा सेवक, मैं यहाँ तेरे चुने लोगों, में
हूँ। यहाँ बहुत से लोग हैं। वे इतने अधिक हैं कि गिने
नहीं जा सकते। अत: शासक को उनके बीच अनेकों
निर्णय लेने पड़ेंगे। 9इसलिये मैं तुझसे माँगता हूँ कि तू
मुझे बुद्धि दे जिससे मैं सच्चाई से लोगों पर शासन और
उनका न्याय कर सकूँ। इससे मैं सही और गलत के
अन्तर को जान सकूँगा। इस श्रेष्ठ बुद्धि के बिना इन
महान लोगों पर शासन करना असंभव है।"

10यहोवा प्रसन्न हुआ कि सुलैमान ने उससे यह माँगा।
11इसलिये परमेश्वर ने उससे कहा, "तुमने अपने लिये
दीर्घायु नहीं माँगी। तुमने अपने लिये सम्पत्ति नहीं माँगी।
तुमने अपने शत्रुओं की मृत्यु नहीं माँगी। 12इसलिये मैं
तुम्हें वही दूँगा जो तुमने माँगा। मैं तुम्हें बुद्धिमान और
विवेकी बनाऊँगा। मैं तुम्हारी बुद्धि को इतना महान
बनाऊँगा कि बीते समय में कभी तुम्हारे जैसा कोई व्यक्ति
नहीं हुआ है और भविष्य में तुम्हारे जैसा कभी कोई नहीं
होगा 13और तुम्हें पुरस्कृत करने के लिये मैं तुम्हें वे
चीज़ें भी दूँगा जिन्हें तुमने नहीं माँगी। तुम्हारे पूरे जीवन
में सम्पत्ति और प्रतिष्ठा बनी रहेगी। संसार में तुम्हारे
जैसा महान राजा दूसरा कोई नहीं होगा। 14मैं तुमसे
चाहता हूँ कि तुम मेरा अनुसरण करो और मेरे नियमों
एवं आदेशों का पालन करो। यह उसी प्रकार करो
जिस प्रकार तुम्हारे पिता दाऊद ने किया। यदि तुम
ऐसा करोगे तो मैं तुम्हें दीर्घायु भी करूँगा।"

15सुलैमान जाग गया। वह जान गया कि परमेश्वर
ने उसके साथ स्वप्न में बातें की है। तब सुलैमान
यरुशलेम गया और यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक के
सामने खड़ा हुआ। सुलैमान ने एक होमबलि यहोवा को
चढ़ाई और उसने यहोवा को मेलबलि दी। इसके बाद
उसने उन सभी प्रमुखों और अधिकारियों को दावत दी
जो शासन करने में उसकी सहायता करते थे।

16एक दिन दो स्त्रियाँ जो वेश्यायें थीं, सुलैमान के
पास आई। वे राजा के सामने खड़ी हुई। 17स्त्रियों में से
एक ने कहा, "महाराज, यह स्त्री और मैं एक ही घर में
रहते हैं। हम दोनों गर्भवती हुए और अपने बच्चों को
जन्म देने ही वाले थे। मैंने अपने बच्चे को जन्म दिया
जब यह वहाँ मेरे साथ थी। 18तीन दिन बाद इस स्त्री ने
भी अपने बच्चे को जन्म दिया। हम लोगों के साथ कोई
अन्य व्यक्ति घर में नहीं था। केवल हम दोनों ही थे।
19एक रात जब यह स्त्री अपने बच्चे के साथ सो रही थी,
बच्चा मर गया। 20अत: रात को जब मैं सोई थी, इसने
मेरे पुत्र को मेरे बिस्तर से ले लिया। यह उसे अपने
बिस्तर पर ले गई। तब इसने मरे बच्चे को मेरे बिस्तर
पर डाल दिया। 21अगली सुबह मैं जागी और अपने बच्चे
को दूध पिलाने वाली थी। किन्तु मैंने देखा कि बच्चा
मरा हुआ है। तब मैंने उसे अधिक निकट से देखा। मैंने
देखा कि यह मेरा बच्चा नहीं है।"

22किन्तु दूसरी स्त्री ने कहा, "नहीं! जीवित बच्चा
मेरा है। मरा बच्चा तुम्हारा है!"

किन्तु पहली स्त्री ने कहा, "नहीं! तुम गलत हो!
मरा बच्चा तुम्हारा है और जीवित बच्चा मेरा है।" इस
प्रकार दोनों स्त्रियों ने राजा के सामने बहस की।

23तब राजा सुलैमान ने कहा, "तुम दोनों कहती हो
कि जीवित बच्चा हमारा अपना है और तुम में से हर
एक कहती है कि मरा बच्चा दूसरी का है।"

[24]तब राजा सुलैमान ने अपने सेवक को तलवार
लाने भेजा [25]और राजा सुलैमान ने कहा, “हम यही
करेंगे। जीवित बच्चे के दो टुकड़े कर दो। हर एक
स्त्री को आधा बच्चा दे दो।”

[26]दूसरी स्त्री ने कहा, “यह ठीक है। बच्चे को दो
टुकड़ो में काट डालो। तब हम दोनों में से उसे कोई
नहीं पाएगा।” किन्तु पहली स्त्री, जो सच्ची माँ थी,
अपने बच्चे के लिये प्रेम से भरी थी। उसने राजा से
कहा, “कृपया बच्चे को न मारें! इसे उसे ही दे दें।”
[27]तब राजा सुलैमान ने कहा, “बच्चे को मत मारो!
इसे, पहली स्त्री को दे दो। वही सच्ची माँ है।”

[28]इस्राएल के लोगों ने राजा सुलैमान के निर्णय को
सुना। उन्होंने उसका बहुत आदर और सम्मान किया
क्योंकि वह बुद्धिमान था। उन्होंने देखा कि ठीक न्याय
करने में उसके पास परमेश्वर की बुद्धि थी।

4 राजा सुलैमान इस्राएल के सभी लोगों पर शासन
करता था। [2]ये प्रमुख अधिकारियों के नाम हैं
जो शासन करने में उसकी सहायता करते थे:

सादोक का पुत्र अजर्याह याजक था। [3]शीशा के
पुत्र एलीहोरेप और अहिय्याह उस विवरण को
लिखने का कार्य करते थे जो न्यायालय में होता
था। अहीलूद का पुत्र यहोशापात, यहोशापात
लोगों के इतिहास का विवरण लिखता था।
[4]यहोयादा का पुत्र बनायाह सेनापति था, सादोक
और एब्यातार याजक थे। [5]नातान का पुत्र
अजर्याह जनपद– प्रशासकों का अधीक्षक था।
नातान का पुत्र जाबूद याजक और राजा सुलैमान
का एक सलाहकार था। [6]अहीशार राजा के
घर की हर एक चीज़ का उत्तरदायी था। अब्दा
का पुत्र अदोनीराम दासों का अधीक्षक था।

[7]इस्राएल बारह क्षेत्रों में बँटा था जिन्हें जनपद कहते
थे। सुलैमान हर जनपद पर शासन करने के लिये
प्रशासकों को चुनता था। इन प्रशासकों को आदेश
था कि वे अपने जनपद से भोजन सामग्री इकट्ठा
करें और उसे राजा और उसके परिवार को दें। हर
वर्ष एक महीने की भोजन सामग्री राजा को देने का
उत्तरदायित्व बारह प्रशासकों में से हर एक का था।
[8]बारह प्रशासकों के नाम ये हैं:

बेन्हूर, एप्रैम के पर्वतीय प्रदेश का प्रशासक था।
[9]बेन्देकेर, माकस, शाल्बीम, बेतशेमेश और
एलोनबेथानान का प्रशासक था। [10]बेन्हेसेद,
अरुब्बोत, सौको और हेपेर का प्रशासक था।
[11]बेनबीनादाब, नपोत दोर का प्रशासक था। उसका
विवाह सुलैमान की पुत्री तापत से हुआ था।
[12]अहीलूद का पुत्र बाना, तानाक, मगिद्दो से लेकर
और सारतान से लगे पूरे बेतशान का प्रशासक
था। यह यिज्रेल के नीचे, बेतशान से लेकर
आबेलमहोला तक योकमाम के पार था। [13]बेनगेबेर,
रामोत गिलाद का प्रशासक था। वह गिलाद में
मनश्शे के पुत्र याईर के सारे नगरों और गाँवों का
भी प्रशासक था। वह बाशान में अर्गोब के जनपद
का भी प्रशासक था। इस क्षेत्र में ऊँची चहारदीवारी
वाले साठ नगर थे। इन नगरों के फाटकों में काँसे
की छड़ें भी लगी थी। [14]इद्दो का पुत्र अहीनादाब,
महनैम का प्रशासक था। [15]अहीमास, नप्ताली का
प्रशासक था। उसका विवाह सुलैमान की पुत्री
बासमत से हुआ था। [16]हूशै का पुत्र बाना, आशेर
और आलोत का प्रशासक था। [17]पारूह का पुत्र
यहोशापात, इस्साकार का प्रशासक था। [18]एला
का पुत्र शिमी, बिन्यामीन का प्रशासक था। [19]ऊरी
का पुत्र गेबेर गिलाद का प्रशासक था। गिलाद वह
प्रदेश था जहाँ एमोरी लोगों का राजा सीहोन और
बाशान का राजा ओग रहते थे। किन्तु केवल गेबेर
ही उस जनपद का प्रशासक था।

[20]यहूदा और इस्राएल में बहुत बड़ी संख्या में लोग
रहते थे। लोगों की संख्या समुद्र तट के बालू के कणों
जितनी थी। लोग सुखमय जीवन बिताते थे: वे खाते
पीते और आनन्दित रहते थे।

[21]सुलैमान परात नदी से लेकर पलिश्ती लोगों के
प्रदेश तक सभी राज्यों पर शासन करता था। उसका
राज्य मिस्र की सीमा तक फैला था। ये देश सुलैमान
को भेंट भेजते थे और उसके पूरे जीवन तक उसकी
आज्ञा का पालन करते रहे।*

[22-23]यह भोजन सामग्री है जिसकी आवश्यकता
प्रतिदिन सुलैमान को स्वयं और उसकी मेज पर सभी
भोजन करने वालों के लिये होती थी:

ये देश ... करते रहें यह प्रकट करता है कि इन देशों ने सुलैमान के साथ, उसकी बड़ी शक्ति के कारण शान्ति–सन्धि की थी।

डेढ़ सौ बुशल महीन आटा,
तीन सौ बुशल आटा,
अच्छा अन्न खाने वाली दस बैल,
मैदानों में पाले गये बीस बैल और
सौ भेड़ें,
तीन भिन्न प्रकार के हिरन और विशेष पक्षी भी।

24सुलैमान परात नदी के पश्चिम के सभी देशों
पर शासन करता था। यह प्रदेश तिप्सह से अज्जा तक
था और सुलैमान के राज्य के चारों ओर शान्ति थी।
25सुलैमान के जीवन काल में इस्राएल और यहूदा के
सभी लोग लगातार दान से लेकर बेर्शेबा तक शान्ति
और सुरक्षा में रहते थे। लोग शान्तिपूर्वक अपने अंजीर
के पेड़ों और अंगूर की बेलों के नीचे बैठते थे।

26सुलैमान के पास उसके रथों के लिये चार हजार
घोड़ों* के रखने के स्थान और उसके पास बारह
हजार घुड़सवार थे। 27प्रत्येक महीने बारह जनपद
शासकों में से एक सुलैमान को वे सब चीज़ें देता था
जिसकी उसे आवश्यकता पड़ती थी। यह राजा के मेज
पर खाने वाले हर एक व्यक्ति के लिये पर्याप्त होता था।
28जनपद प्रशासक राजा को रथों के घोड़ों और सवारी
के घोड़ों के लिये पर्याप्त चारा और जौ भी देते थे। हर
एक व्यक्ति इस अन्न को निश्चित स्थान पर लाता था।

29परमेश्वर ने सुलैमान को उत्तम बुद्धि दी। सुलैमान
अनेकों बातें समझ सकता था। उसकी बुद्धि कल्पना के
परे तीव्र थी।* 30सुलैमान की बुद्धि पूर्व के सभी व्यक्तियों
की बुद्धि से अधिक तीव्र थी और उसकी बुद्धि मिस्र में
रहने वाले सभी व्यक्तियों की बुद्धि से अधिक तीव्र थी।
31वह पृथ्वी के किसी भी व्यक्ति से अधिक बुद्धिमान
था। वह एज्रेही एतान से भी अधिक बुद्धिमान था। वह
हेमान, कलकोल तथा दर्दा से अधिक बुद्धिमान था। ये
माहोल के पुत्र थे। राजा सुलैमान इस्राएल और यहूदा के
चारों ओर के सभी देशों में प्रसिद्ध हो गया। 32अपने
जीवन काल में राजा सुलैमान ने तीन हजार बुद्धिमत्तापूर्ण
उपदेश लिखे।* उसने पन्द्रह सौ गीत भी लिखे।

33सुलैमान प्रकृति के बारे में भी बहुत कुछ जानता
था। सुलैमान ने लबानोन के विशाल देवदारु वृक्षों से
लेकर दीवारों में उगने वाली जूफा के विभिन्न प्रकार
के पेड़–पौधों में से हर एक के विषय में शिक्षा दी। राजा
सुलैमान ने जानवरों, पक्षियों और रेंगने वाले जन्तुओं
और मछलियों की चर्चा की है। 34सुलैमान की
बुद्धिमत्तापूर्ण बातों को सुनने के लिये सभी राष्ट्रों से लोग
आते थे। सभी राष्ट्रों के राजा अपने बुद्धिमान व्यक्तियों
को राजा सुलैमान की बातों को सुनने के लिये भेजते थे।

सुलैमान मन्दिर बनाता है

5 हीराम सोर का राजा था। हीराम सदैव दाऊद का
मित्र रहा। अत: जब हीराम को मालूम हुआ कि
सुलैमान दाऊद के बाद नया राजा हुआ है तो उसने सुलैमान
के पास अपने सेवक भेजे। 2सुलैमान ने हीराम राजा से जो
कहा, वह यह है: 3"तुम्हें याद है कि मेरे पिता राजा दाऊद
को अपने चारों ओर अनेक युद्ध लड़ने पड़े थे। अत: वह
यहोवा अपने परमेश्वर का मन्दिर बनवाने में समर्थ न हो
सका। राजा दाऊद तब तक प्रतीक्षा करता रहा जब तक
यहोवा ने उसके सभी शत्रुओं को उससे पराजित नहीं हो
जाने दिया। 4किन्तु अब यहोवा मेरे परमेश्वर ने मेरे देश
के चारों ओर मुझे शान्ति दी है। अब मेरा कोई शत्रु नहीं
है। मेरी प्रजा अब किसी खतरे में नहीं है।

5"यहोवा ने मेरे पिता दाऊद के साथ एक प्रतिज्ञा
की थी। यहोवा ने कहा था, 'मैं तुम्हारे पुत्र को तुम्हारे
बाद राजा बनाऊँगा और तुम्हारा पुत्र मेरा सम्मान
करने के लिये एक मन्दिर बनाएगा।' अब मैंने, यहोवा
अपने परमेश्वर का सम्मान करने के लिये वह मन्दिर
बनाने की योजना बनाई है 6और इसलिये मैं तुमसे
सहायता माँगता हूँ। अपने व्यक्तियों को लबानोन भेजो।
वहाँ वे मेरे लिये देवदारु के वृक्षों को काटेंगे। मेरे
सेवक तुम्हारे सेवकों के साथ काम करेंगे। मैं वह
कोई भी मजदूरी भुगतान करूँगा जो तुम अपने सेवकों
के लिये तय करोगे। किन्तु मुझे तुम्हारी सहायता की
आवश्यकता है। मेरे बढ़ई* सीदोन के बढ़ईयों की
तरह अच्छे नहीं हैं।"

चार हजार घोड़ों हिब्रू और लैटिन में चालीस हजार है। किन्तु देखें 2इति. 9:25

उसकी बुद्धि ... थी "उसकी बुद्धि इतनी व्यापक थी जितनी समुद्र तट के बालू।"

लिखे "कहे।"

बढ़ई वे लोग जो लकड़ी का काम करते हैं। प्राचीन काल में इसका अर्थ यह भी था कि वे पेड़ काटते हैं।

7जब हीराम ने, जो कुछ सुलैमान ने माँगा, वह सुना
तो वह बहुत प्रसन्न हुआ। राजा हीराम ने कहा, “आज मैं
यहोवा को धन्यवाद देता हूँ कि उसने दाऊद को इस
विशाल राष्ट्र का शासक एक बुद्धिमान पुत्र दिया है।”
8तब हीराम ने सुलैमान को एक संदेश भेजा। संदेश यह
था, “तुमने जो माँग की है, वह मैंने सुनी है। मैं तुमको
सारे देवदारु के पेड़ और चीड़ के पेड़ दूँगा, जिन्हें तुम
चाहते हो। 9मेरे सेवक लबानोन से उन्हें समुद्र तक लाएंगे।
तब मैं उन्हें एक साथ बाँध दूँगा और उन्हें समुद्र तट से
उस स्थान की ओर बहा दूँगा जहाँ तुम चाहते हो। वहाँ मैं
लट्ठों को अलग कर दूँगा और पेड़ों को तुम ले सकोगे।”

10–11सुलैमान ने हीराम को लगभग एक लाख बीस
हजार बुशल* गेहूँ और लगभग एक लाख बीस हजार
गैलन* शुद्ध जैतून का तेल प्रति वर्ष उसके परिवार
के भोजन के लिये दिया।

12यहोवा ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार सुलैमान
को बुद्धि दी और सुलैमान और हीराम के मध्य शान्ति
रही। इन दोनों राजाओं ने आपस में एक सन्धि की।

13राजा सुलैमान ने इस काम में सहायता के लिये इस्राएल
के तीस हजार व्यक्तियों को विवश किया। 14राजा सुलैमान
ने अदोनीराम नामक एक व्यक्ति को उनके ऊपर
अधिकारी बनाया। सुलैमान ने उन व्यक्तियों को तीन
टुकड़ियों में बाँटा। हर एक टुकड़ी में दस हजार व्यक्ति थे।
हर समूह एक महीने लबानोन में काम करता था और
तब दो महीने के लिये अपने घर लौटता था। 15सुलैमान ने
अस्सी हजार व्यक्तियों को भी पहाड़ी प्रदेश में काम करने
के लिये विवश किया। इन मनुष्यों का काम चट्टानों को
काटना था और वहाँ सत्तर हजार व्यक्ति पत्थरों को ढोने
वाले थे 16और तीन हजार तीन सौ व्यक्ति थे जो काम
करने वाले व्यक्तियों के ऊपर अधिकारी थे। 17राजा
सुलैमान ने, मन्दिर की नींव के लिये विशाल और कीमती
चट्टानों को काटने का आदेश दिया। ये पत्थर सावधानी
से काटे गये। 18तब सुलैमान के कारीगरों और हीराम के
कारीगरों तथा गबाली के व्यक्तियों ने पत्थरों पर नक्काशी
का काम किया। उन्होंने मन्दिर को बनाने के लिये पत्थरों
और लट्ठों को तैयार किया।

एक लाख बीस हजार बुशल “20,000 कोर्स”
एक लाख बीस हजार गैलन “20,000 बथ” एक बथ लगभग 6 गैलन के बराबर होता है।

सुलैमान मन्दिर बनाता है

6 तब सुलैमान ने मन्दिर बनाना आरम्भ किया। यह
इस्राएल के लोगों द्वारा मिस्र छोड़ने के चार सौ
अस्सीवाँ वर्ष* बाद था। यह राजा सुलैमान के इस्राएल
पर शासन के चौथे वर्ष में था। यह वर्ष के दूसरे
महीने जिव के माह में था। 2मन्दिर नब्बे फुट लम्बा,
तीस फुट चौड़ा और पैंतालीस फुट ऊँचा था।

3मन्दिर का द्वार मण्डप तीस फुट लम्बा और पन्द्रह
फुट चौड़ा था। यह द्वारमण्डप मन्दिर के ही मुख्य
भाग के सामने तक फैला था। इसकी लम्बाई मन्दिर
की चौड़ाई के बराबर थी। 4मन्दिर में संकरी खिड़कियाँ
थीं। ये खिड़कियाँ बाहर की ओर संकरी और भीतर
की ओर चौड़ी थीं।

5तब सुलैमान ने मन्दिर के मुख्य भाग के चारों ओर
कमरों की एक पंक्ति बनाई। ये कमरे एक दूसरे की छत
पर बने थे। कमरों की यह पंक्ति तीन मंजिल ऊँची थी।
6कमरे मन्दिर की दीवार से सटे थे किन्तु उनकी शहतीरें
उसकी दीवार में नहीं घुसी थी। शिखर पर, मन्दिर की
दीवार पतली हो गई थी। इसलिये उन कमरों की एक
ओर की दीवार उसके नीचे की दीवार से पतली थी। नीचे
की मंजिल के कमरे साढे सात फुट चौड़े थे। बीच की
मंजिल के कमरे नौ फुट चौड़े थे। उसके ऊपर के कमरे
दस–बारह फुट चौड़े थे। 7कारीगरों ने दीवारों को बनाने
के लिये बड़े पत्थरों का उपयोग किया। कारीगरों ने उसी
स्थान पर पत्थरों को काटा जहाँ उन्होंने उन्हें जमीन से
निकाला। इसलिये मन्दिर में हथौड़ी, कुल्हाड़ियों और अन्य
किसी भी लोहे के औजार की खटपट नहीं हुई।

8नीचे के कमरों का प्रवेश द्वार मन्दिर के दक्षिण
की ओर था। भीतर सीढ़ियाँ थीं जो दूसरे मंजिल के
कमरों और तब तीसरे मंजिल के कमरों तक जाती थी।

9इस प्रकार सुलैमान ने मन्दिर बनाना पूरा किया।
मन्दिर का हर एक भाग देवदारु के तख्तों से मढ़ा गया
था। 10सुलैमान ने मन्दिर के चारों ओर कमरों का
बनाना भी पूरा किया। हर एक मंजिल साढ़े सात फुट
ऊँची थी। उन कमरों की शहतीरें मन्दिर को छूती थीं।

11यहोवा ने सुलैमान से कहा, 12“यदि तुम मेरे सभी
नियमों और आदेशों का पालन करोगे तो मैं वह सब

चार सौ अस्सी वाँ वर्ष यह लगभग ई.पू. 960 था।

करूँगा जिसके लिये मैंने तुम्हारे पिता दाऊद से प्रतिज्ञा
की थी 13और मैं इस्राएल के लोगों को कभी छोड़ूँगा
नहीं।”

मन्दिर का विस्तृत विवरण

14इस प्रकार सुलैमान ने मन्दिर का निर्माण पूरा
किया। 15मन्दिर के भीतर पत्थर की दीवारें, देवदारु
के तख्तों से मढ़ी गई थीं। देवदारु के तख्ते फर्श से छत
तक थे। पत्थर का फर्श चीड़ के तख्तों से ढका था।
16उन्होंने मन्दिर के पिछले गहरे भाग में एक कमरा
तीस फुट लम्बा बनाया। उन्होंने इस कमरे की दीवारों
को देवदारु के तख्तों से मढ़ा। देवदारु के तख्ते फर्श
से छत तक थे। यह कमरा सर्वाधिक पवित्र स्थान कहा
जाता था। 17सर्वाधिक पवित्र स्थान के सामने मन्दिर
का मुख्य भाग था। यह कमरा साठ फुट लम्बा था।

18उन्होंने इस कमरे की दीवारों को देवदारु के तख्तों
से मढ़ा, दीवार का कोई भी पत्थर नहीं देखा जा सकता
था। उन्होंने फूलों और कद्दू के चित्र देवदारू के
तख्तों में नक्काशी की। 19सुलैमान ने मन्दिर के पीछे
भीतर गहरे कमरे को तैयार किया। यह कमरा यहोवा
के साक्षीपत्र के सन्दूक के लिये था। 20यह कमरा तीस
फुट लम्बा तीस फुट चौड़ा और तीस फुट ऊँचा था।

21सुलैमान ने इस कमरे को शुद्ध सोने से मढ़ा। उसने
इस कमरे के सामने एक सुगन्ध वेदी बनाई। उसने वेदी
को सोने से मढ़ा और इसके चारों ओर सोने की जंजीरें
लपेटीं। 22सारा मन्दिर सोने से मढ़ा था और सर्वाधिक
पवित्र स्थान के सामने वेदी सोने से मढ़ी गई थी।

23कारीगरों ने पंख सहित दो करूब (स्वर्गदूतों) की
मूर्तियाँ बनाई। कारीगरों ने जैतून की लकड़ी से मूर्तियाँ
बनाई। ये करूब (स्वर्गदूत) सर्वाधिक पवित्र स्थान में
रखे गये। हर एक स्वर्गदूत पन्द्रह फुट ऊँचा था। 24–26वे
दोनों करूब (स्वर्गदूत) एक ही माप के थे और एक
ही शैली में बने थे। हर एक करूब (स्वर्गदूत) के दो
पंख थे। हर एक पंख साढ़े सात फुट लम्बा था।

एक पंख के सिरे से दूसरे पंख के सिरे तक पन्द्रह फुट
था और हर एक करूब (स्वर्गदूत) पन्द्रह फुट ऊँचा था।
27ये करूब (स्वर्गदूत) सर्वाधिक पवित्र स्थान में रखे गए
थे। वे एक दूसरे की बगल में खड़े थे। उनके पंख एक
दूसरे को कमरे के मध्य में छूते थे। अन्य दो पंख हर एक
बगल की दीवार को छूते थे। 28दोनों करूब (स्वर्गदूत)
सोने से मढ़े गए थे।

29मुख्य कक्ष और भीतरी कक्ष के चारों ओर की
दीवारों पर करूब (स्वर्गदूतों), ताड़ के वृक्षों और
फूल के चित्र उकेरे गए थे। 30दोनों कमरों की फर्श
सोने से मढ़ी गई थीं।

31कारीगरों ने जैतून की लकड़ी के दो दरवाजे बनाये।
उन्होंने उन दोनों दरवाजों को सर्वाधिक पवित्र स्थान
के प्रवेश द्वार में लगाया। दरवाजों के चारों ओर की
चौखट पाँच पहलदार बनी थी।* 32उन्होंने दोनों दरवाजों
को जैतून की लकड़ी का बनाया। कारीगरों ने दरवाजों
पर करूब (स्वर्गदूतों), ताड़ के वृक्षों और फूलों के
चित्रों को उकेरा। तब उन्होंने दरवाजों को सोने से मढ़ा।

33उन्होंने मुख्य कक्ष में प्रवेश के लिये भी दरवाजे
बनाये। उन्होंने एक वर्गाकार दरवाजे की चौखट बनाने
के लिये जैतून की लकड़ी का उपयोग किया। 34तब उन्होंने
दरवाजा बनाने के लिये चीड़ की लकड़ी का उपयोग
किया। 35वहाँ दो दरवाजे थे। हर एक दरवाजे के दो भाग
थे, अत: दोनों दरवाजे मुड़कर बन्द होते थे। उन्होंने दरवाजों
पर करूब (स्वर्गदूत) ताड़ के वृक्षों और फूलों के चित्रों
को उकेरा। तब उन्होंने उन्हें सोने से मढ़ा।

36तब उन्होंने भीतरी आँगन बनाया। उन्होंने इस
आँगन के चारों ओर दीवारें बनाई। हर एक दीवार
कटे पत्थरों की तीन पंक्तियों और देवदारू की लकड़ी
की एक पंक्ति से बनाई गई।

37उन्होंने वर्ष के दूसरे महीने जिब माह में मन्दिर का
निर्माण आरम्भ किया। इस्राएल के लोगों पर सुलैमान
के शासन के चौथे वर्ष में, यह हुआ। 38मन्दिर का निर्माण
वर्ष के आठवें महीने बूल माह में पूरा हुआ। लोगों पर
सुलैमान के शासन के ग्यारहवें वर्ष में यह हुआ था।
मन्दिर के निर्माण में सात वर्ष लगे। मन्दिर ठीक उसी
प्रकार बना था जैसा उसे बनाने की योजना थी।

सुलैमान का महल

7 राजा सुलैमान ने अपने लिये एक महल भी बनवाया।
सुलैमान के महल के निर्माण को पूरा करने में तेरह
वर्ष लगे। 2उसने उस इमारत को भी बनाया जिसे, “लबानोन

दरवाजों के ... बनी थी हम यहाँ अर्थ के सम्बन्ध में पूर्ण
सन्तुष्ट नहीं है।

का वन" कहा जाता है। यह डेढ़ सौ फुट लम्बा, पचहत्तर
फुट चौड़ा, और पैंतालीस फुट ऊँचा था। इसमें देवदारु के
स्तम्भों की चार पंक्तियाँ थीं। हर एक पंक्ति के सिरे पर
एक देवदारु का शीर्ष* था। 3स्तम्भों की पंक्तियों के आर
पार जाती हुई देवदारु की शहतीरें थी। उन्होंने देवदारु के
तख्तों को छत के लिये इन शहतीरों पर रखा था। स्तम्भों
के हर एक विभाग के लिये पन्द्रह शहतीरें थीं। सब मिलाकर
पैंतालीस शहतीरें थीं। 4बगल की हर एक दीवार में
खिड़कियों की तीन पक्तियाँ थीं। खिड़कियाँ परस्पर
आमने–सामने थीं। 5हर एक के अन्त में तीन दरवाजें थे।
सभी दरवाजों के द्वार और चौखटे वर्गाकार थीं।

6सुलैमान ने "स्तम्भों का प्रवेश द्वार मण्डप" भी
बनाया। यह पच्हत्तर फुट लम्बा और पैंतालीस फुट
चौड़ा था। प्रवेश द्वार मण्डप के साथ साथ स्तम्भों पर
टिकी एक छत थी।

7सुलैमान ने एक सिंहासन कक्ष बनाया जहाँ वह लोगों
का न्याय करता था। वह इसे "न्याय महाकक्ष" कहता
था। कक्ष फर्श से लेकर छत तक देवदारु से मढ़ा था।

8जिस भवन में सुलैमान रहता था, वह न्याय
महाकक्ष के पीछे दूसरे आँगन में था। यह महल वैसे
ही बना था जैसा न्याय महाकक्ष बना था। उसने अपनी
पत्नी जो मिस्र के राजा की पुत्री थी, के लिये भी वैसा
ही महल बनाया।

9ये सभी इमारतें बहुमूल्य पत्थर के टुकड़ों से बनी
थीं। ये पत्थर समुचित आकार में आरे से काटे गये थे। वे
सामने और पीछे की ओर से कटे थे। ये बहुमूल्य पत्थर
नींव से लेकर दीवार की ऊपरी तह तक लगे थे। आँगन
के चारों ओर की दीवार भी बहुमूल्य पत्थर के टुकड़ों
से बनी थी। 10नींव विशाल बहुमूल्य पत्थरों से बनीं थीं।
कुछ पत्थर पन्द्रह फुट लम्बे थे, और अन्य बारह फुट
लम्बे थे। 11उन पत्थरों के शीर्ष पर अन्य बहुमूल्य पत्थर
और देवदारु की शहतीरें थीं। 12महल के आँगन, मन्दिर
के आँगन और मन्दिर के प्रवेश द्वार मण्डप के चारों
ओर दीवारें थीं। वे दीवारें पत्थर की तीन पंक्तियों और
देवदारु लकड़ी की एक पंक्ति से बनीं थी।

13राजा सुलैमान ने हीराम नामक व्यक्ति के पास
सोर में संदेश भेजा। सुलैमान हीराम को यरूशलेम लाया।
14हीराम की माँ नप्ताली परिवार समूह से इस्राएली थी।
उसका मृत पिता सोर का था। हीराम काँसे* से चीज़ें
बनाता था। वह बहुत कुशल और अनुभवी कारीगर
था। अत: राजा सुलैमान ने उसे आने के लिये कहा
और हीराम ने उसे स्वीकार किया। इसलिये राजा
सुलैमान ने हीराम को काँसे के सभी कामों का अधीक्षक
बनाया। हीराम ने काँसे से निर्मित सभी चीज़ों को बनाया।
15हीराम ने काँसे के दो स्तम्भ बनाए। हर एक स्तम्भ
सत्ताईस फुट लम्बा और अट्ठारह फुट गोलाई वाला
था। स्तम्भ खोखले थे और धातु तीन इंच मोटी थी।

16हीराम ने दो काँसे के शीर्ष भी बनाए जो साढ़े सात
फुट ऊँचे थे। हीराम ने इन शीर्षों को स्तम्भों के सिरों
पर रखा। 17तब उसने दोनों स्तम्भों के ऊपर के शीर्षों
को ढकने के लिये जंजीरो के दो जाल बनाए। 18तब
उसने अलंकरण की दो पंक्तियाँ बनाई जो अनार की
तरह दिखते थे। उन्होंने इन काँसे के अनारों को हर
एक स्तम्भ के जालों में, स्तम्भों के सिरों के शीर्षों को
ढकने के लिये रखा। 19साढ़े सात फुट ऊँचे स्तम्भों के
सिरों के शीर्ष फूल के आकार के बने थे। 20शीर्ष स्तम्भों
के सिरों पर थे। वे कटोरे के आकार के जाल के ऊपर
थे। उस स्थान पर शीर्षों के चारों ओर पंक्तियों में बीस
अनार थे। 21हीराम ने इन दोनों काँसे के स्तम्भों को
मन्दिर के प्रवेश द्वार पर खड़ा किया। द्वार के दक्षिण की
ओर एक स्तम्भ तथा द्वार के उत्तर की ओर दूसरा स्तम्भ
खड़ा किया गया। दक्षिण के स्तम्भ का नाम याकीन
रखा गया। उत्तर के स्तम्भ का नाम बोआज रखा गया।
22उन्होंने फूल के आकार के शीर्षों को स्तम्भों के ऊपर
रखा। इस प्रकार दोनों स्तम्भों पर काम पूरा हुआ।

23तब हीराम ने काँसे का एक गोल हौज बनाया।
उन्होंने इस हौज को "सागर" कहा। हौज लगभग पैंतालीस
फुट गोलाई में था। यह आर–पार पन्द्रह फुट और साढ़े
सात फुट गहरा था। 24हौज के बाहरी सिरे पर एक बारी
थी। इस बारी के नीचे काँसे के कद्दूओं की दो कतारें
हौज को घेरे हुए थी। काँसे के कद्दू हौज के हिस्से के
रूप में एक इकाई में बने थे। 25हौज बारह काँसे के बैलों
की पीठों पर टिका था। ये बारहों बैल तालाब से दूर
बाहर को देख रहे थे। तीन उत्तर को, तीन पूर्व को, तीन

शीर्ष स्तम्भ के ऊपरी सिरे के ऊपर पत्थर या लकड़ी का अलंकृत मुकुट।

काँसे एक धातु। हिब्रू शब्द का अर्थ तांबा, काँसा या पीतल से हो सकता है।

दक्षिण को और तीन पश्चिम को देख रहे थे। 26हौज की
दीवारें चार इंच मोटी थीं। तालाब के चारों ओर की किनारी
एक प्याले की किनारी या फूल की पंखुड़ियों की तरह
थी। तालाब की क्षमता लगभग ग्यारह हजार गैलन थी।

27तब हीराम ने दस काँसे की गाड़ियाँ बनाई। हर
एक छ: फुट लम्बी, छ: फुट चौड़ी और साढ़े चार फुट
ऊँची थी। 28गाड़ियाँ वर्गाकार तख्तों को चौखटों में
मढ़कर बनायी गयी थी। 29तख्तों और चौखटों पर
काँसे के सिंह, बैल और करूब (स्वर्गदूत) थे। सिंह
और बैलो के ऊपर और नीचे फूलों के आकार हथौड़े
से काँसे में उभारे गए थे। 30हर एक गाड़ी में चार काँसे
के पहिये काँसे की धुरी के साथ थे। कोनों पर विशाल
कटोरे के लिए काँसे के आधार बने थे। आधारों पर
हथौड़े से फूलों के आकार काँसे में उभारे गए थे।
31कटोरे के लिये ऊपरी सिरे पर एक ढाँचा बना था।
यह कटोरों से ऊपर को अट्ठारह इंच ऊँचा था। कटोरे
का खुला हुआ गोल भाग सत्ताईस इंच व्यास वाला था।
ढाँचे पर काँसे में आकार उकेरे गए थे। ढाँचा चौकोर
था, गोल नहीं। 32ढाँचे के नीचे चार पहिये थे। पहिये
सत्ताईस इंच व्यास वाले थे। पहिये के मध्य के धुरे गाड़ी
के साथ एक इकाई के रूप में बने थे। 33पहिये रथ के
पहियों के समान थे। पहियों की हर एक चीज़-धुरे,
परिधि, तीलियाँ और नाभि काँसे की बनी थी।

34हर एक गाड़ी के चारों कोनों पर चार आधार थे।
वे गाड़ी के साथ एक इकाई के रूप में बने थे। 35हर
एक गाड़ी के ऊपरी सिरे के चारों ओर एक काँसे की
पट्टी थी। यह गाड़ी के साथ एक इकाई में बनीं थी।
36गाड़ी की बगल और ढाँचे पर करूब (स्वर्गदूतों),
सिंहों और ताड़ के वृक्षों के चित्र काँसे में उकेरे गए थे।
ये चित्र गाड़ियों पर सर्वत्र, जहाँ भी स्थान था, उकेरे गए
थे और गाड़ी के चारों ओर के ढाँचे पर फूल उकेरे गए
थे। 37हीराम ने दस गाड़ियाँ बनाई और वे सभी एक सी
थीं। हर एक गाड़ी काँसे की बनी थी। काँसे को
गलाया गया था और साँचे में ढाला गया था। अत: सभी
गाड़ियाँ एक ही आकार और एक ही रूप की थीं।

38हीराम ने दस कटोरे भी बनाये। एक-एक कटोरा
दस गाड़ियों में से हर एक के लिये था। हर एक कटोरा
छ: फुट व्यास वाला था और हर एक कटोरे में दो सौ
तीस गैलन आ सकता था।

39हीराम ने पाँच गाड़ियों को मन्दिर के दक्षिण और
अन्य पाँच गाड़ियों को मन्दिर के उत्तर में रखा। उसने
विशाल तालाब को मन्दिर के दक्षिण पूर्व कोने में रखा।
40हीराम ने बर्तन, छोटे बेल्चे, और छोटे कटोरे भी बनाए।
हीराम ने उन सारी चीजों को बनाना पूरा किया जिन्हें
राजा सुलैमान उससे बनवाना चाहता था। हीराम ने यहोवा
के मन्दिर के लिये जो कुछ बनाया उसकी सूची यह है:

41दो स्तम्भ,
स्तम्भों के सिरों के लिये कटोरे के आकार के दो
शीर्ष,
शीर्षों के चारों ओर लगाए जाने वाले दो जाल।
42दो जालों के लिये चार सौ अनार स्तम्भों के
सिरों पर शीर्षों के दोनों कटोरों को ढकने के लिये
हर एक जाल के वास्ते अनारों की दो पक्तियाँ थीं।
43वहाँ दस गाडियाँ थी, हर गाड़ी पर एक कटोरा
था, 44एक विशाल तालाब जो बारह बैलों पर
टिका था, 45बर्तन, छोटे बेल्चे, छोटे कटोरे, और
यहोवा के मन्दिर के लिये सभी तश्तरियाँ।

हीराम ने वे सभी चीज़ें बनाई जिन्हें राजा सुलैमान
चाहता था। वे सभी झलकाए हुए काँसे से बनी थीं।
46-47सुलैमान ने उस काँसे को कभी नहीं तोला
जिसका उपयोग इन चीज़ों को बनाने के लिये हुआ
था। यह इतना अधिक था कि इसका तौलना सम्भव
नहीं था इसलिये सारे काँसे के तौल का कुल योग
कभी मालूम नहीं हुआ। राजा ने इन चीज़ों को सुक्कोत
और सारतान के बीच यरदन नदी के समीप बनाने
का आदेश दिया। उन्होंने इन चीज़ों को, काँसे को
गलाकर और जमीन में बने साँचो में ढालकर, बनाया।

48-50सुलैमान ने यह भी आदेश दिया कि मन्दिर
के लिये सोने की बुहत सी चीज़ें बनाई जायें। सुलैमान
ने मन्दिर के लिये सोने से जो चीज़ें बनाई, वे ये हैं।

सुनहली वेदी,
सुनहली मेज (परमेश्वर को भेंट चढ़ाई गई विशेष
रोटी इस मेज पर रखी जाती थी।)
शुद्ध सोने के दीपाधार (सर्वाधिक पवित्र स्थान के
सामने ये पाँच दक्षिण की ओर, और पाँच उत्तर की
ओर थे।)
सुनहले फूल, दीपक और चिमटे, प्याले,
दीपक को पूरे प्रकाश से जलता रखने के लिये औजार,

कटोरे,
कड़ाहियाँ,
कोयला ले चलने के लिये उपयोग में आने वाली
शुद्ध सोने की तश्तरियाँ और
मन्दिर के प्रवेश द्वार के दरवाजे।
51इस प्रकार सुलैमान ने, यहोवा के मन्दिर के
लिये जो काम वह करना चाहता था, पूरा किया। तब
सुलैमान ने वे सभी चीज़ें ली जिन्हें उसके पिता दाऊद
ने इस उद्देश्य के लिये सुरक्षित रखी थीं। वह इन
चीज़ों को मन्दिर में लाया। उसने चाँदी और सोना
यहोवा के मन्दिर के कोषागारों में रखा।

मन्दिर में साक्षीपत्र का सन्दूक

8 तब राजा सुलैमान ने इस्राएल के सभी अग्रजों,
परिवार समूहों के प्रमुखों तथा इस्राएल के
परिवारों के प्रमुखों को एक साथ यरूशलेम में बुलाया।
सुलैमान चाहता था कि वे साक्षीपत्र के सन्दूक को
दाऊद नगर से मन्दिर में लायें। 2इसलिये इस्राएल के
सभी लोग राजा सुलैमान के साथ आये। यह एतानीम
महीने में विशेष त्यौहार (आश्रयों का त्यौहार) के
समय हुआ। (यह वर्ष का सातवाँ महीना था)।
3इस्राएल के सभी अग्रज उस स्थान पर आए। तब
याजकों ने पवित्र सन्दूक उठाया। 4वे पवित्र तम्बू और
तम्बू में की सभी चीज़ों सहित यहोवा के पवित्र सन्दूक
को ले आए। लेवीवंशियों ने याजकों की सहायता इन
चीजों को ले चलने में की। 5राजा सुलैमान और इस्राएल
के सभी लोग साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने इकट्ठे
हुए। उन्होंने अनेक बलि भेंट कीं। उन्होंने इतनी
अधिक भेड़े और पशु मारे कि कोई व्यक्ति उन सभी
को गिनने में समर्थ नहीं था।
6तब याजकों ने यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक को
उसके उचित स्थान पर रखा। यह मन्दिर के भीतर
सर्वाधिक पवित्र स्थान में था। साक्षीपत्र का सन्दूक करूब
(स्वर्गदूतों) के पंखों के नीचे रखा गया। 7करूब (स्वर्गदूतों)
के पंख पवित्र सन्दूक के ऊपर फैले थे। वे पवित्र सन्दूक
और उसको ले चलने में सहायक बल्लियों को ढके थे।
8ये सहायक बल्लियाँ बहुत लम्बी थीं। यदि कोई व्यक्ति
पवित्र स्थान में सर्वाधिक पवित्र स्थान के सामने खड़ा हो,
तो वह बल्लियों के सिरों को देख सकता था। किन्तु बाहर
का कोई भी उन्हें नहीं देख सकता था। वे बल्लियाँ आज
भी वहाँ अन्दर हैं। 9पवित्र सन्दूक के भीतर केवल दो
अभिलिखित शिलायें थीं। वे दो अभिलिखित शिलायें वही
थीं, जिन्हें मूसा ने होरेब नामक स्थान पर पवित्र सन्दूक में
रखा था। होरेब वह स्थान था जहाँ यहोवा ने इस्राएल के
लोगों के साथ उनके मिस्र से बाहर आने के बाद वाचा की।
10याजकों ने सन्दूक को सर्वाधिक पवित्र स्थान में
रखा। जब याजक पवित्र स्थान से बाहर आए तो
बादल* यहोवा के मन्दिर में भर गया। 11याजक अपना
काम करते न रह सके क्योंकि मन्दिर यहोवा के
प्रताप* से भर गया था। 12तब सुलैमान ने कहा:

"यहोवा ने गगन में सूर्य को चमकाया,
किन्तु उसने काले बादलों में रहना पसन्द किया।
13 मैंने तेरे लिए एक अद्भुत मन्दिर बनाया,
एक निवास, जिसमें तू सदैव रहेगा।"

14इस्राएल के सभी लोग वहाँ खड़े थे। इसलिये
सुलैमान उनकी ओर मुड़ा और परमेश्वर ने उन्हें
आशीर्वाद देने को कहा।
15तब राजा सुलैमान ने यहोवा से एक लम्बी प्रार्थना
की। जो उसने प्रार्थना की वह यह है:

"इस्राएल का यहोवा परमेश्वर महान है।
यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से जो कुछ कहा–
उन्हें उसने स्वयं पूरा किया है।
यहोवा ने मेरे पिता से कहा,
16 'मैं अपने लोगों इस्राएलियों को
मिस्र से बाहर लाया।
लेकिन मैंने अभी तक इस्राएल परिवार समूह
से किसी नगर को नहीं चुना है, कि मुझे
सम्मान देने के लिये मन्दिर–निर्माण करे।
और मैंने अपने लोग, इस्राएलियों का मार्ग
दर्शक कौन व्यक्ति हो, उसे नहीं चुना है।
किन्तु अब मैंने यरूशलेम को चुना है
जहाँ मैं सम्मानित होता रहूँगा।
किन्तु अब, दाऊद को मैंने चुना है।
मेरे इस्राएली लोगों पर शासन करने के लिये।'

बादल विशेष दृश्य जो यह संकेत करता था कि परमेश्वर इस्राएल के लोगों के साथ है।

यहोवा के प्रताप लोगों के सामने प्रकट होते समय परमेश्वर के रूपों में से एक। यह तेज चमकीले प्रकाश की तरह था।

17“मेरे पिता दाऊद बहुत अधिक चाहते थे कि वे
यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर के सम्मान के लिये
मन्दिर बनाएं। 18किन्तु यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से
कहा, ‘मैं जानता हूँ कि तुम मेरे सम्मान के लिये मन्दिर
बनाने की प्रबल इच्छा रखते हो और यह अच्छा है
कि तुम मेरा मन्दिर बनाना चाहते हो। 19किन्तु तुम
वह व्यक्ति नहीं हो जिसे मैंने मन्दिर बनाने के लिये
चुना है। तुम्हारा पुत्र मेरा मन्दिर बनाएगा।’

20“इस प्रकार यहोवा ने जो प्रतिज्ञा की थी उसे पूरी
कर दी है। अब मैं अपने पिता दाऊद के स्थान पर
राजा हूँ। अब मैं यहोवा की प्रतिज्ञा के अनुसार इस्राएल
के लोगों पर शासन कर रहा हूँ और मैंने इस्राएल के
परमेश्वर के लिये मन्दिर बनाया है। 21मैंने मन्दिर में
एक स्थान पवित्र सन्दूक के लिये बनाया है। उस पवित्र
सन्दूक में वह साक्षीपत्र है जो वाचा यहोवा ने हमारे
पूर्वजों के साथ किया था। यहोवा ने वह वाचा तब की
जब वह हमारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर ले आया था।”

22तब सुलैमान यहोवा की वेदी के सामने खड़ा हुआ।
सभी लोग उसके सामने खड़े थे। राजा सुलैमान ने
अपने हाथों को फैलाया और आकाश की ओर देखा।
23उसने कहा: “हे यहोवा इस्राएल के परमेश्वर तेरे
समान धरती पर या आकाश में कोई ईश्वर नहीं है। तूने
अपने लोगों के साथ वाचा की क्योंकि तू उनसे प्रेम करता
है और तूने अपनी वाचा को पूरा किया। तू उन लोगों के
प्रति दयालु और स्नेहपूर्ण है जो तेरा अनुसरण करते हैं।
24तूने अपने सेवक मेरे पिता दाऊद से, एक प्रतिज्ञा की
थी और तूने वह पूरी की है। तूने वह प्रतिज्ञा स्वयं अपने
मुँह से की थी और तूने अपनी महान शक्ति से उस प्रतिज्ञा
को आज सत्य घटित होने दिया है। 25अब,यहोवा इस्राएल
का परमेश्वर, उन अन्य प्रतिज्ञाओं को पूरा कर जो तूने
अपने सेवक,मेरे पिता दाऊद से की थीं। तूने कहा था,
‘दाऊद जैसा तुमने किया वैसे ही तुम्हारी सन्तानों को मेरी
आज्ञा का पालन सावधानी से करना चाहिये। यदि वे ऐसा
करेंगे तो सदा कोई न कोई तुम्हारे परिवार का व्यक्ति
इस्राएल के लोगों पर शासन करेगा’ 26और हे यहोवा,
इस्राएल के परमेश्वर, मैं फिर तुझसे माँगता हूँ कि तू
कृपया मेरे पिता के साथ की गई प्रतिज्ञा को पूरी करता रहे।

27“किन्तु परमेश्वर, क्या तू सचमुच इस पृथ्वी पर
हम लोगों के साथ रहेगा? तुझको सारा आकाश और
स्वर्ग के उच्चतम स्थान भी धारण नहीं कर सकते। निश्चय
ही यह मन्दिर भी, जिसे मैंने बनाया है, तुझको धारण नहीं
कर सकता। 28किन्तु तू मेरी प्रार्थना और मेरे निवेदन पर
ध्यान दे। मैं तेरा सेवक हूँ और तू मेरा यहोवा परमेश्वर है।
इस प्रार्थना को तू स्वीकार कर जिसे आज मैं तुझसे कर
रहा हूँ। 29बीते समय में तूने कहा था, ‘मेरा वहाँ सम्मान
किया जायेगा।’ इसलिये कृपया इस मन्दिर की देख–रेख
दिन–रात कर। उस प्रार्थना को तू स्वीकार कर, जिसे मैं
तुझसे इस समय मन्दिर में कह रहा हूँ। 30यहोवा, मैं और
तेरे इस्राएल के लोग इस मन्दिर में आएंगे और प्रार्थना
करेंगे। कृपया इन प्रार्थनाओं पर ध्यान दे। हम जानते हैं
कि तू स्वर्ग में रहता है। हम तुझसे वहाँ से अपनी प्रार्थना
सुनने और हमें क्षमा करने की याचना करते हैं।

31“यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के विरुद्ध
कोई अपराध करेगा तो वह यहाँ तेरी वेदी के पास
लाया जायेगा। यदि वह व्यक्ति दोषी नहीं है तो वह एक
शपथ लेगा। वह शपथ लेगा कि वह निर्दोष है। 32उस
समय तू स्वर्ग में सुन और उस व्यक्ति के साथ न्याय
कर। यदि वह व्यक्ति अपराधी है तो कृपया हमें स्पष्ट
कर कि वह अपराधी है और यदि व्यक्ति निरपराध
है तो हमें स्पष्ट कर कि वह अपराधी नहीं है।

33“कभी–कभी तेरे इस्राएल के लोग तेरे विरुद्ध
पाप करेंगे और उनके शत्रु उन्हें पराजित करेंगे। तब
लोग तेरे पास लौटेंगे और वे लोग इस मन्दिर में तेरी
प्रार्थना करेंगे। 34कृपया स्वर्ग से उनकी प्रार्थना को
सुन। तब अपने इस्राएली लोगों के पापों को क्षमा कर
और उनकी भूमि उन्हें फिर से प्राप्त करने दे। तूने
यह भूमि उनके पूर्वजों को दी थी।

35“कभी–कभी वे तेरे विरुद्ध पाप करेंगे, और तू
उनकी भूमि पर वर्षा होना बन्द कर देगा। तब वे इस
स्थान की ओर मुँह करके प्रार्थना करेंगे और तेरे
नाम की स्तुति करेंगे। तू उनको कष्ट सहने देगा
और वे अपने पापों के लिये पश्चाताप करेंगे। 36इसलिये
कृपया स्वर्ग में उनकी प्रार्थना को सुन। तब हम लोगों
को हमारे पापों के लिये क्षमा कर। लोगों को सच्चा
जीवन बिताने की शिक्षा दे। हे यहोवा तब कृपया तू
उस भूमि पर वर्षा कर जिसे तूने उन्हें दिया है।

37“भूमि बहुत अधिक सूख सकती है और उस पर
कोई अन्न उग नहीं सकेगा या संभव है लोगों में महामारी

फैले। संभव है सारा पैदा हुआ अन्न कीड़ें मकोड़ों द्वारा
नष्ट कर दिया जाय या तेरे लोग अपने कुछ नगरों में
अपने शत्रुओं के आक्रमण के शिकार बने या तेरे अनेक
लोग बीमार पड़ जायें। 38जब इनमें से कुछ भी घटित हो,
और एक भी व्यक्ति अपने पापों के लिये पश्चाताप
करे, और अपने हाथों को इस मन्दिर की ओर प्रार्थना
में फैलाये तो 39कृपया उसकी प्रार्थना को सुन। उसकी
प्रार्थना को सुन जब तू अपने निवास स्थान स्वर्ग में है।
तब लोगों को क्षमा कर और उनकी सहायता कर।
केवल तू यह जानता है कि लोगों के मन में सचमुच
क्या है? अत: हर एक के साथ न्याय कर और उनके
प्रति न्यायशील रह। 40यह इसलिये कर कि तेरे लोग
डरें और तेरा सम्मान तब तक सदैव करें जब तक वे
इस भूमि पर रहें जिसे तूने हमारे पूर्वजों को दिया था।

41-42"अन्य स्थानों के लोग तेरी महानता और
तेरी शक्ति के बारे में सुनेंगे। वे बहुत दूर से इस मन्दिर
में प्रार्थना करने आएंगे। 43कृपया अपने निवास स्थान,
स्वर्ग से उनकी प्रार्थना सुन। कृपया तू वह सब कुछ
प्रदान कर जिसे अन्य स्थानों के लोग तुझसे माँगे। तब
वे लोग भी इस्राएली लोगों की तरह ही तुझसे डरेंगे
और तेरा सम्मान करेंगे।

44"कभी-कभी तू अपने लोगों को अपने शत्रुओं
के विरुद्ध जाने और उनसे युद्ध करने का आदेश
देगा। तब तेरे लोग तेरे चुने हुए इस नगर और मेरे
बनाये हुए मन्दिर की ओर अभिमुख होंगे। जिसे मैंने
तेरे सम्मान में बनाया है और वे तेरी प्रार्थना करेंगे।
45उस समय तू अपने निवास स्थान स्वर्ग से उनकी
प्रार्थनाओं को सुन और उनकी सहायता कर।

46"तेरे लोग तेरे विरुद्ध पाप करेंगे। मैं इसे इसलिये जानता
हूँ क्योंकि हर एक व्यक्ति पाप करता है और तू अपने
लोगों पर क्रोधित होगा। तू उनके शत्रुओं को उन्हें हराने
देगा। उनके शत्रु उन्हें बन्दीं बनाएंगे और उन्हें किसी बहुत
दूर के देश में ले जाएंगे। 47उस दूर के देश में तेरे लोग
समझेंगे कि क्या हो गया है। वे अपने पापों के लिये पश्चाताप
करेंगे और तुझसे प्रार्थना करेंगे। वे कहेंगे, 'हमने पाप
और अपराध किया है।' 48वे उस दूर के देशमें रहेंगे।
किन्तु यदि वे इस देश जिसे तूने उनके पूर्वजों को दिया
और तेरे चुने नगर और इस मन्दिर जिसे मैंने तेरे सम्मान
में बनाया है। उसकी ओर मुख करके तुझसे प्रार्थना करेंगे।
49तो तू कृपया अपने निवास स्थान स्वर्ग से उनकी
सुन। 50अपने लोगों को सभी पापों के लिये क्षमा कर
दे और तू अपने विरोध में हुए पाप के लिये उन्हें क्षमा
कर उनके शत्रुओं को उनके प्रति दयालु बना। 51याद
रख कि वे तेरे लोग हैं, याद रख कि तू उन्हें मिस्र से
बाहर लाया। यह वैसा ही था जैसा तूने जलती भट्‌टी से
उन्हें पकड़ कर खींच लिया हो!

52"यहोवा परमेश्वर, कृपया मेरी प्रार्थना और अपने
इस्राएली लोगों की प्रार्थना सुन। उनकी प्रार्थना, जब कभी
वे तेरी सहायता के लिये करें, सुन। 53तूने उन्हें पृथ्वी के
सारे मनुष्यों में से अपना विशेष लोग होने के लिये चुना
है। यहोवा तूने उसे हमारे लिये करने की प्रतिज्ञा की है।
तूने हमारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर लाते समय यह प्रतिज्ञा
अपने सेवक मूसा के माध्यम से की थी।"

54सुलैमान ने परमेश्वर से यह प्रार्थना की। वह वेदी
के सामने अपने घुटनों के बल था। सुलैमान ने स्वर्ग
की ओर भुजायें उठाकर प्रार्थना की। तब सुलैमान ने
प्रार्थना पूरी की और वह उठ खड़ा हुआ। 55तब उसने
उच्च स्वर में इस्राएल के सभी लोगों को आशीर्वाद देने
के लिये परमेश्वर से याचना की। सुलैमान ने कहा:

56"यहोवा की स्तुति करो! उसने प्रतिज्ञा की, कि वह
अपने इस्राएल के लोगों को शान्ति देगा और उसने हमें
शान्ति दी है! यहोवा ने अपने सेवक मूसा का उपयोग
किया और इस्राएल के लोगों के लिये बहुत सी अच्छी
प्रतिज्ञायें की और यहोवा ने उन हर एक प्रतिज्ञाओं को
पूरा किया है। 57मैं प्रार्थना करता हूँ कि यहोवा, हमारा
परमेश्वर हम लोगों के साथ उसी तरह रहेगा जैसे वह
हमारे पूर्वजों के साथ रहा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि यहोवा
हमें कभी नहीं त्यागेगा। 58मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम
उसकी ओर अभिमुख होगें और उसका अनुसरण करेंगे।
तब हम लोग उसके सभी नियमों, निर्णयों और आदेशों का
पालन करेंगे जिन्हें उसने हमारे पूर्वजों को दिया। 59मैं आशा
करता हूँ कि यहोवा हमारा परमेश्वर सदैव इस प्रार्थना
को और जिन वस्तुओं की मैंने याचना की है, याद रखेगा।
मैं प्रार्थना करता हूँ कि यहोवा अपने सेवक राजा और
अपने लोग इस्राएल के लिये ये सब कुछ करेगा। मैं प्रार्थना
करता हूँ कि वह प्रतिदिन यह करेगा। 60यदि यहोवा इन
कामों को करेगा तो संसार के सभी व्यक्ति यह जानेंगे
कि मात्र यहोवा ही सत्य परमेश्वर है। 61ऐ लोगों,

तुम्हें यहोवा, हमारे परमेश्वर का भक्त और उसके
प्रति सच्चा होना चाहिये। तुम्हें उसके सभी नियमों
और आदेशों का अनुसरण और पालन करना चाहिये।
तुम्हें इस समय की तरह, भविष्य में भी उसकी आज्ञा
का पालन करते रहना चाहिये।"

62 तब राजा सुलैमान और उसके साथ के इस्राएल
के लोगों ने यहोवा को बलि–भेंट की। 63 सुलैमान ने
बाईस हजार पशुओं और एक लाख बीस हजार भेड़ों
को मारा। ये सहभागिता भेंटों के लिये थीं। यही पद्धति
थी जिससे राजा और इस्राएल के लोगों ने मन्दिर का
समर्पण किया अर्थात् उन्होंने यह प्रदर्शित किया कि
उन्होंने मन्दिर को यहोवा को अर्पित किया।

64 उसी दिन राजा सुलैमान ने मन्दिर के सामने का
आँगन समर्पित किया। उसने होमबलि, अन्नबलि और
मेलबलि के रूप में काम आये जानवरों की चर्बी की
भेंटें चढ़ाई। राजा सुलैमान ने ये भेंटें आँगन में चढ़ाई।
उसने यह इसलिये किया कि इन सारी भेंटो को धारण
करने के लिये यहोवा के सामने की काँसे की वेदी
अत्याधिक छोटी थी।

65 इस प्रकार मन्दिर में राजा सुलैमान और इस्राएल
के सारे लोगों ने पर्व* मनाया। सारा इस्राएल, उत्तर में
हमात दर्रे से लेकर दक्षिण में मिस्र की सीमा तक, वहाँ
था। वहाँ असंख्य लोग थे। उन्होंने खाते–पीते, सात दिन
यहोवा के साथ मिलकर आनन्द मनाया। तब वे अगले
सात दिनों तक वहाँ ठहरे। उन्होंने सब मिलाकर चौदह
दिनों तक उत्सव मनाया। 66 अगले दिन सुलैमान ने लोगों
से घर जाने को कहा। सभी लोगों ने राजा को धन्यवाद
दिया, विदा ली और वे घर चले गये। वे प्रसन्न थे क्योंकि
यहोवा ने अपने सेवक दाऊद के लिये और इस्राएल के
लोगों के लिये बहुत सारी अच्छी चीज़ें की थीं।

परमेश्वर सुलैमान के पास पुनः आता है

9 इस प्रकार सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर और अपने
महल का बनाना पूरा किया। सुलैमान ने उन सभी
को बनाया जिनका निर्माण वह करना चाहता था। 2 तब
यहोवा सुलैमान के सामने पुनः वैसे ही प्रकट हुआ जैसे
वह इसके पहले गिबोन में हुआ था। 3 यहोवा ने उससे
कहा: "मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुनी। मैंने तुम्हारे निवेदन भी
सुने जो तुम मुझसे करवाना चाहते हो। तुमने इस
मन्दिर को बनाया और मैंने इसे एक पवित्र स्थान
बनाया है। अतः यहाँ मेरा सदैव सम्मान होगा। मैं इस
पर अपनी दृष्टि रखूँगा और इसके विषय में सदैव
ध्यान रखूँगा। 4 तुम्हें मेरी सेवा वैसे ही करनी चाहिये
जैसी तुम्हारे पिता दाऊद ने की। वह निष्पक्ष और
निष्कपट था और तुम्हें मेरे नियमों और उन आदेशों
का पालन करना चाहिये जिन्हें मैंने तुम्हें दिया है।

5 "यदि तुम यह सब कुछ करते रहोगे तो मैं यह निश्चित
देखूँगा कि इस्राएल का राजा सदैव तुम्हारे परिवार में से
ही कोई हो। यही प्रतिज्ञा है जिसे मैंने तुम्हारे पिता दाऊद
से की थी। मैंने उससे कहा था कि इस्राएल पर सदैव
उसके वंशजों में से एक का शासन होगा।

6–7 "किन्तु यदि तुम या तुम्हारी सन्तानें मेरा अनुसरण
करना छोड़ते हो, मेरे दिये गए नियमों और आदेशों का
पालन नहीं करते और तुम दूसरे देवता की सेवा और
पूजा करते हो तो मैं इस्राएल को वह देश छोड़ने को
विवश करुँगा जिसे मैंने उन्हें दिया है। इस्राएल अन्य
लोगों के लिये उदाहरण होगा। अन्य लोग इस्राएल का
मजाक उड़ाएंगे। मैंने मन्दिर को पवित्र किया है। यह
वह स्थान है जहाँ लोग मेरा सम्मान करते हैं। किन्तु
यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन नहीं करते तो इसे मैं
नष्ट कर दूँगा। 8 यह मन्दिर नष्ट कर दिया जायेगा। हर
एक व्यक्ति जो इसे देखेगा चकित होगा। वे पूछेंगे, 'यहोवा
ने इस देश के प्रति और इस मन्दिर के लिये इतना
भयंकर कदम क्यों उठाया?' 9 अन्य लोग उत्तर देंगे,
'यह इसलिये हुआ कि उन्होंने यहोवा अपने परमेश्वर
को त्याग दिया। वह उनके पूर्वजों को मिस्र से बाहर
लाया था। किन्तु उन्होंने अन्य देवताओं का अनुसरण
करने का निश्चय किया। उन्होंने उन देवताओं की
सेवा और पूजा करनी आरम्भ की। यही कारण है कि
यहोवा ने उनके लिये इतना भंयकर कार्य किया।'"

10 यहोवा का मन्दिर और अपना महल बनाने में सुलैमान
को बीस वर्ष लगे 11 और बीस वर्ष के बाद राजा सुलैमान ने
सोर के राजा हीराम को गलील में बीस नगर दिये। सुलैमान
ने राजा हीराम को वे नगर दिये क्योंकि हीराम ने मन्दिर
और महल बनाने में सुलैमान की सहायता की। हीराम ने
सुलैमान को उतने सारे देवदारु और चीड़ के वृक्ष
तथा सोना दिया जितना उसने चाहा। 12 इसलिये हीराम

पर्व संभवतः "फसह का पर्व।"

ने सोर से इन नगरों को देखने के लिये यात्रा की, जिन्हें
सुलैमान ने उसे दिये। जब हीराम ने उन नगरों को देखा
तो वह प्रसन्न नहीं हुआ। 13राजा हीराम ने कहा, "मेरे
भाई जो नगर तुमने मुझे दिये हैं वे हैं ही क्या?" राजा
हीराम ने उस प्रदेश का नाम कबूल* प्रदेश रखा और
वह क्षेत्र आज भी कबूल कहा जाता है। 14हीराम ने
सुलैमान के पास लगभग नौ हजार पौंड सोना मन्दिर
को बनाने में उपयोग करने के लिये भेजा था।

15राजा सुलैमान ने दासों को अपने मन्दिर और महल
बनाने के लिये काम करने के लिये विवश किया। तब
राजा सुलैमान ने इन दासों का उपयोग बहुत सी चीज़ों को
बनाने में किया। उसने मिल्लो* बनाया। उसने यरूशलेम
नगर के चारों ओर चहारदीवारी भी बनाई। तब उसने
हासोर, मगिद्दो और गेजेर नगरों को पुन: बनाया।

16बीते समय में मिस्र का राजा गेजेर नगर के विरुद्ध
लड़ा था और उसे जला दिया था। उसने उन कनानी
लोगों को मार डाला जो वहाँ रहते थे। सुलैमान ने फिरौन
की पुत्री से विवाह किया। इसलिये फ़िरौन ने उस नगर
को सुलैमान के लिये विवाह की भेंट के रूप में दिया।
17सुलैमान ने उस नगर को पुन: बनाया। सुलैमान ने निचले
बथोरेन नगर को भी बनाया। 18राजा सुलैमान ने जुदैन
मरुभूमि में बालात और तामार नगरों को भी बनाया।
19राजा सुलैमान ने वे नगर भी बनाये जहाँ वह अन्य और
चीज़ों का भण्डार बना सकता था और उसने अपने रथों
और घोड़ों के लिये भी स्थान बनाये। सुलैमान ने अन्य
बहुत सी चीज़ें भी बनाई जिन्हें वह यरूशलेम, लबानोन
और अपने शासित अन्य सभी स्थानों में चाहता था।

20देश में ऐसे लोग भी थे जो इस्राएली नहीं थे। वे
लोग एमोरी, हित्ती, परिज्जी, हिब्बी और यबूसी थे।
21इस्राएली उन लोगों को नष्ट नहीं कर सके थे। किन्तु
सुलैमान ने उन्हें दास के रूप में अपने लिये काम
करने को विवश किया। वे अभी तक दास हैं।
22सुलैमान ने किसी इस्राएली को अपना दास होने के
लिये विवश नहीं किया। इस्राएल के लोग सैनिक, राज्य
कर्मचारी, अधिकारी, नायक और रथचालक थे।

23सुलैमान की योजनाओं के साढ़े पाँच सौ पर्यवेक्षक
थे। वे उन व्यक्तियों के ऊपर अधिकारी थे जो काम
करते थे। 24फ़िरौन की पुत्री दाऊद के नगर से वहाँ
गई जहाँ सुलैमान ने उसके लिये विशाल महल बनाया।
तब सुलैमान ने मिल्लों बनाया।

25हर वर्ष तीन बार सुलैमान होमबलि और मेलबलि
वेदी पर चढ़ाता था। यह वही वेदी थी जिसे सुलैमान ने
यहोवा के लिये बनाया था। राजा सुलैमान यहोवा के
सामने सुगन्धि भी जलाता था। अत: मन्दिर के लिये
आवश्यक चीज़ें दिया करता था।

26राजा सुलैमान ने एस्योन गेबेर में जहाज भी बनाये।
यह नगर एदोम प्रदेश में लाल सागर के तट पर एलोत
के पास था। 27राजा हीराम के पास कुछ ऐसे व्यक्ति
थे जो समुद्र के बारे में अच्छा ज्ञान रखते थे। वे व्यक्ति
प्राय: जहाज से यात्रा करते थे। राजा हीराम ने उन
व्यक्तियों को सुलैमान के नाविक बेड़े में सेवा करने
और सुलैमान के व्यक्तियों के साथ काम करने के
लिये भेजा। 28सुलैमान के जहाज ओपोर को गए। वे
जहाज एकतीस हजार पाँच सौ पौंड सोना आपोर से
सुलैमान के लिये लेकर लौटे।

शीबा की रानी सुलैमान से मिलने आती है

10 शीबा की रानी ने सुलैमान के बारे में सुना।
अत: वह कठिन प्रश्नों से उसकी परीक्षा लेने
आई। 2उसने सेवकों की विशाल संख्या के साथ
यरूशलेम की यात्रा की। अनेक ऊँट मसाले, रत्न, और
बहुत सा सोना ढो रहे थे। वह सुलैमान से मिली और
उसने उन सब प्रश्नों को पूछा जिन्हें वह सोच सकती
थी। 3सुलैमान ने सभी प्रश्नों के उत्तर दिये। उसका कोई
भी प्रश्न उसके उत्तर देने के लिये अत्याधिक कठिन
नहीं था। 4शीबा की रानी ने समझ लिया कि सुलैमान
बहुत बुद्धिमान है। उसने उस सुन्दर महल को भी देखा
जिसे उसने बनाया था। 5रानी ने राजा की मेज पर भोजन
भी देखा। उसने उसके अधिकारियों को एक साथ मिलते
देखा। उसने महल के सेवकों और जिन अच्छे वस्त्रों
को उन्होंने पहन रखा था, उन्हें भी देखा। उसने उसकी
दावतों और मन्दिर में चढ़ाई गई भेंटों को देखा। उन
सभी चीज़ों ने वास्तव में उसे चकित कर दिया। 'उसकी
साँस ऊपर की ऊपर और नीचे की नीचे रह गई!'

कबूल इस नाम का तात्पर्य हिब्रू के उस शब्द से है जिसका अर्थ "व्यर्थ" है।

मिल्लो मिल्लो संभवत: एक ऊँचा किया हुआ मिट्टी का चबूतरा था जो यरूशलेम में मन्दिर के दक्षिण पूर्व में था।

6इसलिये रानी ने राजा से कहा, “मैंने अपने देश
में आपकी बुद्धिमानी और बहुत सी बातों के बारे में
सुना जो आपने कीं। वे सभी बातें सत्य हैं! 7मैं इन
बातों में तब तक विश्वास नहीं करती थी जब तक मैं
यहाँ नहीं आई और इन चीजों को अपनी आँखों से
नहीं देखा। अब मैं देखती हूँ कि जितना मैंने सुन रखा
था उससे भी अधिक यहाँ है। आपकी बुद्धिमत्ता और
सम्पत्ति उससे बहुत अधिक है जितनी लोगों ने मुझको
बतायी। 8आपकी पत्नियाँ* और आपके अधिकारी
बहुत भाग्यशाली हैं। वे प्रतिदिन आपकी सेवा कर
सकते हैं और आपकी बुद्धिमत्तापूर्ण बातें सुन सकते
हैं। 9आपका यहोवा परमेश्वर स्तुति योग्य है! आपको
इस्राएल का राजा बनाने में उसे प्रसन्नता हुई। यहोवा
परमेश्वर इस्राएल से प्रेम करता है। इसलिये उसने
आपको राजा बनाया। आप नियमों का अनुसरण करते
हैं और लोगों के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करते हैं।”

10तब शीबा की रानी ने राजा को लगभग नौ हजार
पौंड सोना दिया। उसने उसे अनेक मसाले और रत्न
भी दिये। जितनी मात्रा में शीबा की रानी ने राजा सुलैमान
को मसाले उपहार में दिये, उतनी मात्रा में मसाले फिर
कभी इस्राएल देश में नहीं आए। शीबा की रानी ने
उससे अधिक मसाले सुलैमान को दिये जितने पहले
कभी किसी ने इस्राएल को लाकर दिये थे।

11हीराम के जहाज ओपोर से सोना ले आए। वे जहाज
बहुत अधिक लकड़ी* और रत्न भी लाए। 12सुलैमान ने
लकड़ी का उपयोग मन्दिर और महल को सम्भालने के
लिये किया। उसने लकड़ी का उपयोग गायकों के लिये
वीणा और बीन बनाने में भी किया। अन्य कोई भी व्यक्ति
उस प्रकार की लकड़ी इस्राएल में कभी नहीं लाया, और
किसी भी व्यक्ति ने तब से उस प्रकार की लकड़ी नहीं देखी।

13तब राजा सुलैमान ने शीबा की रानी को वे भेंटें
दीं जो कोई राजा किसी अन्य देश के शासक को
सदैव देता है। तब उसने उसे वह सब दिया जो कुछ भी
उसने माँगा। इसके बाद रानी सेवकों सहित अपने
देश को वापस लौट गई।

पत्नियाँ यह प्राचीन ग्रीक अनुवाद में है। हिब्रू में “पुरुष” है।
लकड़ी यह विशेष प्रकार की लकड़ी थी जिसे “अल्मुग
लकड़ी” कहा जाता है। कोई भी ठीकठीक नहीं जानता
कि यह किस प्रकार की लकड़ी थी।

14राजा सुलैमान प्रति वर्ष लगभग उन्नासी हजार
नौ सौ बीस पौंड सोना प्राप्त करता था।

15व्यापारिक जहाजों से सोना लाये जाने के अतिरिक्त
उसने बणिक, व्यापारियों और अरब के राजाओं तथा
देश के प्रशासकों से भी सोना प्राप्त किया।

16राजा सुलैमान ने दो सौ बड़ी ढालें सोने की परतों
से बनाईं। हर एक ढाल में लगभग पन्द्रह पौंड सोना
लगा था। 17उसने सोने की पट्टियों की तीन सौ छोटी
ढालें भी बनाईं। हर एक ढाल में लगभग चार पौंड
सोना लगा था। राजा ने उन्हें उस भवन में रखा जिसे
“लबानोन का वन” कहा जाता था।

18राजा सुलैमान ने एक विशाल हाथी दाँत का सिंहासन
भी बनाया। उसने उसे शुद्ध सोने से मढ़ा। 19सिंहासन पर
पहुँचने के लिये उसमें छ: पैड़ियाँ थीं। सिंहासन का पिछला
भाग सिरे पर गोल था। कुर्सी के दोनों ओर हत्थे लगे थे
और कुर्सी की बगल में दोनों हत्थों के नीचे सिंहों की
तस्वीरें बनी थी। 20छ: पैड़ियों में से हर एक पर दो सिहं
थे। हर एक के सिरे पर एक सिंह था। किसी भी अन्य
राज्य में इस प्रकार का कुछ भी नहीं था। 21सुलैमान के
सभी प्याले और गिलास सोने के बने थे और “लबानोन
का वन” नामक भवन में सभी अस्त्र-शस्त्र* शुद्ध सोने
के बने थे। महल में कुछ भी चाँदी का नहीं बना था।
सुलैमान के समय में सोना इतना अधिक था कि लोग
चाँदी को महत्वपूर्ण नहीं समझते थे।

22राजा के पास बहुत से व्यापारिक जहाज भी थे
जिन्हें वह अन्य देशों से वस्तुओं का व्यापार करने के
लिये बाहर भेजता था। ये हीराम के जहाज थे। हर तीसरे
वर्ष जहाज सोना, चाँदी, हाथी दाँत और पशु लाते थे।

23सुलैमान पृथ्वी पर महानतम राजा था। वह सभी
राजाओं से अधिक धनवान और बुद्धिमान था। 24सर्वत्र
लोग राजा सुलैमान को देखना चाहते थे। वे परमेश्वर
द्वारा दी गई उसकी बुद्धिमत्ता की बात सुनना चाहते थे।
25प्रत्येक वर्ष लोग राजा का दर्शन करने आते थे और
प्रत्येक व्यक्ति भेंट लाता था। वे सोने-चाँदी के बने बर्तन,
कपड़े, अस्त्र-शस्त्र, मसाले, घोड़े और खच्चर लाते थे।
26अत: सुलैमान के पास अनेक रथ और घोड़े थे।
उसके पास चौदह सौ रथ और बारह हजार घोड़े थे।

अस्त्र-शस्त्र हिब्रू शब्द का अर्थ “तश्तरियाँ”, “औजार”
या “अस्त्र-शस्त्र” हो सकता है।

सुलैमान ने इन रथों के लिये विशेष नगर बनाये। अत:
रथ उन नगरों में रखे जाते थे। राजा सुलैमान ने रथों
में से कुछ को अपने पास यरूशलेम में भी रखा। [27]राजा
ने इस्राएल को बहुत सम्पन्न बना दिया। यरूशलेम नगर
में चाँदी इतनी सामान्य थी जितनी चट्टानें, देवदारु की
लकड़ी और पहाड़ों पर उगने वाले असंख्य अंजीर के
पेड़ सामान्य थे। [28]सुलैमान ने मिस्र और कुए से घोड़े
मँगाए। उसके व्यापारी उन्हें कुएँ से लाते थे और फिर
उन्हें इस्राएल में लाते थे। [29]मिस्र के एक रथ का मूल्य
लगभग पन्द्रह पौंड चाँदी था और एक घोड़े का मूल्य
पौने चार पौंड चाँदी था। सुलैमान घोड़े और रथ हित्ती
और अरामी राजाओं के हाथ बेचता था।

सुलैमान और उसकी बहुत सी पत्नियाँ

11 राजा सुलैमान स्त्रियों से प्रेम करता था। वह
बहुत सी ऐसी स्त्रियों से प्रेम करता था जो इस्राएल
राष्ट्र की नहीं थीं। इनमें फ़िरौन की पुत्री, हित्ती स्त्रियाँ,
और मोआबी, अम्मोनी, एदोमी और सीदोनी स्त्रियाँ थीं।
[2]बीतें समय में यहोवा ने इस्राएल के लोगों से कहा था,
"तुम्हें अन्य राष्ट्रों की स्त्रियों से विवाह नहीं करना चाहिये।
यदि तुम ऐसा करोगे तो वे लोग तुम्हें अपने देवताओं का
अनुसरण करने के लिये बाध्य करेंगी।" किन्तु सुलैमान
उन स्त्रियों के प्रेम पाश में पड़ा। [3]सुलैमान की सात सौ
पत्नियाँ थीं। (ये सभी स्त्रियाँ अन्य राष्ट्रों के प्रमुखों की
पुत्रियाँ थीं।) उसके पास तीन सौ दासियाँ भी थीं जो उसकी
पत्नियों के समान थीं। उसकी पत्नियों ने उसे परमेश्वर
से दूर हटाया। [4]जब सुलैमान बूढ़ा हुआ तो उसकी पत्नियाँ
ने उससे अन्य देवताओं का अनुसरण कराया। सुलैमान
ने उसी प्रकार पूरी तरह यहोवा का अनुसरण नहीं किया
जिस प्रकार उसके पिता दाऊद ने किया था। [5]सुलैमान
ने अशतोरेत की पूजा की। यह सीदोन के लोगों की देवी
थी। सुलैमान मिल्कोम* की पूजा करता था। यह
अम्मोनियों का घृणित देवता था। [6]इस प्रकार सुलैमान ने
यहोवा के प्रति अपराध किया। सुलैमान ने यहोवा का
अनुसरण पूरी तरह उस प्रकार नहीं किया जिस प्रकार
उसके पिता दाऊद ने किया था।

[7]सुलैमान ने कमोश की पूजा के लिये स्थान बनाया।
कमोश मोआबी लोगों की घृणास्पद देवमूर्ति थी।
सुलैमान ने उसके उच्चस्थान को यरूशलेम से लगी पहाड़ी
पर बनाया। सुलैमान ने उसी पहाड़ी पर मोलेक का
उच्चस्थान भी बनाया। मोलेक अम्मोनी लोगों की घृणास्पद
देवमूर्ति थी। [8]तब सुलैमान ने अन्य देशों की अपनी सभी
पत्नियों के लिये वही किया। उसकी पत्नियाँ सुगन्धि जलाती
थीं और अपने देवताओं को बलि–भेंट करती थीं।

[9]सुलैमान यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर का अनुसरण
करने से दूर हट गया। अत: यहोवा, सुलैमान पर क्रोधित
हुआ। यहोवा सुलैमान के पास दो बार आया जब वह छोटा
था। [10]यहोवा ने सुलैमान से कहा कि तुम्हें अन्य देवताओं
का अनुसरण नहीं करना चाहिये। किन्तु सुलैमान ने यहोवा
के आदेश का पालन नहीं किया। [11]इसलिये यहोवा ने
सुलैमान से कहा, "तुमने मेरे साथ की गई अपनी वाचा
को तोड़ना पसन्द किया है। तुमने मेरे आदेशों का पालन
नहीं किया है। अत: मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तुमसे
तुम्हारा राज्य छीन लूँगा। मैं इसे तुम्हारे सेवकों में से एक
को दूँगा। [12]किन्तु मैं तुम्हारे पिता दाऊद से प्रेम करता
था। इसलिये जब तक तुम जीवित हो तब तक मैं तुम्हारा
राज्य नहीं लूँगा। मैं तब तक प्रतीक्षा करुँगा जब तक
तुम्हारा पुत्र राजा नहीं बन जाता। तब मैं उससे इसे लूँगा।
[13]तो भी मैं तुम्हारे पुत्र से सारा राज्य नहीं छीनूँगा। मैं उसे
एक परिवार समूह पर शासन करने दूँगा। यह मैं दाऊद
के लिये करूँगा। वह एक अच्छा सेवक था और यह मैं
अपने चुने हुये नगर यरूशलेम के लिये भी करूँगा।"

सुलैमान के शत्रु

[14]उस समय यहोवा ने एदोमी हदद को सुलैमान का
शत्रु बनाया। हदद एदोम के राजा के परिवार से था। [15]यह
इस प्रकार घटित हुआ। कुछ समय पहले दाऊद ने एदोम
को हराया था। योआब दाऊद की सेना का सेनापति था।
योआब एदोम में मरे व्यक्तियों को दफनाने गया। तब
योआब ने वहाँ जीवित सभी व्यक्तियों को मार डाला।
[16]योआब और सारे इस्राएली एदोम में छ: महीने तक
ठहरे। उस समय के बीच उन्होंने एदोम के सभी पुरुषों
को मार डाला। [17]किन्तु उस समय हदद अभी एक किशोर
ही था। अत: हदद मिस्र को भाग निकला। उसके पिता के
कुछ सेवक उसके साथ गए। [18]उन्होंने मिद्यान को छोड़ा
और वे परान को गए। वे मिस्र के राजा फ़िरौन के पास
गये और उससे सहायता माँगी। फ़िरौन ने हदद को एक

मिल्कोम अम्मोनी लोगों का देवता।

घर और कुछ भूमि दी। फ़िरौन ने उसे सहायता भी दी
और उसे खाने के लिये भोजन दिया।
19फ़िरौन ने हदद को बहुत पसन्द किया। फिरौन
ने हदद को एक पत्नी दी, स्त्री फ़िरौन की साली थी।
(फ़िरौन की पत्नी तहपनेस थी।) 20अत: तहपनेस
की बहन हदद से ब्याही गई। उनका एक पुत्र गनूबत
नाम का हुआ। रानी तहपनेस ने गनूबत को अपने
बच्चों के साथ फ़िरौन के महल में बड़ा होने दिया।
21मिस्र में हदद ने सुना कि दाऊद मर गया। उसने
यह भी सुना कि सेनापति योआब मर गया। इसलिये
हदद ने फ़िरौन से कहा, "मुझे अपने देश में अपने
घर वापस लौट जाने दे।"
22किन्तु फ़िरौन ने उत्तर दिया, "मैंने तुम्हें सारी
चीज़, जिनकी तुम्हें यहाँ आवश्यकता है, दी है! तुम
अपने देश में वापस क्यों जाना चाहते हो?"
हदद ने उत्तर दिया, "कृपया मुझे घर लौटने दें।"
23यहोवा ने दूसरे व्यक्ति को भी सुलैमान के विरुद्ध
शत्रु बनाया। यह व्यक्ति एल्यादा का पुत्र रजोन था।
रजोन अपने स्वामी के यहाँ से भाग गया था। उसका
स्वामी सोबा का राजा हददेजेर था। 24दाऊद ने जब
सोबा की सेना को हरा दिया तब उसके बाद रजोन ने
कुछ व्यक्तियों को इकट्ठा किया और एक छोटी
सेना का प्रमुख बन गया। रजोन दमिश्क गया और
वहीं ठहरा। रजोन दमिश्क का राजा हो गया। 25रजोन
अराम पर शासन करता था। रजोन इस्राएल से घृणा
करता था, इसलिये सुलैमान जब तक जीवित रहा
वह पूरे समय इस्राएल का शत्रु बना रहा। रजोन और
हदद ने इस्राएल के लिये बड़ी परेशानियाँ उत्पन्न कीं।
26नबात का पुत्र यारोबाम सुलैमान के सेवकों में
से एक था। यारोबाम एप्रैम परिवार समूह से था। वह
सरेदा नगर का था। यारोबाम की माँ का नाम सरूयाह
था। उसका पिता मर चुका था। वह राजा के विरुद्ध
हो गया।
27यारोबाम राजा के विरुद्ध क्यों हुआ? इसकी
कहानी यह है: सुलैमान मिल्लो बना रहा था और
अपने पिता दाऊद के नगर की दीवार को दृढ़ कर
रहा था। 28यारोबाम एक बलवान व्यक्ति था।
सुलैमान ने देखा कि यह युवक एक अच्छा
श्रमिक है। इसलिये सुलैमान ने उसे यूसुफ के
परिवार समूह* के श्रमिकों का अधिकारी बना दिया।
29एक दिन यारोबाम यरूशलेम के बाहर यात्रा कर
रहा था। शीलो का अहिय्याह नबी उससे सड़क पर
मिला। अहिय्याह एक नया अंगरखा पहने था। ये दोनों
व्यक्ति देश में अकेले थे। 30अहिय्याह ने अपना नया
अंगरखा लिया और इसे बारह टुकड़ों में फाड़ डाला।
31तब अहिय्याह ने यारोबाम से कहा, "इस अंगरखा
के दस टुकड़े तुम अपने लिये ले लो। यहोवा इस्राएल का
परमेश्वर कहता है: 'मैं सुलैमान से राज्य को छीन लूँगा
और मैं परिवार समूहों में से दस को, तुम्हे दूँगा 32और मैं
दाऊद के परिवार को केवल एक परिवार समूह पर शासन
करने दूँगा। मैं उन्हें केवल इस समूह को लेने दूँगा। मैं यह
अपने दाऊद और यरूशलेम के लिये ऐसा करने दूँगा।
यरूशलेम वह नगर है जिसे मैंने सारे इस्राएल के परिवार
समूह से चुना है। 33मैं सुलैमान से राज्य ले लूँगा क्योंकि
उसने मेरा अनुसरण करना छोड़ दिया। वह सीदोनी देवमूर्ती
अश्तोरेत की पूजा करता है। वह अश्तोरेत, सीदोनी देवता,
मोआबी देवता कमोश और अम्मोनी देवता मिल्कोम की
पूजा करता है। सुलैमान ने सच्चे और अच्छे कामों को
करना छोड़ दिया है। वह मेरे नियमों और आदेशों का
पालन नहीं करता। वह उस प्रकार नहीं रहता जिस प्रकार
उसका पिता दाऊद रहता था। 34इसलिये मैं राज्य को
सुलैमान के परिवार से ले लूँगा। किन्तु मैं सुलैमान को
उसके शेष जीवन भर उनका शासक रहने दूँगा। यह मैं
अपने सेवक दाऊद के लिये करूँगा। मैंने दाऊद को
इसलिये चुना था कि वह मेरे सभी आदेशों व नियमों का
पालन करता था। 35किन्तु मैं उसके पुत्र से राज्य ले लूँगा
और यारोबाम मैं तुम्हें दस परिवार समूह पर शासन करने
दूँगा। 36मैं सुलैमान के पुत्र को एक परिवार समूह पर
शासन करते हुए रहने दूँगा। मैं इसे इसलिये करूँगा कि
मेरे सेवक दाऊद का शासन यरूशलेम में मेरे सामने
सदैव रहेगा। यरूशलेम वह नगर है जिसे मैंने अपना निजी
नगर चुना है। 37किन्तु मैं तुम्हें उन सभी पर शासन करने
दूँगा जिसे तुम चाहते हो। तुम पूरे इस्राएल पर शासन करोगे।
38मैं यह सब तुम्हारे लिये करूँगा। यदि तुम सच्चाई के
साथ रहोगे और मेरे सारे आदेशों का पालन करोगे तो मैं
तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुम्हारे परिवार को राजाओं का

यूसुफ के परिवार समूह यूसुफ के पुत्र एप्रैम और मनश्शे
के परिवार समूह के लोग।

परिवार वैसे ही बना दूँगा जैसे मैंने दाऊद को बनाया।
मैं तुमको इस्राएल दूँगा। 39मैं दाऊद की सन्तानों को
उसका दण्ड दूँगा जो सुलैमान ने किया। किन्तु मैं
सदैव के लिये उन्हें दण्ड नहीं दूँगा।'"

सुलैमान की मृत्यु

40सुलैमान ने यारोबाम को मार डालने का प्रयत्न
किया। किन्तु यारोबाम मिस्र भाग गया। वह मिस्र के
राजा शीशक के पास गया। यारोबाम वहाँ तब तक
ठहरा जब तक सुलैमान मरा नहीं।

41सुलैमान ने अपने शासन काल में बहुत बड़े और
बुद्धिमत्तापूर्ण काम किये। जिनका विवरण "सुलैमान
के इतिहास–ग्रन्थ" में लिखा है। 42सुलैमान ने यरूशलेम
में पूरे इस्राएल पर चालीस वर्ष तक शासन किया। 43तब
सुलैमान मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया।*
वह अपने पिता के दाऊद नगर में दफनाया गया, और
उसका पुत्र रहूबियाम उसके स्थान पर राजा बना।

गृह युद्ध

12 1-2नबात का पुत्र यारोबाम तब भी मिस्र में था,
जहाँ वह सुलैमान से भागकर पहुँचा था। जब
उसने सुलैमान की मृत्यु की खबर सुनी तो वह एप्रैम
की पहाड़ियों में अपने जेरदा नगर में वापस लौट आया।

राजा सुलैमान मरा और अपने पूर्वजों के साथ
दफनाया गया। उसके बाद उसका पुत्र रहूबियाम नया
राजा बना। 3इस्राएल के सभी लोग शकेम गए। वे
रहूबियाम को राजा बनाने गये। रहूबियाम भी राजा
बनने के लिये शकेम गया। लोगों ने रहूबियाम से
कहा, 4"तुम्हारे पिता ने हम लोगों को बहुत कठोर
श्रम करने के लिये विवश किया। अब तुम इसे हम
लोगों के लिये कुछ सरल करो। उस कठिन काम
को बन्द करो जिसे करने के लिये तुम्हारे पिता ने
हमें विवश किया था। तब हम तुम्हारी सेवा करेंगे।"

5रहूबियाम ने उत्तर दिया, "तीन दिन में मेरे पास
वापस लौट कर आओ और मैं उत्तर दूँगा।" अत:
लोग चले गये।

6कुछ अग्रज लोग थे जो सुलैमान के जीवित रहते
उसके निर्णय करने में सहायता करते थे। इसलिये
राजा रहूबियाम ने इन व्यक्तियों से पूछा कि उसे क्या
करना चाहिये। उसने कहा, "आप लोग क्या सोचते
हैं, मुझे इन लोगों को क्या उत्तर देना चाहिये?"

7अग्रजों ने उत्तर दिया, "यदि आज तुम उनके सेवक
की तरह रहोगे तो वे सच्चाई से तुम्हारी सेवा करेंगे।
यदि तुम दयालुता के साथ उनसे बातें करोगे तब वे
तुम्हारी सदा सेवा करेंगे।"

8किन्तु रहूबियाम ने उनकी यह सलाह न मानी।
उसने उन नवयुवकों से सलाह ली जो उसके मित्र थे।
9रहूबियाम ने कहा, "लोग यह कहते हैं, 'हमें उससे
सरल काम दो जो तुम्हारे पिता ने दिया था।' तुम क्या
सोचते हो, मुझे लोगों को कैसे उत्तर देना चाहिये? मैं
उनसे क्या कहूँ?"

10राजा के युवक मित्रों ने कहा, "वे लोग तुम्हारे
पास आए और उन्होंने तुमसे कहा, 'तुम्हारे पिता ने
हमें कठिन श्रम करने के लिये विवश किया। अब
हम लोगों का काम सरल करें।' अत: तुम्हें डींग मारनी
चाहिये और उनसे कहना चाहिये, 'मेरी छोटी उंगली
मेरे पिता के पूरे शरीर से अधिक शक्तिशाली है। 11मेरे
पिता ने तुम्हें कठिन श्रम करने को विवश किया।
किन्तु मैं उससे भी बहुत कठिन काम कराऊँगा! मेरे
पिता ने तुमसे काम लेने के लिये कोड़ों का उपयोग
किया था। मैं तुम्हें उन कोड़ो से पीटूँगा जिनमें धारदार
लोहे के टुकड़े हैं, तुम्हें घायल करने के लिये!'"

12रहूबियाम ने लोगों से कहा था, "तीन दिन में मेरे
पास वापस आओ।" इसलिये तीन दिन बाद इस्राएल के
सभी लोग रहूबियाम के पास लौटे। 13उस समय राजा
रहूबियाम ने उनसे कठोर शब्द कहे। उसने अग्रजों की
सलाह न मानी। 14उसने वही किया जो उसके मित्रों ने
उसे करने को कहा। रहूबियाम ने कहा, "मेरे पिता ने
तुम्हें कठिन श्रम करने को विवश किया। अत: मैं तुम्हें
और अधिक काम दूँगा। मेरे पिता ने तुमको कोड़े से
पीटा। किन्तु मैं तुम्हें उन कोड़ों से पीटूँगा जिनमें तुम्हें
घायल करने के लिये धारदार लोहे के टुकड़े हैं।" 15अत:
राजा ने वह नहीं किया जिसे लोग चाहते थे। यहोवा ने
ऐसा होने दिया। यहोवा ने यह अपनी उस प्रतिज्ञा को पूरा
करने के लिये किया जो उसने नाबात के पुत्र यारोबाम के
साथ की थी। यहोवा ने अहिय्याह नबी का उपयोग यह
प्रतिज्ञा करने के लिये किया था। अहिय्याह शीलो का था।

सुलैमान मरा ... दफनाया गया "अपने पूर्वजों के साथ सोया।"

16इस्राएल के सभी लोगों ने समझ लिया कि नये राजा
ने उनकी बात अनसुनी कर दी है। इसलिये लोगों ने राजा
से कहा, “क्या हम दाऊद के परिवार के अंग हैं? नहीं!
क्या हमें यिशै की भूमि में से कुछ मिला है? नहीं! अत:
इस्राएलियों हम अपने घर चलें। दाऊद के पुत्र को अपने
लोगों पर शासन करने दो।” अत: इस्राएल के लोग अपने
घर वापस गए। 17किन्तु रहूबियाम फिर भी उन इस्राएलियों
पर शासन करता रहा, जो यहूदा के नगरों में रहते थे।

18अदोराम नामक एक व्यक्ति सब श्रमिकों का
अधिकारी था। राजा रहूबियाम ने अदोराम को लोगों
से बात चीत करने के लिये भेजा। किन्तु इस्राएल के
लोगों ने उस पर तब तक पत्थर बरसाये जब तक वह
मर नहीं गया। तब राजा रहूबियाम अपने रथ तक
दौड़ा और यरूशलेम को भाग निकला। 19इस प्रकार
इस्राएल ने दाऊद के परिवार से विद्रोह कर दिया और
वे अब भी आज तक दाऊद के परिवार के विरुद्ध हैं।

20इस्राएल के सभी लोगों ने सुना कि यारोबाम वापस
लौट आया है। इसलिये उन्होंने उसे एक सभा में आमन्त्रित
किया और उसे पूरे इस्राएल का राजा बना दिया। केवल
यहूदा का परिवार समूह ही एक मात्र परिवार समूह था
जो दाऊद के परिवार का अनुसरण करता रहा।

21रहूबियाम यरूशलेम को वापस गया। उसने यहूदा
के परिवार समूह और बिन्यामीन के परिवार समूह को
इकट्ठा किया। यह एक लाख अस्सी हजार पुरुषों की
सेना थी। रहूबियाम इस्राएल के लोगों के विरुद्ध युद्ध लड़ना
चाहता था। वह अपने राज्य को वापस लेना चाहता था।

22किन्तु यहोवा ने परमेश्वर के एक व्यक्ति से बातें
कीं। उसका नाम शमायाह था। परमेश्वर ने कहा,
23“यहूदा के राजा, सुलैमान के पुत्र, रहूबियाम और यहूदा
तथा बिन्यामीन के सभी लोगों से बात करो। 24उनसे
कहो, ‘यहोवा कहता है कि तुम्हें अपने भाईयों इस्राएल
के लोगों के विरुद्ध युद्ध में नहीं जाना चाहिये। तुम सबको
घर लौट जाना चाहिये। मैंने इन सभी घटनाओं को घटित
होने दिया है।’” अत: रहूबियाम की सेना के पुरुषों ने
यहोवा का आदेश माना। वे, सभी अपने घर लौट गए।

25शकेम, एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में एक नगर था।
यारोबाम ने शकेम को एक सुदृढ़ नगर बनाया और
उसमें रहने लगा। इसके बाद वह पनूएल नगर को
गया और उसे भी सुदृढ़ किया।

26-27यारोबाम ने अपने मन में सोचा, “यदि लोग
यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर को जाते रहे तो वे
दाऊद के परिवार द्वारा शासित होना चाहेंगे। लोग फिर
यहूदा के राजा रहूबियाम का अनुसरण करना आरम्भ
कर देंगे। तब वे मुझे मार डालेंगे।” 28इसलिये राजा ने
अपने सलाहकारों से पूछा कि उसे क्या करना चाहिये?
उन्होंने उसे अपनी सलाह दीं। अत: यारोबाम ने दो
सुनहले बछड़े बनाये। राजा यारोबाम ने लोगों से कहा,
“तुम्हें उपासना करने यरूशलेम नहीं जाना चाहिये।
इस्राएलियों, ये देवता हैं जो तुम्हें मिस्र से बाहर ले आए।”*
29राजा यारोबाम ने एक सुनहले बछड़े को बेतेल* में
रखा। उसने दूसरे सुनहले बछड़े को दान में रखा।
30किन्तु यह बहुत बड़ा पाप था। इस्राएल के लोगों ने
बेतेल और दान नगरों की यात्रा बछड़ों की पूजा करने
के लिये की। किन्तु यह बहुत बड़ा पाप था।

31यारोबाम ने उच्च स्थानों, पर पूजागृह भी बनाए।
उसने इस्राएल के विभिन्न परिवार समूहों से याजक भी
चुने। (उसने केवल लेवी परिवार समूह से याजक नहीं
चुने।) 32और राजा यारोबाम ने एक नया पर्व आरम्भ
किया। यह पर्व यहूदा के “फसहपर्व” की तरह था। किन्तु
यह पर्व आठवें महीनें के पन्द्रहवें दिन था—पहले महीने
के पन्द्रहवें दिन नहीं। उस समय राजा बेतेल नगर की
वेदी पर बलि भेंट करता था और वह बलि उन बछड़ों
को भेंट करता था जिन्हें उसने बनवाया था। राजा
यारोबाम ने बेतेल में उन उच्चस्थानों के लिये याजक भी
चुने, जिन्हें उसने बनाया था। 33इसलिये राजा यारोबाम
ने इस्राएलियों के लिये पर्व के लिये अपना ही समय
चुना। यह आठवें महीने का पन्द्रहवाँ दिन था। उन दिनों
वह उस वेदी पर बलि भेंट करता था और सुगन्धि जलाता
था जिसे उसने बनाया था। यह बेतेल नगर में था।

परमेश्वर बेतेल के विरुद्ध घोषणा करता है

13 यहोवा ने यहूदा के निवासी परमेश्वर के एक
व्यक्ति (नबी) को यहूदा से बेतेल नगर में जाने

मिस्र से बाहर ले आए यह ठीक वही कथन है जो हारून ने तब कहा जब उसने मरुभूमि में सुनहला बछड़ा बनाया। देखें निर्गमन 32:4

बेतेल दान, बेतेल इस्राएल के दक्षिण भाग में यहूदा के पास एक नगर था। दान इस्राएल के उत्तर में था।

का आदेश दिया। राजा यारोबाम उस समय सुगन्धि भेंट करता हुआ वेदी के पास खड़ा था जिस समय परमेश्वर का व्यक्ति (नबी) वहाँ पहुँचा। 2यहोवा ने उस परमेश्वर के व्यक्ति को आदेश दिया था कि तुम वेदी के विरुद्ध बोलना। उसने कहा, "वेदी, यहोवा तुमसे कहता है: 'दाऊद के परिवार में एक पुत्र योशिय्याह नामक उत्पन्न होगा। ये याजक अब उच्च स्थानों पर पूजा कर रहे हैं। किन्तु वेदी, योशिय्याह उन याजकों को तुम पर रखेगा और वह उन्हें मार डालेगा। अब वे याजक तुम पर सुगन्धि जलाते हैं। किन्तु योशिय्याह तुम पर नर–अस्थियाँ जलायेगा। तब तुम्हारा उपयोग दुबारा नहीं हो सकेगा।'"

3परमेश्वर के व्यक्ति ने यह सब घटित होगा, इसका प्रमाण लोगों को दिया। उसने कहा, यहोवा ने जिसके विषय में मुझसे कहा है उसका प्रमाण यह है। यहोवा ने कहा, "यह वेदी दो टुकड़े हो जायेगी और इसकी राख जमीन पर गिर पड़ेगी।"

4राजा यारोबाम ने परमेश्वर के व्यक्ति से बेतेल में वेदी के प्रति दिया सन्देश सुना। उसने वेदी से हाथ खींच लिया और व्यक्ति की ओर संकेत किया। उसने कहा, "इस व्यक्ति को बन्दी बना लो!" किन्तु राजा ने जब यह कहा तो उसके हाथ को लकवा मार गया। वह उसे हिला नहीं सका। 5वेदी के भी टुकड़े–टुकड़े हो गए। उसकी सारी राख जमीन पर गिर पड़ी। यह इसका प्रमाण था कि परमेश्वर के व्यक्ति ने जो कहा वह परमेश्वर की तरफ से था। 6तब राजा यारोबाम ने परमेश्वर के व्यक्ति से कहा, "कृपया यहोवा अपने परमेश्वर से मेरे लिये प्रार्थना करें। यहोवा से याचना करें कि वह मेरी भुजा स्वस्थ कर दे।"

अत: "परमेश्वर के व्यक्ति" ने यहोवा से प्रार्थना की और राजा की भुजा स्वस्थ हो गई। यह वैसी ही हो गई जैसी पहले थी। 7तब राजा ने परमेश्वर के व्यक्ति से कहा, "कृपया मेरे साथ घर चलें। आएं और मेरे साथ भोजन करें मैं आपको एक भेंट दूँगा।"

8किन्तु परमेश्वर के व्यक्ति ने राजा से कहा, "मैं आपके साथ घर नहीं जाऊँगा। यदि आप मुझे अपना आधा राज्य भी दें तो भी मैं नहीं जाऊँगा। मैं इस स्थान पर न कुछ खाऊँगा, न ही कुछ पीऊँगा। 9यहोवा ने मुझे आदेश दिया है कि मैं कुछ न तो खाऊँ न ही पीऊँ। यहोवा ने यह भी आदेश दिया है कि मैं उस मार्ग से यात्रा न करूँ जिसका उपयोग मैंने यहाँ आते समय किया।" 10इसलिये उसने भिन्न सड़क से यात्रा की। उसने उसी सड़क का उपयोग नहीं किया जिसका उपयोग उसने बेतेल को आते समय किया था।

11बेतेल नगर में एक वृद्ध नबी रहता था। उसके पुत्र आए और उन्होंने उसे बताया कि परमेश्वर के व्यक्ति ने बेतेल में क्या किया। उन्होंने अपने पिता से वह भी कहा जो परमेश्वर के व्यक्ति ने राजा यारोबाम से कहा था। 12वृद्ध नबी ने कहा, "जब वह चला तो किस सड़क से गया?" अत: पुत्रों ने अपने पिता को वह सड़क दिखाई जिससे यहूदा से आने वाला परमेश्वर का व्यक्ति गया था। 13वृद्ध नबी ने अपने पुत्रों से अपने गधे पर काठी रखने के लिये कहा। अत: उन्होंने काठी गधे पर डाली। तब नबी अपने गधे पर चल पड़ा।

14वृद्ध नबी परमेश्वर के व्यक्ति के पीछे गया। वृद्ध नबी ने परमेश्वर के व्यक्ति को एक बांजवृक्ष के नीचे बैठे देखा। वृद्ध नबी ने पूछा, "क्या आप वही परमेश्वर के व्यक्ति हैं जो यहूदा से आए हैं?"

परमेश्वर के व्यक्ति ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं ही हूँ।"

15इसलिये वृद्ध नबी ने कहा, "कृपया घर चलें और मेरे साथ भोजन करें।"

16किन्तु परमेश्वर के व्यक्ति ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हारे साथ घर नहीं जा सकता। मैं इस स्थान पर तुम्हारे साथ खा–पी भी नहीं सकता। 17यहोवा ने मुझसे कहा, 'तुम उस स्थान पर कुछ खाना पीना नहीं और तुम्हें उसी सड़क से वापस लौटना भी नहीं है जिससे तुम वहाँ आए।'"

18तब वृद्ध नबी ने कहा, "किन्तु मैं भी तुम्हारी तरह नबी हूँ।" तब वृद्ध नबी ने एक झूठ बोला। उसने कहा, "यहोवा के यहाँ से एक स्वर्गदूत मेरे पास आया। स्वर्गदूत ने मुझसे तुम्हें अपने घर लाने और तुम्हें मेरे साथ भोजन पानी करने की स्वीकृति दी है।"

19इसलिये परमेश्वर का व्यक्ति वृद्ध नबी के घर गया और उसके साथ खाया–पीया। 20जब वे मेज पर बैठे थे, यहोवा ने वृद्ध नबी से कहा।

21और वृद्ध नबी ने यहूदा के निवासी परमेश्वर के व्यक्ति के साथ बातचीत की। उसने कहा, "यहोवा ने कहा, कि तुमने उसकी आज्ञा का पालन नहीं किया। तुमने वह नहीं किया जिसके लिये यहोवा का आदेश था।

22यहोवा ने आदेश दिया था कि तुम्हें इस स्थान पर कुछ भी खाना या पीना नहीं चाहिये। किन्तु तुम वापस लौटे और तुमने खाया पीया। इसलिये तुम्हारा शव तुम्हारे परिवार की कब्रगाह में नहीं दफनाया जाएगा।”

23परमेश्वर के व्यक्ति ने भोजन करना और पीना समाप्त किया। तब वृद्ध नबी ने उसके लिये गधे पर काठी कसी और वह चला गया। 24घर की ओर यात्रा करते समय सड़क पर एक सिंह ने आक्रमण किया और परमेश्वर के व्यक्ति को मार डाला। नबी का शव सड़क पर पड़ा था। गधा और सिंह शव के पास खड़े थे। 25कुछ अन्य व्यक्ति उस सड़क से यात्रा कर रहे थे। उन्होंने शव को देखा और शव के पास सिंह को खड़ा देखा। वे व्यक्ति उस नगर को आए जहाँ नबी रहता था और वहाँ वह बताया जो उन्होंने सड़क पर देखा था।

26वृद्ध नबी ने उस व्यक्ति को धोखा दिया था और उसे वापस ले गया था। उसने जो कुछ हुआ था वह सुना और उसने कहा, “वह परमेश्वर का व्यक्ति है जिसने यहोवा के आदेश का पालन नहीं किया। इसलिये यहोवा ने उसे मारने के लिये एक सिंह भेजा। यहोवा ने कहा कि उसे यह करना चाहिये।” 27तब नबी ने अपने पुत्रों से कहा, “मेरे गधे पर काठी डालो। अत: उसके पुत्रों ने उसके गधे पर काठी डाली। 28वृद्ध नबी गया और उसके शव को सड़क पर पड़ा पाया। गधा और सिंह तब भी उसके पास खड़े थे। सिंह ने शव को नहीं खाया था और गधे को चोट नहीं पहुँचाई थी। 29वृद्ध नबी ने शव को अपने गधे पर रखा। वह शव को वापस ले गया जिससे उसके लिये रो सके और उसे दफना सके। 30वृद्ध नबी ने उसे अपने परिवार की कब्रगाह में दफनाया। वृद्ध नबी उसके लिये रोया। वृद्ध नबी ने कहा, “ऐ मेरे भाई मैं तुम्हारे लिये दु:खी हूँ।” 31इस प्रकार वृद्ध नबी ने शव को दफनाया। तब उसने अपने पुत्रों से कहा, “जब मैं मरुँ तो मुझे इसी कब्र में दफनाना। मेरी अस्थियों को उसकी अस्थियों के समीप रखना। 32जो बातें यहोवा ने उसके द्वारा कहलवाई है वे निश्चित ही सत्य घटित होगी। यहोवा ने उसका उपयोग बेतेल की वेदी और शोमरोन के अन्य नगरों में स्थित उच्च स्थानों के विरुद्ध बोलने के लिये किया।”

33राजा यारोबाम ने अपने को नहीं बदला। वह पाप कर्म करता रहा। वह विभिन्न परिवार समूहों से लोगों को याजक बनने के लिये चुनता रहा। वे याजक उच्च स्थानों पर सेवा करते थे। जो कोई याजक होना चाहता था याजक बन जाने दिया जाता था। 34यही पाप था जो उसके राज्य की बरबादी और विनाश का कारण बना।

यारोबाम का पुत्र मर जाता है

14 उस समय यारोबाम का पुत्र अबिय्याह बहुत बीमार पड़ा। 2यारोबाम ने अपनी पत्नी से कहा, “शीलो जाओ। जाओ और अहिय्याह नबी से मिलो। अहिय्याह वह व्यक्ति है जिसने कहा था कि मैं इस्राएल का राजा बनूँगा। अपने वस्त्र ऐसे पहनों कि कोई न समझे कि तुम मेरी पत्नी हो। 3नबी को दस रोटियाँ, कुछ पुए और शहद का एक घड़ा दो। तब उससे पूछो कि हमारे पुत्र का क्या होगा। अहिय्याह नबी तुम्हें बतायेगा।”

4इसलिये राजा की पत्नी ने वह किया जो उसने कहा। वह शीलो गई। वह अहिय्याह नबी के घर गई। अहिय्याह बहुत बूढ़ा और अन्धा हो गया था। 5किन्तु यहोवा ने उससे कहा, “यारोबाम की पत्नी तुमसे अपने पुत्र के बारे में पूछने के लिये आ रही है। वह बीमार है।” यहोवा ने अहिय्याह को बताया कि उसे क्या कहना चाहिये।

यारोबाम की पत्नी अहिय्याह के घर पहुँची। वह प्रयत्न कर रही थी कि लोग न जाने कि वह कौन है। 6अहिय्याह ने उसके द्वार पर आने की आवाज सुनी। अत: अहिय्याह ने कहा, “यारोबाम की पत्नी, यहाँ आओ। तुम क्यों यह प्रयत्न कर रही हो कि लोग यह समझें कि तुम कोई अन्य हो? मेरे पास तुम्हारे लिये कुछ बुरी सूचनायें हैं। 7वापस लौटो और यारोबाम से कहो कि यहोवा इस्राएल का परमेश्वर, जो कहता है, वह यह है। यहोवा कहता है, ‘यारोबाम, इस्राएल के सभी लोगों में से मैंने तुम्हें चुना। मैंने तुम्हें अपने लोगों का शासक बनाया। 8दाऊद के परिवार ने इस्राएल पर शासन किया किन्तु मैंने उनसे राज्य ले लिये और उसे तुमको दे दिया। किन्तु तुम मेरे सेवक दाऊद के समान नहीं हो। उसने मेरे आदेशों का सदा पालन किया। उसने पूरे हृदय से मेरा अनुसरण किया। उसने वे ही काम किये जिन्हें मैंने स्वीकार किया। 9किन्तु तुमने बहुत से भीषण पाप किये हैं। तुम्हारे पाप उन सभी के पापों से अधिक हैं जिन्होंने तुमसे पहले शासन किया। तुमने मेरा अनुसरण करना बन्द कर दिया है। तुमने मूर्तियाँ और अन्य देवता बनाये। इसने मुझे बहुत क्रोधित किया। इससे मैं बहुत क्रुद्ध हुआ हूँ। 10अत:

यारोबाम, मैं तुम्हारे परिवार पर विपत्ति लाऊँगा। मैं
तुम्हारे परिवार के सभी पुरुषों को मार डालूँगा। मैं
तुम्हारे परिवार को पूरी तरह वैसे ही नष्ट कर डालूँगा
जैसे आग उपलों को नष्ट करती है। 11तुम्हारे परिवार
का जो कोई नगर में मरेगा उसे कुत्ते खायेंगे और
तुम्हारे परिवार का जो कोई व्यक्ति मैदान में मरेगा
उसे पक्षी खायेंगे। यहोवा ने यह कहा है।'"

12तब अहिय्याह नबी यारोबाम की पत्नी से बात करता
रहा। उसने कहा, "अब तुम घर जाओ। जैसे ही तुम
अपने नगर में प्रवेश करोगी तुम्हारा पुत्र मरेगा। 13सारा
इस्राएल उसके लिये रोएगा और उसे दफनाएगा। मात्र
तुम्हारा पुत्र ही यारोबाम के परिवार में ऐसा होगा जिसे
दफनाया जाएगा। इसका कारण यह है कि यारोबाम के
परिवार में केवल वही ऐसा व्यक्ति है जिसने यहोवा, इस्राएल
के परमेश्वर को प्रसन्न किया है। 14यहोवा इस्राएल का
एक नया राजा बनायेगा। वह नया राजा यारोबाम के
परिवार को नष्ट करेगा। यह बहुत शीघ्र होगा। 15तब
यहोवा इस्राएल को चोट पहुँचायेगा। इस्राएल के लोग
बहुत डर जायेंगे–वे जल की लम्बी घास की तरह काँपेंगे।
यहोवा इस्राएलियों को इस अच्छे प्रदेश से उखाड़ देगा।
यह वही भूमि है जिसे उसने उनके पूर्वजों को दिया था।
वह उनको फरात नदी की दूसरी ओर बिखेर देगा। यह
होगा, क्योंकि यहोवा लोगों पर क्रोधित है। लोगों ने उसको
तब क्रोधित किया जब उन्होंने अशेरा की पूजा के लिये
विशेष स्तम्भ खड़े किये। 16यारोबाम ने पाप किया और
तब यारोबाम ने इस्राएल के लोगों से पाप करवाया। अत:
यहोवा इस्राएल के लोगों को पराजित होने देगा।"

17यारोबाम की पत्नी तिरजा को लौट गई। ज्यों ही वह
घर में घुसी, लड़का मर गया। 18पूरे इस्राएल ने उसको
दफनाया और उसके लिये वे रोये। यह ठीक वैसे ही हुआ
जैसा यहोवा ने होने को कहा था। यहोवा ने अपने सेवक
अहिय्याह नबी का उपयोग ये बातें कहने के लिये किया।

19राजा यारोबाम ने अन्य बहुत से काम किये। उसने
युद्ध किये और लोगों पर शासन करता रहा। उसने
जो कुछ किया वह सब "इस्राएल के राजाओं के
इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा हुआ है। 20यारोबाम
ने बाईस वर्ष तक राजा के रूप में शासन किया। तब
वह मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया।
उसका पुत्र नादाब उसके बाद नया राजा हुआ।

21उस समय जब सुलैमान का लड़का रहूबियाम यहूदा
का राजा बना, वह इकतालीस वर्ष का था। रहूबियाम
ने यरूशलेम नगर में सत्रह वर्ष तक शासन किया। यह
वही नगर है जिसमें यहोवा ने सम्मानित होना चुना।
उसने इस्राएल के अन्य सभी नगरों में से इस नगर को
चुना। रहूबियाम की नामा नामक माँ अम्मोन की थी।

22यहूदा के लोगों ने भी पाप किये और उन कामों को
किया जिन्हें यहोवा ने बुरा कहा था। लोगों ने अपने ऊपर
यहोवा को क्रोधित करने के लिये और अधिक बुरे काम
किये। वे लोग अपने उन पूर्वजों से भी बुरे थे जो उनके
पहले वहाँ रहते थे। 23लोगों ने उच्च स्थान, पत्थर के
स्मारक और पवित्र स्तम्भ बनाए। उन्होंने उन्हें हर एक
ऊँचे पहाड़ पर एवं प्रत्येक पेड़ के नीचे बनाये।

24ऐसे भी लोग थे जिन्होंने अपने तन को शारीरिक
सम्बन्धों के लिये बेचकर अन्य देवताओं की सेवा की।*
इस प्रकार यहूदा के लोगों ने अनेक बुरे काम किये। जो
लोग उस देश में उनसे पहले रहते थे उन्होंने भी वे ही
पापपूर्ण काम किये थे और परमेश्वर ने उन लोगों से वह
देश ले लिया था और इस्राएल के लोगों को दे दिया था।

25रहूबियाम के राज्य काल के पाँचवें वर्ष मिस्र का
राजा शीशक यरूशलेम के विरुद्ध लड़ा। 26शीशक ने
यहोवा के मन्दिर और राजा के महल से खजाने ले
लिये। उसने उन सुनहली ढालों को भी ले लिया जिन्हें
दाऊद ने अराम के राजा हददजर के अधिकारियों से
लिया था। दाऊद इन ढालों को यरूशलेम ले गया था।
किन्तु शीशक ने सभी सुनहली ढालें ले लीं। 27अत:
राजा रहूबियाम ने उनके स्थान पर रखने के लिये
अनेक ढालें बनवाई। किन्तु ये ढालें काँसे की थीं, सोने
की नहीं। उसने ये ढालें उन पुरुषों को दीं जो महल के
द्वारों की रक्षा करते थे। 28जब कभी राजा यहोवा के
मन्दिर को जाता था, द्वाररक्षक उसके साथ हर बार
जाते थे। वे ढालें ले जाते थे। जब वे काम पूरा कर लेते
थे तब वे रक्षक कक्ष में ढालों को लटका देते थे।

29राजा रहूबियाम ने जो कुछ किया वह सब, "यहूदा
के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा
हुआ है। 30रहूबियाम और यारोबाम सदैव एक दूसरे
के विरुद्ध युद्ध करते रहे।

ऐसे ... सेवा की इस प्रकार के शारीरिक सम्बन्धो के पाप
कनानी देवताओं की पूजा–पद्धति के अंग थे।

31रहूबियाम मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया
गया। उसे उसके पूर्वजों के साथ दाऊद नगर में दफनाया
गया। (उसकी माँ नामा, अम्मोन की थी।) रहूबियाम
का पुत्र अबिय्याम उसके बाद नया राजा बना।

यहूदा का राजा अबिय्याम

15 नाबात का पुत्र यारोबाम इस्राएल पर शासन
कर रहा था। यारोबाम के राज्यकाल के
अट्ठारहवें वर्ष, अबिय्याम यहूदा का नया राजा बना।
2अबिय्याम ने तीन वर्ष तक शासन किया। उसकी
माँ का नाम माका था। वह अबशालोम की पुत्री थी।
3उसने वे सभी पाप किये जो उसके पिता ने उसके
पहले किये थे। अबिय्याम अपने पितामह दाऊद की तरह
यहोवा, अपने परमेश्वर का भक्त नहीं था। 4यहोवा दाऊद
से प्रेम करता था। अत: उसी के लिये यहोवा ने अबिय्याम
को यरूशलेम में राज्य दिया और यहोवा ने उसे एक पुत्र
दिया। यहोवा ने यरूशलेम को सुरक्षित भी रहने दिया।
यह उसने दाऊद के लिये किया। 5दाऊद ने सदैव ही
उचित काम किये जिन्हें यहोवा चाहता था। उसने सदैव
यहोवा के आदेशों का पालन किया था। केवल एक
बार दाऊद ने यहोवा का आदेश नहीं माना था जब दाऊद
ने हित्ती ऊरिय्याह के विरुद्ध पाप किया था।
6रहूबियाम और यारोबाम हमेशा एक दूसरे के विरुद्ध
युद्ध लड़ते रहे। 7जो कुछ अन्य काम अबिय्याम ने किये
वह "यहूदा के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में
लिखा है। उस सारे समय में जब अबिय्याम राजा था,
यारोबाम और अबिय्याम के बीच युद्ध चलता रहा। 8जब
अबिय्याम मरा तो उसे दाऊद–नगर में दफनाया गया।
अबिय्याम का पुत्र "आसा" उसके बाद नया राजा हुआ।

यहूदा का राजा आसा

9इस्राएल के ऊपर यारोबाम के राजा के रूप में
शासन करने के बीसवें वर्ष में आसा यहूदा का राजा
बना। 10आसा ने यरूशलेम में इकतालीस वर्ष तक
शासन किया। उसकी पितामही का नाम माका था
और माका अबशालोम की पुत्री थी।
11आसा ने अपने पूर्वज दाऊद की तरह उन कामों को
किया जिन्हें यहोवा ने उचित कहा। 12उन दिनों ऐसे लोग
थे जो अपने तन को शारीरिक सम्बन्ध के लिये बेचकर
अन्य देवताओं की सेवा करते थे। आसा ने उन लोगों
को देश छोड़ने के लिये विवश किया। आसा ने उन
देव मूर्तियों को भी दूर किया जो उसके पूर्वजों ने
बनाई थी। 13आसा ने अपनी पितामही माका को रानी
पद से हटा दिया। माका ने देवी अशेरा की उन भंयकर
मूर्तियों में से एक को बनाया था। उसने इस भंयकर
मूर्ति को काट डाला। उसने उसे किद्रोन की घाटी में
जलाया। 14आसा ने उच्च स्थानों को नष्ट नहीं किया,
किन्तु वह पूरे जीवन भर यहोवा का भक्त रहा। 15आसा
के पिता ने कुछ चीजें परमेश्वर को दी थीं। आसा ने
भी परमेश्वर को कुछ भेंटे चढ़ाई थीं। उन्होंने, सोने
चाँदी और अन्य चीजों की भेंटे दीं। आसा ने उन सभी
चीजों को मन्दिर में जमा कर दिया।
16जब तक राजा आसा यहूदा का राजा था, वह सदैव
इस्राएल के राजा बाशा के विरुद्ध युद्ध करता रहा। 17बाशा
यहूदा के विरुद्ध लड़ता रहा। बाशा लोगों को, आसा के
देश यहूदा से आने अथवा जाने से रोकना चाहता था।
अत: उसने रामा नगर को बहुत सुदृढ़ बना दिया। 18अत:
आसा ने यहोवा के मन्दिर और राजमहल के खजानों से
सोना और चाँदी निकाला। उसने यह सोना–चाँदी अपने
सेवकों को दिया और उन्हें अराम के राजा बेन्हदद के
पास भेजा। बेन्हदद हेज्योन के पुत्र तब्रिम्मोन का पुत्र था।
उसने दमिश्क नगर में शासन किया। 19आसा ने यह
सन्देश भेजा, "मेरे पिता और तुम्हारे पिता के मध्य एक
शान्ति–सन्धि थी। अब मैं तुम्हारे और अपने बीच एक
शान्ति–सन्धि करना चाहता हूँ। मैं तुम्हारे पास सोना–चाँदी
की भेंट भेज रहा हूँ। इस्राएल के राजा बाशा के साथ
अपनी सन्धि तोड़ दो। तब बाशा मेरे देश को छोड़ देगा।"
20राजा बेन्हदद ने आसा के सन्देश को स्वीकार किया।
अत: उसने इस्राएल के नगरों के विरुद्ध लड़ने के लिये
अपनी सेना भेजी। बेन्हदद ने इय्योन, दान, आबेल्बेत्माका
और गलीली झील के चारों ओर के नगरों को पराजित
किया। उसने सारे नप्ताली क्षेत्र को हराया। 21बाशा ने
इन आक्रमणों के बारे में सुना। इसलिये उसने रामा को
दृढ़ बनाना बन्द कर दिया। उसने उस नगर को छोड़
दिया और तिर्सा को लौट गया। 22तब राजा आसा ने
यहूदा के सभी लोगों को आदेश दिया कि हर एक व्यक्ति
को सहायता देनी होगी। वे रामा को गए और उन्होंने उन
पत्थरों और लकड़ियों को उठा लिया जिनका उपयोग

बाशा नगर को दृढ़ बनाने के लिये कर रहा था। वे
उन चीजों को बिन्यामीन प्रदेश में गेबा और मिस्पा
को ले गए। तब आसा ने उन दोनों नगरों को बहुत
अधिक दृढ़ बनाया।

23आसा के बारे में अन्य बातें, व महान कार्य जो उसने
किये और नगर जिन्हें उसने बनाया वह,"यहूदा के राजाओं
के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा है। जब आसा बूढ़ा
हुआ तो उसके पैर में एक रोग उत्पन्न हुआ। 24आसा मरा
और उसे उसके पूर्वज दाऊद के नगर में दफनाया गया।
तब आसा का पुत्र यहोशापात उसके बाद नया राजा बना।

इस्राएल का राजा नादाब

25यहूदा पर आसा के राज्य काल के दूसरे वर्ष में
यारोबाम का पुत्र नादाब इस्राएल का राजा हुआ। नादाब
ने इस्राएल पर दो वर्ष तक शासन किया। 26नादाब ने
यहोवा के विरुद्ध बुरे काम किये। उसने वैसे ही पाप
किये जैसे उसके पिता यारोबाम ने किये थे और
यारोबाम ने इस्राएल के लोगों से भी पाप कराये थे।

27बाशा अहिय्याह का पुत्र था। वे इस्साकार के
परिवार समूह से थे। बाशा ने राजा नादाब को मार
डालने की एक योजना बनाई। यह वह समय था जब
नादाब और सारा इस्राएल गिब्बतोन नगर के विरुद्ध
युद्ध में लड़ रहे थे। यह एक पलिश्ती नगर था। उस
स्थान पर बाशा ने नादाब को मार डाला। 28यह यहूदा
पर आसा के राज्यकाल के तीसरे वर्ष में हुआ और
बाशा इस्राएल का अगला राजा बना।

इस्राएल का राजा बाशा

29जब बाशा नया राजा हुआ तो उसने यारोबाम के
परिवार के हर एक व्यक्ति को मार डाला। बाशा ने
यारोबाम के परिवार में किसी व्यक्ति को जीवित नहीं
छोड़ा। यह वैसे ही हुआ जैसा होने के लिये यहोवा ने
कहा था। यहोवा ने शीलो के अपने सेवक अहिय्याह
द्वारा यह कहा था। 30यह हुआ, क्योंकि यारोबाम ने
अनेक पाप किये थे और यारोबाम ने इस्राएल के लोगों
से अनेक पाप कराये थे। यारोबाम ने यहोवा इस्राएल
के परमेश्वर को बहुत क्रोधित कर दिया था।

31नादाब ने जो अन्य काम किये वे "इस्राएल के राजाओं
के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा हुआ है। 32पूरे
समय, जब तक बाशा इस्राएल का शासक था, वह
यहूदा के राजा आसा के विरुद्ध युद्ध में लड़ता रहा।

33अहिय्याह का पुत्र बाशा, यहूदा पर आसा के राज्य
काल के तीसरे वर्ष में इस्राएल का राजा हुआ था। बाशा
तिर्सा में चौबीस वर्ष तक राजा रहा। 34किन्तु बाशा ने वे
कार्य किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। उसने वे ही
पाप किये जो उसके पूर्वज यारोबाम ने किये थे। यारोबाम
ने इस्राएल के लोगों से पाप कराये थे।

16 तब यहोवा ने हनान के पुत्र येहू से बातें की।
यहोवा राजा बाशा के विरुद्ध बातें कह रहा
था। 2"मैंने तुमको एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बनाया। मैंने
तुमको अपने इस्राएल के लोगों के ऊपर राजा बनाया।
किन्तु तुमने यारोबाम का अनुसरण किया है। तुमने
मेरे लोगों, इस्राएलियों से पाप कराया है। उन्होंने अपने
पापों से मुझे क्रोधित किया है। 3इसलिये बाशा, मैं तुझे
और तुम्हारे परिवार को नष्ट करूँगा। मैं तुम्हारे साथ
वही करूँगा जो मैंने नबात के पुत्र यारोबाम के परिवार
के साथ किया। 4तुम्हारे परिवार के लोग नगर की
सड़कों पर मरेंगे और उनके शवों को कुत्ते खायेंगे।
तुम्हारे परिवार के कुछ लोग मैदानों में मरेंगे और
उनके शवों को पक्षी खायेंगे।"

5बाशा के विषय में अन्य बातें और जो महान कार्य
उसने किये सभी "इस्राएल के राजाओं के इतिहास"
नामक पुस्तक में लिखा है। 6बाशा मरा और तिर्सा में
दफनाया गया। उसका पुत्र एला उसके बाद नया राजा
बना।

7अत: यहोवा ने येहू नबी को एक सन्देश दिया। यह
सन्देश बाशा और उसके परिवार के विरुद्ध था। बाशा ने
यहोवा के विरुद्ध बुरे कर्म किये थे। इससे यहोवा अत्यन्त
क्रोधित हुआ। बाशा ने वही किया जो यारोबाम के परिवार
ने उससे पहले किया था। यहोवा इसलिये भी क्रोधित था
कि बाशा ने यारोबाम के पूरे परिवार को मार डाला था।

इस्राएल का राजा एला

8यहूदा पर आसा के राज्य काल के छब्बीसवें वर्ष
में एला राजा हुआ। एला बाशा का पुत्र था। उसने
तिर्सा में दो वर्ष तक शासन किया।

9राजा एला के अधिकारियों में से जिम्री एक था।
जिम्री एला के आधे रथों को आदेश देता था। किन्तु जिम्री

ने एला के विरुद्ध योजना बनाई। राजा एला तिर्सा में था। वह अर्सा के घर में दाखमधु पी रहा था और मत्त हो रहा था। अर्सा, तिर्सा के महल का अधिकारी था। [10]जिम्री उस घर में गया और उसने राजा एला को मार डाला। यहूदा पर आसा के राज्य काल के सत्ताईसवें वर्ष में यह हुआ। तब एला के बाद इस्राएल का नया राजा जिम्री हुआ।

इस्राएल का राजा जिम्री

[11]जब जिम्री राजा हुआ तो उसने बाशा के पूरे परिवार को मार डाला। उसने बाशा के परिवार में किसी व्यक्ति को जीवित नहीं रहने दिया। जिम्री ने बाशा के मित्रों को भी मार डाला। [12]इस प्रकार जिम्री ने बाशा के परिवार को नष्ट किया। यह वैसे ही हुआ जैसा यहोवा ने, येहू नबी का उपयोग बाशा के विरुद्ध कहने को कहा था। [13]यह, बाशा और उसके पुत्र एला के, सभी पापों के कारण हुआ। उन्होंने पाप किया था और इस्राएल के लोगों से पाप कराया था। यहोवा क्रोधित था क्योंकि उन्होंने बहुत सी देवमूर्तियाँ रखी थीं।

[14]"इस्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में ये अन्य सभी बातें लिखी हैं जो एला ने कीं।

[15]यहूदा पर आसा के राज्य काल के सत्ताईसवें वर्ष में जिम्री इस्राएल का राजा बना। जिम्री ने तिर्सा में सात दिन शासन किया। जो कुछ हुआ, यह है: इस्राएल की सेना गिब्बतोन के पलिश्तियों के समीप डेरा डाले पड़ी थी। वे युद्ध के लिये तैयार थे। [16]पड़ाव में स्थित लोगों ने सुना कि जिम्री ने राजा के विरुद्ध गुप्त षड़यन्त्र रचा है।उन्होंने सुना कि उसने राजा को मार डाला। इसलिये सारे इस्राएल ने डेरे में, उस दिन ओम्री को इस्राएल का राजा बनाया। ओम्री सेनापति था। [17]इसलिये ओम्री और सारे इस्राएल ने गिब्बतोन को छोड़ा और तिर्सा पर आक्रमण कर दिया। [18]जिम्री ने देखा कि नगर पर अधिकार कर लिया गया है। अत: वह महल के भीतर चला गया और उसने आग लगानी आरम्भ कर दी। उसने महल और अपने को जला दिया। [19]इस प्रकार जिम्री मरा क्योंकि उसने पाप किया था। जिम्री ने उन कामों को किया जिन्हें यहोवा ने बुरा कहा था। उसने वैसे ही पाप किये जैसे यारोबाम ने किये थे और यारोबाम ने इस्राएल के लोगों से पाप कराया था।

[20]"इस्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में जिम्री के गुप्त षड़यन्त्र और अन्य बातें लिखी हैं और जब जिम्री राजा एला के विरुद्ध हुआ, उस समय की घटनायें भी उसमें लिखी हैं।

इस्राएल का राजा ओम्री

[21]इस्राएली लोग दो दलों में बँट गये थे। आधे लोग गीनत के पुत्र तिब्नी का अनुसरण करते थे और उसे राजा बनाना चाहते थे। अन्य आधे लोग ओम्री के अनुयायी थे। [22]किन्तु ओम्री के अनुयायी गीनत के पुत्र तिब्नी के अनुयायियों से अधिक शक्तिशाली थे। अत: तिब्नी मारा गया और ओम्री राजा हुआ।

[23]यहूदा पर आसा के राज्यकाल के इकतीसवें वर्ष में ओम्री इस्राएल का राजा हुआ। ओम्री ने इस्राएल पर बारह वर्ष तक शासन किया। उन वर्षों में से छ: वर्षों तक उसने तिर्सा नगर में शासन किया। [24]किन्तु ओम्री ने शोमरोन की पहाड़ी को खरीद लिया। उसने इसे लगभग डेढ़ सौ पौंड चाँदी शमेर से खरीदा। ओम्री ने उस पहाड़ी पर एक नगर बसाया। उसने इसके स्वामी शमेर के नाम पर इस नगर का नाम शोमरोन रखा।

[25]ओम्री ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा घोषित किया था। ओम्री उन सभी राजाओं से बुरा था जो उसके पहले हो चुके थे। [26]उसने वे ही पाप किये जो नबात के पुत्र यारोबाम ने किये थे। यारोबाम ने इस्राएल के लोगों से पाप कराया था। इसलिये उन्होंने यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर को बहुत क्रोधित कर दिया था। यहोवा क्रोधित था, क्योंकि वे निरर्थक देवमूर्तियों की पूजा करते थे।

[27]"इस्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में ओम्री के विषय में अन्य बातें और उसके किये महान कार्य लिखे गए हैं। [28]ओम्री मरा और शोमरोन में दफनाया गया। उसका पुत्र अहाब उसके बाद नया राजा बना।

इस्राएल का राजा अहाब

[29]यहूदा पर आसा के राज्य काल के अड़तीसवें वर्ष में ओम्री का पुत्र अहाब इस्राएल का राजा बना। [30]अहाब ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था और अहाब उन सभी राजाओं से भी बुरा था जो उसके पहले हुए थे। [31]अहाब के लिये इतना ही काफी नहीं था कि वह वैसे ही पाप करे जैसे नबात के पुत्र यारोबाम ने किये थे।

अत: अहाब ने एतबाल की पुत्री ईजेबेल से विवाह
किया। एतबाल सीदोन के लोगों का राजा था। तब
अहाब ने बाल की सेवा और पूजा करनी आरम्भ
की। 32अहाब ने बाल की पूजा करने के लिये शोमरोन
में पूजागृह बनाया। उसने पूजागृह में एक वेदी रखी।
33अहाब ने अशेरा की पूजा के लिये एक विशेष
स्तम्भ भी खड़ा किया। अहाब ने यहोवा, इस्राएल के
परमेश्वर को क्रोधित करने वाले बहुत से काम, उन
सभी राजाओं से अधिक किये, जो उसके पहले थे।
34अहाब के राज्य काल में बेतेल के हीएल ने यरीहो
नगर को दुबारा बनाया। जिस समय हीएल ने नगर बनाने
का काम आरम्भ किया, उसका बड़ा पुत्र अबीराम मर
गया और जब हीएल ने नगर द्वार बनाये, उसका सबसे
छोटा पुत्र सगूब मर गया। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा
यहोवा ने नून के पुत्र यहोशू से बातें करते हुए कहा था।*

एलिय्याह और अनावृष्टि का समय

17 एलिय्याह गिलाद में तिशबी नगर का एक नबी
था। एलिय्याह ने राजा अहाब से कहा, "मैं
यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर की सेवा करता हूँ। उसकी
शक्ति के बल पर मैं भविष्यवाणी करता हूँ कि अगले
कुछ वर्षों में न तो ओस गिरेगी, और न ही वर्षा होगी।
वर्षा तभी होगी जब मैं उसके होने का आदेश दूँगा।"
2तब यहोवा ने एलिय्याह से कहा, 3"इस स्थान को
छोड़ दो और पूर्व की ओर चले जाओ। करीत नाले
के पास छिप जाओ। यह नाला यरदन नदी के पूर्व में
है। 4तुम नाले से पानी पी सकते हो। मैंने कौवों को
आदेश दिया है कि वे तुमको उस स्थान पर भोजन
पहुँचायेंगे।" 5अत: एलिय्याह ने वही किया जो यहोवा
ने करने को कहा। वह यरदन नदी के पूर्व करीत
नाले के समीप रहने चला गया। 6हर एक प्रात: और
सन्ध्या को कौवे एलिय्याह के लिये भोजन लाते थे।
एलिय्याह नाले से पानी पीता था।
7वर्षा नहीं हुई अत: कुछ समय उपरान्त नाला सूख
गया। 8तब यहोवा ने एलिय्याह से कहा, 9"सीदोन में
सारपत को जाओ। वहीं रहो। उस स्थान पर एक विधवा
स्त्री रहती है। मैंने उसे तुम्हें भोजन देने का आदेश
दिया है।"
10अत: एलिय्याह सारपत पहुँचा। वह नगर–द्वार पर
पहुँचा और उसने एक स्त्री को देखा। उसका पति मर
चुका था। वह स्त्री ईंधन के लिये लकड़ियाँ इकट्ठी
कर रही थी। एलिय्याह ने उससे कहा, "क्या तुम एक
प्याले में थोड़ा पानी दोगी जिसे मैं पी सकूँ?" 11वह स्त्री
उसके लिये पानी लाने जा रही थी, तो एलिय्याह ने कहा,
"कृपया मेरे लिये एक रोटी का छोटा टुकड़ा भी लाओ।"
12उस स्त्री ने उत्तर दिया, "मैं यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर
की शपथ खाकर कहती हूँ कि मेरे पास रोटी नहीं है।
मेरे पास बर्तन में मुट्ठी भर आटा और पीपे में थोड़ा सा
जैतून का तेल है। इस स्थान पर मैं ईंधन के लिये दो चार
लकड़ियाँ इकट्ठी करने आई थी। मैं इसे लेकर घर
लौटूँगी और अपना आखिरी भोजन पकाऊँगी। मैं और
मेरा पुत्र दोनों इसे खायेंगे और तब भूख से मर जाएंगे।"
13एलिय्याह ने स्त्री से कहा, "परेशान मत हो। घर
लौटो और जैसा तुमने कहा, अपना भोजन पकाओ।
किन्तु तुम्हारे पास जो आटा है उसकी पहले एक छोटी
रोटी बनाना। उस रोटी को मेरे पास लाना। तब अपने
और अपने पुत्र के लिये पकाना। 14इस्राएल का परमेश्वर,
यहोवा कहता है, 'उस आटे का बर्तन कभी खाली नहीं
होगा। पीपे में तेल सदैव रहेगा। ऐसा तब तक होता रहेगा
जिस दिन तक यहोवा इस भूमि पर पानी नहीं बरसाता।'"
15अत: वह स्त्री अपने घर लौटी। उसने वही किया
जो एलिय्याह ने उससे करने को कहा था। एलिय्याह,
वह स्त्री और उसका पुत्र बहुत दिनों तक पर्याप्त भोजन
पाते रहे। 16आटे का बर्तन और तेल का पीपा दोनों कभी
खाली नहीं हुआ। यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने होने
को कहा था। यहोवा ने एलिय्याह के द्वारा बातें की थीं।
17कुछ समय बाद उस स्त्री का लड़का बीमार पड़ा।
वह अधिक, और अधिक बीमार होता गया। अन्त में
लड़के ने साँस लेना बन्द कर दिया। 18और उस स्त्री ने
एलिय्याह से कहा, "तुम परमेश्वर के व्यक्ति हो। क्या
तुम मुझे सहायता दे सकते हो? या क्या तुम मुझे सारे
पापों को केवल याद कराने के लिये यहाँ आये हो?
क्या तुम यहाँ मेरे पुत्र को केवल मरवाने आये थे?"
19एलिय्याह ने उससे कहा, "अपना पुत्र मुझे दो।"
एलिय्याह ने उसके लड़के को उससे लिया और सीढ़ियों

जैसे यहोवा ने ... कहा था जिस समय यहोशू ने यरीहो को नष्ट किया उसने कहा था कि जो कोई इस नगर को दुबारा बनायेगा वह अपने जेठे और छोटे पुत्र से हाथ धोएगा।

से ऊपर ले गया। उसने उसे उस कमरे में बिछौने पर लिटाया जिसमें वह रुका हुआ था। 20तब एलिय्याह ने प्रार्थना की, “हे यहोवा, मेरे परमेश्वर, यह विधवा मुझे अपने घर में ठहरा रही है। क्या तू उसके साथ यह बुरा काम करेगा? क्या तू उसके पुत्र को मरने देगा?” 21तब एलिय्याह लड़के के ऊपर तीन बार लेटा। एलिय्याह ने प्रार्थना की, “हे यहोवा, मेरे परमेश्वर! इस लड़के को पुनर्जीवित कर।”

22“यहोवा ने एलिय्याह की प्रार्थना स्वीकार की। लड़का पुन: साँस लेने लगा। वह जीवित हो गया। 23एलिय्याह बच्चे को सीढ़ियों से नीचे ले गया। एलिय्याह ने उस लड़के को उसकी माँ को दिया और कहा, “देखो, तुम्हारा पुत्र जी उठा।”

24उस स्त्री ने उत्तर दिया, “अब मुझे विश्वास हो गया कि तुम सच में परमेश्वर के यहाँ के व्यक्ति हो। मैं समझ गई हूँ कि सचमुच में यहोवा तुम्हारे माध्यम से बोलता है।”

एलिय्याह और बाल के नबी

18 अनावृष्टि के तीसरे वर्ष यहोवा ने एलिय्याह से कहा, “जाओ, और राजा अहाब से मिलो। मैं शीघ्र ही वर्षा भेजूँगा।” 2अत: एलिय्याह अहाब के पास गया।

उस समय शोमरोन में भोजन नहीं रह गया था। 3इसलिये राजा अहाब ने ओबद्याह से अपने पास आने को कहा। ओबद्याह राज महल का अधिकारी था। (ओबद्याह यहोवा का सच्चा अनुयायी था। 4एक बार ईज़ेबेल यहोवा के सभी नबियों को जान से मार रही थी। इसलिये ओबद्याह ने सौ नबियों को लिया और उन्हें दो गुफाओं में छिपाया। ओबद्याह ने एक गुफा में पचास नबी और दूसरी गुफा में पचास नबी रखे। तब ओबद्याह उनके लिये पानी और भोजन लाया।) 5राजा अहाब ने ओबद्याह से कहा, “मेरे साथ आओ। हम लोग इस प्रदेश के हर एक सोते और नाले की खोज करेंगे। हम लोग पता लगायेंगे कि क्या हम अपने घोड़ों और खच्चरों को जीवित रखने के लिये पर्याप्त घास कहीं पा सकते हैं। तब हमें अपना कोई जानवर खोना नहीं पड़ेगा।” 6हर एक व्यक्ति ने देश का एक भाग चुना जहाँ वे पानी की खोज कर सकें। तब दोनों व्यक्ति पूरे देश में घूमें। अहाब एक दिशा में अकेले गया। ओबद्याह दूसरी दिशा में अकेले गया। 7जब ओबद्याह यात्रा कर रहा था तो उस समय वह एलिय्याह से मिला। ओबद्याह ने जब उसे देखा एलिय्याह को पहचान लिया। ओबद्याह एलिय्याह के सामने प्रणाम करने झुका उसने कहा, “एलिय्याह! क्या स्वामी सचमुच आप हैं?”

8एलिय्याह ने उत्तर दिया, “हाँ, मैं ही हूँ। जाओ और अपने स्वामी राजा से कहो कि मैं यहाँ हूँ।”

9तब ओबद्याह ने कहा, “यदि मैं अहाब से कहूँगा कि मैं जानता हूँ कि तुम कहाँ हो, तो वह मुझे मार डालेगा! मैंने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा है। तुम क्यों चाहते हो कि मैं मर जाऊँ? 10यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर की सत्ता जैसे निश्चित है, वैसे ही यह निश्चित है, कि राजा तुम्हारी खोज कर रहा है। उसने हर एक देश में तुम्हारा पता लगाने के लिये आदमी भेज रखे हैं। यदि किसी देश के राजा ने यह कहा कि तुम उसके देश में नहीं हो, तो अहाब ने उसे यह शपथ खाने को विवश किया कि तुम उसके देश में नहीं हो। 11अब तुम चाहते हो कि मैं जाऊँ और उससे कहूँ कि तुम यहाँ हो? 12यदि मैं जाऊँ और राजा अहाब से कहूँ कि तुम यहाँ हो तो यहोवा तुम्हें किसी अन्य स्थान पर पहुँचा सकता है। राजा अहाब यहाँ आयेगा और वह तुम्हें नहीं पा सकेगा। तब वह मुझे मार डालेगा। मैंने यहोवा का अनुसरण तब से किया है जब मैं एक बालक था। 13तुमने सुना है कि मैंने क्या किया था। ईज़ेबेल यहोवा के नबियों को मार रही थी और मैंने सौ नबियों को गुफाओं में छिपाया था। मैंने एक गुफा में पचास नबियों और दूसरी गुफा में पचास नबियों को रखा था। मैं उनके लिये अन्न–पानी लाया। 14अब तुम चाहते हो कि मैं जाऊँ और राजा से कहूँ कि तुम यहाँ हो। राजा मुझे मार डालेगा।”

15एलिय्याह ने उत्तर दिया, “जितनी सर्वशक्तिमान यहोवा की सत्ता निश्चित है उतना ही निश्चित यह है कि मैं आज राजा के सामने खड़ा होऊँगा।”

16इसलिये ओबद्याह राजा अहाब के पास गया। उसने बताया कि एलिय्याह वहाँ है। राजा अहाब एलिय्याह से मिलने गया।

17जब अहाब ने एलिय्याह को देखा तो उसने पूछा, “क्या एलिय्याह तुम्हीं हो? तुम्हीं वह व्यक्ति हो जो इस्राएल पर विपत्ति लाते हो।”

18एलिय्याह ने उत्तर दिया, “मैंने इस्राएल पर विपत्ति नहीं ढाई। तुमने और तुम्हारे पिता के परिवार ने यह सारी

विपत्ति ढाई है। तुमने विपत्ति लानी तब आरम्भ की जब तुमने यहोवा के आदेशों का पालन करना बन्द कर दिया और असत्य देवताओं का अनुसरण आरम्भ किया। [19]अब सारे इस्राएलियों को कर्म्मेल पर्वत पर मुझसे मिलने को कहो। उस स्थान पर बाल के चार सौ पचास नबियों को भी लाओ और असत्य देवी अशेरा के चार सौ नबियों को लाओ। रानी* ईज़ेबेल उन नबियों का समर्थन करती है।"

[20]अत: अहाब ने सभी इस्राएलियों और उन नबियों को कर्म्मेल पर्वत पर बुलाया। [21]एलिय्याह सभी लोगों के पास आया। उसने कहा, "आप लोग कब निर्णय करेंगे कि आपको किसका अनुसरण करना है? यदि यहोवा सच्चा परमेश्वर है तो आप लोगों को उसका अनुयायी होना चाहिये। किन्तु यदि बाल सत्य परमेश्वर है तो तुम्हें उसका अनुयायी होना चाहिये।"

लोगों ने कुछ भी नहीं कहा। [22]अत: एलिय्याह ने कहा, "मैं यहाँ यहोवा का एकमात्र नबी हूँ। मैं अकेला हूँ। किन्तु यहाँ बाल के चार सौ पचास नबी हैं। [23]इसलिये दो बैल लाओ। बाल के नबीं को एक बैल लेने दो। उन्हें उसे मारने दो और उसके टुकड़े करने दो और तब उन्हें, माँस को लकड़ी पर रखने दो। किन्तु वे आग लगाना आरम्भ न करें। तब मैं वही काम दूसरे बैल को लेकर करूँगा और मैं आग लगाना आरम्भ नहीं करूँगा। [24]बाल के नबी! बाल से प्रार्थना करेंगे और मैं यहोवा से प्रार्थना करुँगा। जो ईश्वर प्रार्थना को स्वीकार करे और अपनी लकड़ी को जलाना आरम्भ कर दे, वही सच्चा परमेश्वर है।"

सभी लोगों ने स्वीकार किया कि यह उचित विचार है।

[25]तब एलिय्याह ने बाल के नबियों से कहा, "तुम बड़ी संख्या में हो। अत: तुम लोग पहल करो। एक बैल को चुनो और उसे तैयार करो। किन्तु आग लगाना आरम्भ न करो।"

[26]अत: नबियों ने उस बैल को लिया जो उन्हें दिया गया। उन्होंने उसे तैयार किया। उन्होंने दोपहर तक बाल से प्रार्थना की। उन्होंने प्रार्थना की, "बाल, कृपया हमें उत्तर दे!" किन्तु कोई आवाज नहीं आई। किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया। नबी उस वेदी के चारों ओर नाचते रहे जिसे उन्होंने बनाया था। किन्तु आग फिर भी नहीं लगी।

[27]दोपहर को एलिय्याह ने उनका मजाक उड़ाना आरम्भ किया। एलिय्याह ने कहा, "यदि बाल सचमुच देवता है तो कदाचित् तुम्हें और अधिक जोर से प्रार्थना करनी चाहिये! कदाचित् वह सोच रहा हो या कदाचित् वह बहुत व्यस्त हो, या कदाचित वह किसी यात्रा पर निकल गया हो। वह सोता रह सकता है। कदाचित् तुम लोग और अधिक जोर से प्रार्थना करो और जगाओ!" [28]उन्होनें और जोर से प्रार्थना की। उन्होंने अपने को तलवार और भालों से काटा–छेदा। (यह उनकी पूजा–पद्धति थी।) उन्होंने अपने को इतना काटा कि उनके ऊपर खून बहने लगा। [29]तीसरा पहर बीता किन्तु तब तक आग नहीं लगी। नबी उन्मत्त* रहे जब तक सन्ध्या की बलि–भेंट का समय नहीं आ पहुँचा। किन्तु तब तक भी बाल ने कोई उत्तर नहीं दिया। कोई अवाज नहीं आई। कोई नहीं सुन रहा था!

[30]तब एलिय्याह ने सभी लोगों से कहा, "अब मेरे पास आओ।" अत: सभी लोग एलिय्याह के चारों ओर इकट्ठे हो गए। यहोवा की वेदी उखाड़ दी गई थी। अत: एलिय्याह ने इसे जमाया। [31]एलिय्याह ने बारह पत्थर प्राप्त किए। हर एक बारह परिवार समूहों के लिये एक पत्थर था। इन बारह परिवारों के नाम याकूब के बारह पुत्रों के नाम पर थे। याकूब वह व्यक्ति था जिसे यहोवा ने इस्राएल नाम दिया था। [32]एलिय्याह ने उन पत्थरों का उपयोग यहोवा को सम्मान देने के लिये वेदी के निर्माण में किया। एलिय्याह ने वेदी के चारों ओर एक छोटी खाई खोदी। यह इतनी चौड़ी और इतनी गहरी थी कि इसमें लगभग सात गैलन पानी आ सके। [33]तब एलिय्याह ने वेदी पर लकड़ियाँ रखीं। उसने बैल को टुकड़ों में काटा। उसने टुकड़ों को लकड़ियों पर रखा। [34]तब एलिय्याह ने कहा, "चार घड़ों को पानी से भरो। पानी को माँस के टुकड़ों और लकड़ियों पर डालो।" तब एलिय्याह ने कहा, "यही फिर करो।" तब उसने कहा, "इसे तीसरी बार करो।" [35]पानी वेदी से बाहर बहा और उससे खाई भर गई।

[36]यह तीसरे पहर की बलि–भेंट का समय था। अत: एलिय्याह नबी वेदी के पास गया और प्रार्थना की, "हे यहोवा इब्राहीम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर! मैं तुझसे याचना करता हूँ कि तू प्रमाणित कर कि तू इस्राएल का परमेश्वर है और प्रमाणित कर कि मैं तेरा सेवक हूँ।

रानी वे नबी ईज़ेबेल के मेज पर भोजन करते हैं।

उन्मत्त "भविष्यवाणी" हिब्रू शब्द के इस रूप का अर्थ कभी "बेतहाशा काम में जुटना" या "अपने ऊपर नियन्त्रण न होना।" है।

इन लोगों के सामने यह प्रकट कर कि तूने यह सब
करने का मुझे आदेश दिया है। 37यहोवा मेरी प्रार्थना
का उत्तर दे। इन लोगों के सामने प्रकट कर कि हे
यहोवा तू वास्तव में परमेश्वर है। तब लोग समझेंगे
कि तू उन्हें अपने पास वापस ला रहा है।"

38अत: यहोवा ने नीचे आग भेजी। आग ने बलि,
लकड़ी, पत्थरों और वेदी के चारों ओर की भूमि को
जला दिया। आग ने खाई का सारा पानी भी सूखा
दिया। 39सभी लोगों ने यह होते देखा। लोग भूमि पर
प्रणाम करने झुके और कहने लगे, "यहोवा परमेश्वर
है! यहोवा परमेश्वर है!"

40तब एलिय्याह ने कहा, "बाल के नबियों को पकड़
लो! उनमें से किसी को बच निकलने न दो!" अत:
लोगों ने सभी नबियों को पकड़ा। तब एलिय्याह उन
सभी को किशोन नाले तक ले गया। उस स्थान पर
उसने सभी नबियों को मार डाला।

वर्षा पुन: होती है

41तब एलिय्याह ने राजा अहाब से कहा, "अब जाओ,
खाओ, और पिओ। एक घनघोर वर्षा आ रही है।"
42अत: राजा अहाब भोजन करने गया। उसी समय
एलिय्याह कर्म्मेल पर्वत की चोटी पर चढ़ा। पर्वत की
चोटी पर एलिय्याह प्रणाम करने झुका। उसने अपने
सिर को अपने घुटनों के बीच में रखा। 43तब एलिय्याह
ने अपने सेवक से कहा, "समुद्र की ओर देखो।"

सेवक उस स्थान तक गया जहाँ से वह समुद्र को
देख सके। तब सेवक लौट कर आया और उसने
कहा, "मैंने कुछ नहीं देखा।" एलिय्याह ने उसे पुन:
जाने और देखने को कहा। यह सात बार हुआ।
44सातवीं बार सेवक लौट कर आया और उसने कहा,
"मैंने एक छोटा बादल मनुष्य की मुट्ठी के बराबर
देखा है। बादल समुद्र से आ रहा था।"

एलिय्याह ने सेवक से कहा, "राजा अहाब के पास
जाओ और उससे कहो कि वह अपना रथ तैयार
कर ले और अब घर वापस जाये। यदि वह अभी नहीं
जायेगा तो वर्षा उसे रोक लेगी।"

45थोड़े समय के बाद आकाश काले मेघों से ढक
गया। तेज हवायें चलने लगीं और घनघोर वर्षा होने
लगी। अहाब अपने रथ में बैठा और यिज्रेल को वापस
यात्रा करनी आरम्भ की। 46एलिय्याह के अन्दर यहोवा
की शक्ति आई। एलिय्याह ने अपने वस्त्रों को अपनी
चारों ओर कसा, जिससे वह दौड़ सके। तब एलिय्याह
यिज्रेल तक के पूरे मार्ग पर राजा अहाब से आगे
दौड़ता रहा।

सीनै पर्वत पर एलिय्याह

19 राजा अहाब ने ईज़ेबेल को वे सभी बातें बताई
जो एलिय्याह ने कीं। अहाब ने उसे बताया
कि एलिय्याह ने कैसे सभी नबियों को एक ही तलवार
से मौत के घाट उतारा। 2इसलिये ईज़ेबेल ने एलिय्याह
के पास एक दूत भेजा। ईज़ेबेल ने कहा, "मैं प्रतिज्ञा
करती हूँ कि इस समय से पहले कल मैं तुमको वैसे
ही मारूँगी जैसे तुमने नबियों को मारा। यदि मैं सफल
नहीं होती तो देवता मुझे मार डालें।"

3जब एलिय्याह ने यह सुना तो वह डर गया। अत:
वह अपनी जान बचाने के लिये भाग गया। वह अपने
साथ अपने सेवक को ले गया। वे बेर्शेबा पहुँचे जो यहूदा
में है। एलिय्याह ने अपने सेवक को बेर्शेबा में छोड़ा।
4तब एलिय्याह पूरे दिन मरुभूमि में चला। एलिय्याह
एक झाड़ी के नीचे बैठा। उसने मृत्यु की याचना की।
एलिय्याह ने कहा, "यहोवा यह मेरे लिये बहुत है मुझे
मरने दे। मैं अपने पूर्वजों से अधिक अच्छा नहीं हूँ।"

5तब एलिय्याह पेड़ के नीचे लेट गया और सो गया।
एक स्वर्गदूत एलिय्याह के पास आया और उसने
उसका स्पर्श किया। स्वर्गदूत ने कहा, "उठो, खाओ!"
6एलिय्याह ने देखा कि उसके बहुत निकट कोयले
पर पका एक पुआ और पानी भरा घड़ा है। एलिय्याह
ने खाया–पीया। तब वह फिर सो गया।

7बाद में, यहोवा का स्वर्गदूत उसके पास फिर आया।
स्वर्गदूत ने कहा, "उठो, खाओ!" यदि तुम ऐसा नहीं
करते तो तुम इतने शक्तिशाली नहीं होगे, जिससे तुम
लम्बी यात्रा कर सको।" 8अत: एलिय्याह उठा। उसने
खाया, पिया। भोजन ने उसे इतना शक्तिशाली बना
दिया कि वह चालीस दिन और रात यात्रा कर सके।
वह होरेब पर्वत तक गया जो परमेश्वर का पर्वत है।
9वहाँ एलिय्याह एक गुफा में घुसा और सारी रात ठहरा।

तब यहोवा ने एलिय्याह से बातें कीं। यहोवा ने कहा,
"एलिय्याह, तुम यहाँ क्यों आए हो?"

10एलिय्याह ने उत्तर दिया, "यहोवा सर्वशक्तिमान
परमेश्वर, मैंने तेरी सेवा सदैव की है। मैंने तेरी सेवा
सर्वोत्तम रूप में सदैव यथासम्भव की है। किन्तु इस्राएल
के लोगों ने तेरे साथ की गई वाचा तोड़ी है। उन्होंने तेरी
वेदियों को नष्ट किया है। उन्होंने तेरे नबियों को मार
डाला है। मैं एकमात्र ऐसा नबी हूँ जो जीवित बचा हूँ और
अब वे मुझे मार डालना चाहते हैं!" 11तब यहोवा ने
एलिय्याह से कहा, "जाओ, मेरे सामने पर्वत पर खड़े
होओ। मैं तुम्हारे बगल से निकलूँगा।"* तब एक प्रचंड
आँधी चली। आँधी ने पर्वतों को तोड़ गिराया। इसने यहोवा
के सामने विशाल चट्टानों को तोड़ डाला। किन्तु वह
आँधी यहोवा नहीं था। उस आँधी के बाद भूकम्प आया।
किन्तु वह भूकम्प यहोवा नहीं था। 12भूकम्प के बाद
वहाँ अग्नि था। किन्तु वह आग यहोवा नहीं थी। आग
के बाद वहाँ एक शान्त और मद्धिम स्वर सुनाई पड़ा।
13जब एलिय्याह ने वह स्वर सुना तो उसने अपने
अंगरखे से अपना मुँह ढक लिया। तब वह गया और
गुफा के द्वार पर खड़ा हुआ। तब एक वाणी ने उससे
कहा, "एलिय्याह, यहाँ तुम क्यों हो?"
14एलिय्याह ने उत्तर दिया, "यहोवा सर्वशक्तिमान
परमेश्वर, मैंने सर्वोत्तम यथासम्भव तेरी सेवा की है।
किन्तु इस्राएल के लोगों ने तेरे साथ की गई अपनी वाचा
तोड़ी है। उन्होंने तेरी वेदियाँ नष्ट कीं। उन्होंने तेरे नबियों
को मारा। मैं एकमात्र ऐसा नबी हूँ जो अभी तक जीवित
है और अब वे मुझे मार डालने का प्रयत्न कर रहे हैं।"
15यहोवा ने कहा, "दमिश्क के चारों ओर की
मरुभूमि को पहुँचाने वाली सड़क से वापस लौटो।
दमिश्क में जाओ और हजाएल का अभिषेक अराम
के राजा के रुप में करो। 16तब निमशी के पुत्र येहू
का अभिषेक इस्राएल के राजा के रूप में करो। उसके
बाद आबेल महोला के शापात के पुत्र एलीशा का
अभिषेक करो। वह तुम्हारे स्थान पर नबी बनेगा।
17हजाएल अनेक बुरे लोगों को मार डालेगा। येहू किसी
को भी मार डालेगा जो हजाएल की तलवार से बच
निकलता है। 18एलिय्याह! इस्राएल में तुम ही एक
मात्र विश्वासपात्र व्यक्ति नहीं हो। वे पुरुष बहुत से
लोगों को मार डालेंगे, किन्तु उसके बाद भी वहाँ
इस्राएल में सात हजार लोग ऐसे होंगे जिन्होंने बाल को
कभी प्रणाम नहीं किया। मैं उन सात हजार लोगों को
जीवित रहने दूँगा, क्योंकि उन लोगों में से किसी ने
कभी बाल की देवमूर्ति को चूमा तक नहीं।"

एलीशा एक नबी बनता है

19इसलिये एलिय्याह ने उस स्थान को छोड़ा और
शापात के पुत्र एलीशा की खोज में निकला। एलीशा
बारह एकड़ भूमि में हल चलाता था। एलीशा आखिरी
एकड़ को जोत रहा था जब एलिय्याह वहाँ आया।
एलिय्याह एलीशा के पास गया। तब एलिय्याह ने अपना
अंगरखा* एलीशा को पहना दिया। 20एलीशा ने तुरन्त
अपनी बैलों को छोड़ा और एलिय्याह के पीछे दौड़
गया। एलिशा ने कहा, "मुझे अपनी माँ को चूमने दो
और पिता से विदा लेने दो। फिर मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।"
एलिय्याह ने उत्तर दिया, "यह अच्छा है। जाओ, मैं
तुम्हें रोकूँगा नहीं।"
21तब एलीशा ने अपने परिवार के साथ विशेष
भोजन किया। एलीशा गया और अपनी बैलों को मार
डाला। उसने हल की लकड़ी का उपयोग आग जलाने
के लिये किया। तब उसने माँस को पकाया और लोगों
में बाँट दिया। लोगों ने माँस खाया। तब एलीशा गया
और उसने एलिय्याह का अनुसरण किया। एलीशा
एलिय्याह का सहायक बना।

बेन्हदद और अहाब युद्ध में उतरते हैं

20 बेन्हदद अराम का राजा था। उसने अपनी
सारी सेना इकट्ठी की। उसके साथ बत्तीस
राजा थे। उनके पास घोड़े और रथ थे। उन्होंने शोमरोन
पर आक्रमण किया और उसके विरुद्ध लड़े। 2राजा
ने नगर में इस्राएल के राजा अहाब के पास दूत भेजे।
3सूचना यह थी, "बेन्हदद कहता है, 'तुम्हें अपना
सोना-चाँदी मुझे देना पड़ेगा। तुम्हें अपनी पत्नियाँ और
बच्चे भी मुझको देने होंगे।'"

जाओ ... निकलूँगा यह उस समय के समान है जिस समय परमेश्वर मूसा के सामने प्रकट हुआ था। देखे निर्गमन 33: 12-23

अंगरखा यह विशेष चोंगा था, जिससे यह पता चलता था कि एलिय्याह नबी है। एलीशा को इस अंगरखा को देना यह प्रकट करता था कि एलीशा एलिय्याह के स्थान पर नबी हो गया है।

[4]इस्राएल के राजा ने उत्तर दिया, “ऐ मेरे स्वामी राजा! मैं स्वीकार करता हूँ कि अब मैं आपके अधीन हूँ और जो कुछ मेरा है वह आपका है।”

[5]तब दूत अहाब के पास वापस आया। उन्होंने कहा, “बेन्हदद कहता है, ‘मैंने पहले ही तुमसे कहा था कि तुम्हें सारा सोना चाँदी तथा अपनी स्त्रियों, बच्चों को मुझको देना पड़ेगा। [6]अब मैं अपने व्यक्तियों को भेजना चाहता हूँ जो महल में सर्वत्र और तुम्हारे आधीन शासन करने वाले और अधिकारियों के घरों में खोज करेंगे। मेरे व्यक्ति जो चाहेंगे लेंगे।’”

[7]अत: राजा अहाब ने अपने देश के सभी अग्रजों (प्रमुखों) की एक बैठक बुलाई। अहाब ने कहा, “देखो बेन्हदद विपत्ति लाना चाहता है। प्रथम तो उसने मुझसे यह माँग की है कि मैं उसे अपनी पत्नियाँ, अपने बच्चे और अपना सोना–चाँदी दे दूँ। मैंने उसे वे चीजें देनी स्वीकार कर ली और अब वह सब कुछ लेना चाहता है।”

[8]किन्तु अग्रजों (प्रमुखों) और सभी लोगों ने कहा, “उसका आदेश न मानो। वह न करो जिसे करने को वह कहता है।”

[9]इसलिये अहाब ने बेन्हदद को सन्देश भेजा। अहाब ने कहा, “मैं वह कर दूँगा जो तुमने पहले कहा था। किन्तु मैं तुम्हारे दूसरे आदेश का पालन नहीं कर सकता।”

राजा बेन्हदद के दूत सन्देश राजा तक ले गये।
[10]तब वे बेन्हदद के अन्य सन्देश के साथ लौटे। सन्देश यह था, “मैं शोमरोन को पूरी तरह नष्ट करूँगा। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि उस नगर का कुछ भी नहीं बचेगा। उस नगर का इतना कुछ भी नहीं बचेगा कि वह हमारे व्यक्तियों के लिये नगर की यादगार* के रूप में अपने घर ले जाने को पर्याप्त हो। परमेश्वर मुझे नष्ट कर दे यदि मैं ऐसा न करुँ।”

[11]राजा अहाब ने उत्तर दिया, “बेन्हदद से कहो कि उस व्यक्ति को, जिसने अपना कवच धारण किया हो, उस व्यक्ति की तरह डींग नहीं हाँकनी चाहिये जो उसे उतारने के लिये लम्बा जीवन जीता है।”

[12]राजा बेन्हदद ने अपने अन्य प्रशासकों के साथ अपने तम्बू में मदिरा पान कर रहा था। उसी समय दूत आया और उसने राजा अहाब का सन्देश दिया। राजा बेन्हदद ने अपने व्यक्तियों को नगर पर आक्रमण करने के लिये तैयार होने को कहा। अत: सैनिक युद्ध के लिये अपना स्थान लेने बढ़े।

[13]इसी समय, एक नबी, राजा अहाब के पास पहुँचा। नबी ने कहा, “राजा अहाब यहोवा तुमसे कहता है, ‘क्या तुम उस बड़ी सेना को देखते हो! मैं यहोवा, आज तुम्हें उस सेना को हराने दूँगा। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।’”

[14]अहाब ने कहा, “उन्हें पराजित करने के लिये तुम किसका उपयोग करोगे?”

नबी ने उत्तर दिया, “यहोवा कहता है, “सरकारी अधिकारियों के युवक सहायक।” तब राजा ने पूछा, “मुख्य सेना का सेनापतित्व कौन सम्भालेगा?”

नबी ने उत्तर दिया, “तुम सम्भालोगे।”

[15]अत: अहाब ने सरकारी अधिकारियों के युवक सहायकों को इकट्ठा किया। सब मिलाकर ये दो सौ बत्तीस युवक थे। तब राजा ने इस्राएल की सेना को एक साथ बुलाया। सारी संख्या सात हजार थी।

[16]दोपहर को, राजा बेन्हदद और उसके सहायक बत्तीस राजा अपने डेरे में मदिरा पान कर रहे थे और मद मत्त हो रहे थे। इसी समय राजा अहाब का आक्रमण आरम्भ
हुआ। [17]युवक सहायकों ने प्रथम आक्रमण किया। बेन्हदद के व्यक्तियों ने उससे कहा कि सैनिक शोमरोन से
बाहर निकल आये हैं। [18]अत: बेन्हदद ने कहा, “वे युद्ध करने के लिये आ रहे होंगे या वे शान्ति–सन्धि करने आ रहे होंगे। उन्हें जीवित पकड़ लो।”

[19]राजा अहाब के युवक आक्रमण की पहल कर रहे थे। इस्राएल की सेना उनके पीछे चल रही थी।
[20]किन्तु इस्राएल के हर एक व्यक्ति ने उस पुरुष को मार डाला जो उसके विरुद्ध आया। अत: अराम के सैनिकों ने भागना आरम्भ किया। इस्राएल की सेना ने उनका पीछा किया। राजा बेन्हदद अपने रथों के
एक घोड़े पर बैठकर भाग निकला। [21]राजा अहाब सेना को लेकर आगे बढ़ा और उसने अराम की सेना के सारे घोड़ों और रथों को ले लिया। इस प्रकार राजा अहाब ने अरामी सेना को भारी पराजय दी।

[22]तब नबी राजा अहाब के पास पहुँचा और कहा, “अराम का राजा बेन्हदद अगले बसन्त में तुमसे युद्ध करने के लिये फिर आयेगा। अत: तुम्हें अब घर लौट

यादगार देखे गये स्थान की याद दिलाने वाली चीज़ें। हिब्रू में “एक मुट्ठी धूलि” है।

जाना चाहिये और अपनी सेना को पहले से अधिक
शक्तिशाली बनाना चाहिये और उसके विरुद्ध सुरक्षा
की सुनियोजित योजना बनानी चाहिये।"

बेन्हदद पुन: आक्रमण करता है

[23]राजा बेन्हदद के अधिकारियों ने उससे कहा,
"इस्राएल के देवता पर्वतीय देवता है। हम लोग पर्वतीय
क्षेत्र में लड़े थे। इसलिये इस्राएल के लोग विजयी हुए।
अत: हम लोग उनसे समतल मैदान में युद्ध करें। तब हम
विजय पाएंगे। [24]तुम्हें यही करना चाहिए। बत्तीस राजाओं
को सेना का सेनापतित्व करने को अनुमति न दो।
सेनापतियों को ही अपनी सेना का संचालन करने दो।
[25]"अब तुम वैसी ही सेना बनाओ जो नष्ट हुई सेना
की तरह हो। उसी सेना की तरह घोड़े और रथ इकट्ठे
करो। तब हम लोग इस्राएलियों से समतल मैदान में युद्ध
करें। तब हम विजय प्राप्त करेंगे।" बेन्हदद ने उनकी
सलाह मान ली। उसने वही किया जो उन्होंने कहा।
[26]अत: बसन्त में बेन्हदद ने अराम के लोगों को
इकट्ठा किया। वह इस्राएल के विरुद्ध युद्ध करने
अपेक गया।
[27]इस्राएलियों ने भी युद्ध की तैयारी की। इस्राएल के
लोग अराम की सेना से लड़ने गये। उन्होंने अपने डेरे
अराम के डेरे के सामने डाले। शत्रु की तुलना में इस्राएली
बकरियों के दो छोटे झुण्डों के समान दिखाई पड़ते थे
किन्तु अराम की सेना सारे क्षेत्र को ढकी थी।
[28]परमेश्वर का एक व्यक्ति इस सन्देश के साथ
इस्राएल के राजा के पास आया: "यहोवा ने कहा है,
'अराम के लोगों ने कहा है कि मैं अर्थात् यहोवा पर्वतों
का परमेश्वर हूँ। वे समझते हैं कि घाटियों का परमेश्वर
मैं नहीं हूँ। इसलिए मैं तुम्हें इस विशाल सेना को पराजित
करने दूँगा। तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा सर्वत्र हूँ।'"
[29]सेनायें सात दिन तक एक दूसरे के आमने सामने
डेरा डाले रहीं। सातवें दिन युद्ध आरम्भ हुआ। इस्राएलियों
ने एक दिन में अराम के एक लाख सैनिकों को मार
डाला। [30]बचे हुए सैनिक अपेक नगर को भाग गए। नगर
प्राचीर उन सत्ताईस हजार सैनिकों पर गिर पड़ी। बेन्हदद
भी नगर को भाग गया। वह एक कमरे में छिप गया।
[31]उसके सेवकों ने उससे कहा, "हम लोगों ने सुना है कि
इस्राएल कुल के राजा लोग दयालु हैं। हम लोग मोटे
वस्त्र पहने और सिर पर रस्सी डाले।* तब हम लोग
इस्राएल के राजा के पास चलें। सभंव है, वह हमें
जीवित रहने दे।"
[32]उन्होंने मोटे वस्त्र पहने और रस्सी सिर पर डाली।
वे इस्राएल के राजा के पास आए। उन्होंने कहा, "तुम्हारा
सेवक बेन्हदद कहता है, 'कृपया मुझे जीवित रहने दें।'"
अहाब ने उत्तर दिया, "क्या वह अभी तक जीवित
है? वह मेरा भाई है।"*
[33]बेन्हदद के व्यक्ति राजा अहाब से ऐसा कुछ कहलवाना
चाहते थे, जिससे यह पता चले कि वह बेन्हदद को नहीं
मारेगा। जब अहाब ने बेन्हदद को भाई कहा तो सलाहकारों
ने तुरन्त कहा, "हाँ! बेन्हदद आपका भाई है।"
अहाब ने कहा, "उसे मेरे पास लाओ।" अत: बेन्हदद
राजा अहाब के पास आया। राजा अहाब ने अपने
साथ उसे अपने रथ में बैठने को कहा।
[34]बेन्हदद ने उससे कहा, "अहाब मैं उन नगरों को
तुम्हें दे दूँगा जिन्हें मेरे पिता ने तुम्हारे पिता से ले लिये
थे और तुम दमिश्क में वैसे ही दुकाने रख सकते हो
जैसे मेरे पिता ने शोमरोन में रखी थीं।"
अहाब ने उत्तर दिया, "यदि तुम इसे स्वीकार करते
हो तो मैं तुम्हें जाने के लिये स्वतन्त्र करता हूँ।" अत:
दोनों राजाओं ने एक शान्ति–सन्धि की। तब राजा
अहाब ने बेन्हदद को जाने के लिये स्वतन्त्र कर दिया।

एक नबी अहाब के विरुद्ध भविष्यवाणी करता है

[35]नबियों में से एक ने दूसरे नबी से कहा, "मुझ पर
चोट करो!" उसने उससे यह करने के लिये कहा
क्योंकि यहोवा ने ऐसा आदेश दिया था। किन्तु दूसरे
नबी ने उस पर चोट करने से इन्कार कर दिया।
[36]इसलिये पहले नबी ने कहा, "तुमने यहोवा के आदेश
का पालन नहीं किया। अत: जब तुम इस स्थान को
छोड़ोगे, एक सिंह तुम्हें मार डालेगा।" दूसरे नबी ने
उस स्थान को छोड़ा और उसे एक सिंह ने मार डाला।
[37]प्रथम नबी दूसरे व्यक्ति के पास गया और कहा,
"मुझ पर चोट करो।" उस व्यक्ति ने उस पर चोट की।

हम लोग ... रस्सी डालें यह इस बात को प्रकट करता था कि वे अधीनता स्वीकार करते हैं और आत्मसर्मपण चाहते हैं।

भाई है शान्ति–सन्धि करने वाले लोग प्राय: एक दूसरे को भाई कहते थे। वे मानों एक परिवार के हो।

नबी को चोट आई। 38अत: नबी ने अपने चेहरे पर एक वस्त्र लपेट लिया। इस प्रकार कोई यह नहीं समझ सकता था कि वह कौन है। वह नबी गया और उसने सड़क के किनारे राजा की प्रतीक्षा आरम्भ की। 39राजा उधर से निकला और नबी ने उससे कहा, "मैं युद्ध में लड़ने गया था। हमारे व्यक्तियों में से मेरे पास शत्रु सैनिक को लाया। उस व्यक्ति ने कहा, 'इस व्यक्ति की पहरेदारी करो। यदि यह भाग गया तो इसके स्थान पर तुम्हें अपना जीवन देना होगा या तुम्हें पचहत्तर पौंड चाँदी जुर्माने में देनी होगी।' 40किन्तु मैं अन्य कामों में व्यस्त हो गया। अत: वह व्यक्ति भाग निकला।"

इस्राएल के राजा ने कहा, "तुमने कहा है कि तुम सैनिक को भाग जाने देने के अपराधी हो। अत: तुमको उत्तर मालूम है। तुम्हें वही करना चाहिये जिसे करने को उस व्यक्ति ने कहा है।"

41तब नबी ने अपने मुख से कपड़े को हटाया। इस्राएल के राजा ने देखा और यह जान लिया कि वह नबियों में से एक है। 42तब नबी ने राजा से कहा, "यहोवा तुमसे यह कहता है, 'तुमने उस व्यक्ति को स्वतन्त्र किया जिसे मैंने मर जाने को कहा। अत: उसका स्थान तुम लोगे, तुम मर जाओगे और तुम्हारे लोग दुश्मनों का स्थान लेंगे, तुम्हारे लोग मरेंगे।'"

43तब राजा अपने घर शोमरोन लौट गया। वह बहुत परेशान और घबराया हुआ था।

नाबोत के अंगूर का बाग

21 राजा अहाब का महल शोमरोन में था। महल के पास एक अंगूरों का बाग था। यिज्रेल नाबोत नामक व्यक्ति इस फलों के बाग का स्वामी था। 2एक दिन अहाब ने नाबोत से कहा, "अपना यह फलों का बाग मुझे दे दो। मैं इसे सब्जियों का बाग बनाना चाहता हूँ। तुम्हारा बाग मेरे महल के पास है। मैं इसके बदले तुम्हें इससे अच्छा अंगूर का बाग दूँगा या, यदि तुम पसन्द करोगे तो इसका मूल्य मैं सिक्कों में चुकाऊँगा।"

3नाबोत ने उत्तर दिया, "मैं अपनी भूमि तुम्हें कभी नहीं दूँगा। यह भूमि मेरे परिवार की है।"

4अत: अहाब अपने घर गया। वह नाबोत पर क्रोधित और बिगड़ा हुआ था। उसने उस बात को पसन्द नहीं किया जो यिज्रेल के व्यक्ति ने कही थी। (नाबोत ने कहा था, "मैं अपने परिवार की भूमि तुम्हें नहीं दूँगा।") अहाब अपने बिस्तर पर लेट गया। उसने अपना मुख मोड़ लिया और खाने से इन्कार कर दिया।

5अहाब की पत्नी ईज़ेबेल उसके पास गई। ईज़ेबेल ने उससे कहा, "तुम घबराये क्यों हो? तुमने खाने से इन्कार क्यों किया है?"

6अहाब ने उत्तर दिया, "मैंने यिज्रेल के नाबोत से उसकी भूमि माँगी। मैंने उससे कहा कि मैं उसकी पूरी कीमत चुकाऊँगा, या, यदि वह चाहेगा तो मैं उसे दूसरा बाग दूँगा। किन्तु नाबोत ने अपना बाग देने से इन्कार कर दिया।"

7ईज़ेबेल ने उत्तर दिया, "किन्तु तुम तो पूरे इस्राएल के राजा हो अपने बिस्तर से उठो। कुछ भोजन करो, तुम अपने को स्वस्थ अनुभव करोगे। मैं नाबोत का बाग तुम्हारे लिये ले लूँगी।"

8तब ईजेबेल ने कुछ पत्र लिखे। उसने पत्रों पर अहाब के हस्ताक्षर बनाये। उसने अहाब की मुहर पत्रों को बन्द करने के लिये उन पर लगाई। तब उसने उन्हें अग्रजों (प्रमुखों) और विशेष व्यक्तियों के पास भेजे जो उसी नगर में रहते थे जिसमें नाबोत रहता था। 9पत्र में यह लिखा था:

यह घोषणा करो कि एक ऐसा दिन होगा जिस दिन लोग कुछ भी भोजन नहीं करेंगे। तब नगर के सभी लोगों की एक साथ एक बैठक बुलाओ। बैठक में हम नाबोत के बारे में बात करेंगे। 10किसी ऐसे व्यक्ति का पता करो जो नाबोत के विषय में झूठ बोले। वे लोग यह कहें कि उन्होंने सुना कि नाबोत ने राजा और परमेश्वर के विरुद्ध कुछ बातें कहीं। तब नाबोत को नगर के बाहर ले जाओ और उसे पत्थरों से मार डालो।

11अत: यिज्रेल के अग्रजों (प्रमुखों) और विशेष व्यक्तियों ने उस आदेश का पालन किया। 12प्रमुखों ने घोषणा की कि एक दिन ऐसा होगा जब सभी व्यक्ति कुछ भी भोजन नहीं करेंगे। उस दिन उन्होंने सभी लोगों की बैठक एक साथ बुलाई। उन्होंने नाबोत को विशेष स्थान पर लोगों के सामने रखा।

13तब दो व्यक्तियों ने लोगों से कहा कि उन्होंने नाबोत को परमेश्वर और राजा के विरुद्ध बातें करते सुना है। अत: लोग नाबोत को नगर के बाहर ले गए। तब उन्होंने उसे पत्थरों से मार डाला। 14तब प्रमुखों ने एक सन्देश

ईज़ेबेल को भेजा। सन्देश था: "नाबोत पत्थरों से मार
डाला गया।"
15जब ईज़ेबेल ने यह सुना तो उसने अहाब से कहा,
"नाबोत मर गया। अब तुम जा सकते हो और उस बाग
को ले सकते हो जिसे तुम चाहते थे।" 16अत: अहाब
अंगूरों के बाग में गया और उसे अपना बना लिया।
17इस समय यहोवा ने एलिय्याह से बातें की।
(एलिय्याह तिशबी का नबी था।) 18यहोवा ने कहा,
"राजा अहाब के पास शोमरोन को जाओ। अहाब नाबोत
के अगूंरों के बाग में होगा। वह वहाँ पर उस बाग को
अपना बनाने के लिये होगा। 19अहाब से कहो, मैं यहोवा
उससे कहता हूँ, 'अहाब! तुमने नाबोत नामक व्यक्ति
को मार डाला है। अब तुम उसकी भूमि ले रहे हो।
अत: मैं तुमसे कहता हूँ, तुम भी उसी स्थान पर मरोगे
जिस स्थान पर नाबोत मरा। जिन कुत्तों ने नाबोत के
खून को चाटा, वे ही तुम्हारा खून उस स्थान पर चाटेंगे।'"
20अत: एलिय्याह अहाब के पास गया। अहाब ने
एलिय्याह को देखा और कहा, "तुमने मुझे फिर पा
लिया है। तुम सदा मेरे विरुद्ध हो।"
एलिय्याह ने उत्तर दिया, "हाँ, मैंने तुम्हें पुन: पा
लिया है। तुमने सदा अपने जीवन का उपयोग यहोवा
के विरुद्ध पाप करने में किया। 21अत: यहोवा तुमसे
कहता है, 'मैं तुम्हें नष्ट कर दूँगा। 22मैं तुम्हें और
तुम्हारे परिवार के हर एक पुरुष सदस्य को मार
डालूँगा। तुम्हारे परिवार की वही दशा होगी जो दशा
नाबोत के पुत्र यारोबाम के परिवार की हुई और तुम्हारा
परिवार बाशा के परिवार की तरह होगा। ये दोनों पूरी
तरह नष्ट कर दिये गये थे। मैं तुम्हारे साथ यही करूँगा
क्योंकि तुमने मुझे क्रोधित किया है। तुमने इस्राएल के
लोगों से पाप कराया है' 23और यहोवा यह भी कहता
है, 'तुम्हारी पत्नी ईजेबेल का शव यिज्रेल नगर में कुत्ते
खायेंगे। 24तुम्हारे परिवार के किसी भी सदस्य को जो
नगर में मरेगा, कुत्ते खायेंगे। जो व्यक्ति मैदानो में मरेगा
वह पक्षियों द्वारा खाया जाएगा।'"
25कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं जिसने उतने बुरे काम
या पाप किये हों जितने अहाब ने किये। उसकी पत्नी
ईज़ेबेल ने उससे ये काम कराये। 26अहाब ने बहुत
बुरा पाप किया और उसने उन काष्ठ के कुंदों
(देव–मूर्तियों) को पूजा। यह वही काम था जिसे एमोरी
लोग करते थे और यहोवा ने उनसे प्रदेश छीन लिया
था और इस्राएल के लोगों को दे दिया था।
27एलिय्याह के कथन के पूरा होने पर अहाब बहुत
दु:खी हुआ। उसने अपने वस्त्रों को यह दिखाने के
लिये फाड़ डाला कि उसे दु:ख है। तब उसने शोक के
विशेष वस्त्र पहन लिये। अहाब ने खाने से इन्कार
कर दिया। वह उन्हीं विशेष वस्त्रों को पहने हुए सोया।
अहाब बहुत दु:खी और उदास था।
28यहोवा ने एलिय्याह नबी से कहा, 29"मैं देखता हूँ
कि अहाब मेरे सामने विनम्र हो गया है। अत: उसके
जीवन काल में मैं उस पर विपत्ति नहीं आने दूँगा। मैं तब
तक प्रतीक्षा करूँगा जब तक उसका पुत्र राजा नहीं बन
जाता। तब मैं अहाब के परिवार पर विपत्ति आने दूँगा।"

मीकायाह अहाब को चेतावनी देता है

22 अगले दो वर्षों के भीतर इस्राएल और अराम
के बीच शान्ति रही। 2तब तीसरे वर्ष यहूदा
का राजा यहोशापात इस्राएल के राजा अहाब से मिलने गया।
3इस समय अहाब ने अपने अधिकारियों से पूछा,
"तुम जानते हो कि अराम के राजा ने गिलाद में रामोत
को हम से ले लिया था। हम लोगों ने रामोत वापस
लेने का कुछ भी प्रयत्न क्यों नहीं किया? यह हम
लोगों का नगर होना चाहिये।"
4इसलिये अहाब ने यहोशापात से पूछा, "क्या आप
हमारे साथ होंगे और रामोत में अराम की सेना के
विरुद्ध युद्ध करेंगे?"
यहोशापात ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं तुम्हारा साथ
दूँगा। मेरे सैनिक और मेरे घोड़े तुम्हारी सेना के साथ
मिलने के लिये तैयार हैं। 5किन्तु पहले हम लोगों को
यहोवा से सलाह ले लेनी चाहिये।"
6अत: अहाब ने नबियों की एक बैठक बुलाई।
उस समय लगभग चार सौ नबी थे। अहाब ने नबियों
से पूछा, "क्या मैं जाऊँ और रामोत में अराम की सेना
के विरुद्ध युद्ध करुँ? या मैं किसी अन्य अवसर की
प्रतीक्षा करुँ?" नबियों ने उत्तर दिया, "तुम्हें अभी युद्ध
करना चाहिये। यहोवा तुम्हें विजय पाने देगा।"
7किन्तु यहोशापात ने कहा, "क्या यहाँ यहोवा के
नबियों में से कोई अन्य नबी है? यदि कोई है तो हमें
उससे पूछना चाहिये कि परमेश्वर क्या कहता है।"

8 राजा अहाब ने उत्तर दिया, "एक अन्य नबी है।
वह यिम्ला का पुत्र मीकायाह है। किन्तु उससे मैं घृणा
करता हूँ। जब कभी वह यहोवा का माध्यम बनता है
तब वह मेरे लिये कुछ भी अच्छा नहीं कहता। वह
सदैव वही कहता है जिसे मैं पसन्द नहीं करता।"
यहोशापात ने कहा, "राजा अहाब, तुम्हें ये बातें
नहीं कहनी चाहिये!"
9 अत: राजा अहाब ने अपने अधिकारियों में से एक
से जाने और मीकायाह को खोज निकालने को कहा।
10 उस समय दोनों राजा अपना राजसी पोशाक पहने
थे। वे सिंहासन पर बैठे थे। यह शोमरोन के द्वार के
पास खुले स्थान पर था। सभी नबी उनके सामने खड़े
थे। नबी भविष्यवाणी कर रहे थे।
11 नबियों में से एक सिदकिय्याह नामक व्यक्ति था।
वह कनाना का पुत्र था। सिदकिय्याह ने कुछ लोहे
की सींगे* बनाई। तब उसने अहाब से कहा, "यहोवा
कहता है, 'तुम लोहे की इन सींगों का उपयोग अराम
की सेना के विरुद्ध लड़ने में करोगे। तुम उन्हें हराओगे
और उन्हें नष्ट करोगे।'" 12 सभी अन्य नबियों ने उसका
समर्थन किया जो कुछ सिदकिय्याह ने कहा। नबियों
ने कहा, "तुम्हारी सेना अभी कूच करे। उन्हें रामोत
में अराम की सेना के साथ युद्ध करना चाहिये। तुम
युद्ध जीतोगे। यहोवा तुम्हें विजय पाने देगा।"
13 जब यह हो रहा था तभी अधिकारी मीकायाह को
खोजने गया। अधिकारी ने मीकायाह को खोज निकाला
और उससे कहा, "सभी अन्य नबियों ने कहा है कि
राजा को सफलता मिलेगी। अत: मैं यह कहता हूँ कि
यही कहना तुम्हारे लिये सर्वाधिक अनुकूल होगा।"
14 किन्तु मीकायाह ने उत्तर दिया, "नहीं! मैं प्रतिज्ञा
करता हूँ कि यहोवा की शक्ति से वही कहूँगा जो
कहने के लिये यहोवा कहेगा!"
15 तब मीकायाह राजा अहाब के सामने खड़ा हुआ।
राजा ने उससे पूछा, "मीकायाह, क्या मुझे और राजा
यहोशापात को अपनी सेनायें एक कर लेनी चाहिये?
और क्या हमें अराम की सेना से रामोत में युद्ध
करने के लिये अभी कुछ करना चाहिये या नहीं?"
मीकायाह ने उत्तर दिया, "हाँ! तुम्हें जाना चाहिये और
उनसे अभी युद्ध करना चाहिये। यहोवा तुम्हें विजय देगा।"
16 किन्तु अहाब ने पूछा, "तुम यहोवा की शक्ति से
नहीं बता रहे हो। तुम अपनी निजी बात कह रहे हो।
अत: मुझसे सत्य कहो। कितनी बार मुझे तुमसे कहना
पड़ेगा? मुझसे वह कहो जो यहोवा कहता है।"
17 अत: मीकायाह ने उत्तर दिया, "मैं जो कुछ होगा,
देख सकता हूँ। इस्राएल की सेना पहाड़ियों में बिखर
जायेगी। वे उन भेड़ों की तरह होंगी जिनका कोई भी
संचालक न हो। यही यहोवा कहता है, 'इन व्यक्तियों
का दिशा निर्देशक कोई नहीं है। उन्हें घर जाना चाहिये
और युद्ध नहीं करना चाहिये।'"
18 तब अहाब ने यहोशापात से कहा, "देख लो! मैंने
तुम्हें बताया था! यह नबी मेरे बारे में कभी कोई
अच्छी बात नहीं कहता। यह सदा वही बात कहता है
जिसे मैं सुनना नहीं चाहता।"
19 किन्तु मीकायाह यहोवा का माध्यम बना कहता
ही रहा। उसने कहा, "सुनो! ये वे शब्द हैं जिन्हें यहोवा
ने कहा है। मैंने यहोवा को स्वर्ग में अपने सिंहासन
पर बैठे देखा। उसके दूत उसके समीप खड़े थे।
20 यहोवा ने कहा, 'क्या तुममें से कोई राजा अहाब
को चकमा दे सकता है? मैं उसे रामोत में अराम की
सेना के विरुद्ध युद्ध करने के लिये जाने देना चाहता
हूँ। तब वह मारा जाएगा।' स्वर्गदूतों को क्या करना
चाहिये, इस पर वे सहमत न हो सके। 21 तब एक
स्वर्गदूत यहोवा के पास गया और उसने कहा, 'मैं उसे
चकमा दूँगा!' 22 यहोवा ने पूछा, 'तुम राजा अहाब को
चकमा कैसे दोगे?' स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, 'मैं अहाब
के सभी नबियों को भ्रमित कर दूँगा। मैं नबियों को
अहाब से झूठ बोलने के लिये कहूँगा। नबियों के सन्देश
झूठे होंगे।' अत: यहोवा ने कहा, 'बहुत अच्छा! जाओ
और राजा अहाब को चकमा दो। तुम सफल होगे।'"
23 मीकायाह ने अपनी कथा पूरी की। तब उसने
कहा, "अत: यहाँ यह सब हुआ। यहोवा ने तुम्हारे
नबियों से तुम्हें झूठ बुलवा दिया है। यहोवा ने स्वयं
निर्णय लिया है कि तुम पर बड़ी भारी विपत्ति लाए।"
24 तब सिदकिय्याह नबी मीकायाह के पास गया।
सिदकिय्याह ने मीकायाह के मुँह पर मारा।
सिदकिय्याह ने कहा, "क्या तुम सचमुच विश्वास करते
हो कि यहोवा की शक्ति ने मुझे छोड़ दिया है और वह
तुम्हारे माध्यम से बात कर रहा है।"

लोहे की सींगे ये बड़ी शक्ति का प्रतीक थीं।

25मीकायाह ने उत्तर दिया, “शीघ्र ही विपत्ति आएगी।
उस समय तुम भागोगे और एक छोटे कमरे में छिपोगे
और तब तुम समझोगे कि मैं सत्य कह रहा हूँ।”
26तब राजा अहाब ने अपने अधिकारियों में से एक
को मीकायाह को बन्दी बनाने का आदेश दिया। राजा
अहाब ने कहा, “इसे बन्दी बना लो और इसे नगर के
प्रसाशक आमोन और राजकुमार योआश के पास ले
जाओ। 27उनसे कहो कि मीकायाह को बन्दीगृह में डाल
दे। उसे खाने को केवल रोटी और पानी दो। उसे वहाँ
तब तक रखो जब तक मैं युद्ध से घर न आ जाऊँ।”
28मीकायाह ने जोर से कहा, “आप सभी लोग सुने
जो मैं कहता हूँ। राजा अहाब, यदि तुम युद्ध से घर
जीवित लौट आओगे, तो समझना कि यहोवा ने मेरे
मुँह से अपना वचन नहीं कहा था।।”
29तब राजा अहाब और राजा यहोशापात रामोत में
अराम की सेना से युद्ध करने गए। यह गिलाद नामक
क्षेत्र में था। 30अहाब ने यहोशापात से कहा, “हम युद्ध की
तैयारी करेंगे। मैं ऐसे वस्त्र पहनूँगा जो मुझे ऐसा रूप देंगे
कि मैं ऐसा लगूँगा कि मैं राजा नहीं हूँ। किन्तु तुम अपने
विशेष वस्त्र पहनो जिससे तुम ऐसे लगों कि तुम राजा
हो।” इस प्रकार इस्राएल के राजा ने युद्ध का आरम्भ उस
व्यक्ति की तरह वस्त्र पहनकर किया जो राजा न हो।
31अराम के राजा के पास बत्तीस रथ–सेनापति थे।
उस राजा ने इन बत्तीस रथ सेनापतियों को आदेश दिया
कि वे इस्राएल के राजा को खोज निकाले। अराम के
राजा ने सेनापतियों से कहा कि उन्हें राजा को अवश्य
मार डालना चाहिये। 32अत: युद्ध के बीच इन सेनापतियों
ने राजा यहोशापात को देखा। सेनापतियों ने समझा कि
वही इस्राएल का राजा है। अत: वे उसे मारने गए।
यहोशापात ने चिल्लाना आरम्भ किया। 33सेनापतियों
ने समझ लिया कि वह राजा अहाब नहीं है। अत: उन्होंने
उसे नहीं मारा। 34किन्तु एक सैनिक ने हवा में बाण
छोड़ा, वह किसी विशेष व्यक्ति को अपना लक्ष्य नहीं
बना रहा था। किन्तु उसका बाण इस्राएल के राजा
अहाब को जा लगा। बाण ने राजा को उस छोटी जगह
में बेधा, जो शरीर का भाग उसके कवच से ढका नहीं
था। अत: राजा अहाब ने अपने सारथी से कहा, “मुझे
एक बाण ने बेध दिया है! इस क्षेत्र से रथ को बाहर ले
चलो। हमें युद्ध से दूर निकल जाना चाहिये।”
35सेनायें युद्ध में लड़ती रहीं। राजा अहाब अपने
रथ में ठहरा रहा। वह रथ के सहारे एक ओर झुका
हुआ था। वह अराम की सेना को देख रहा था। उसका
खून नीचे बहता रहा और उसने रथ के तले को ढक
लिया। बाद में, शाम को राजा मर गया। 36सन्ध्या के
समय इस्राएल की सेना के सभी पुरुषों को अपने
नगर और प्रदेश वापस लौटने का आदेश दिया गया।
37अत: राजा अहाब इस प्रकार मरा। कुछ व्यक्ति
उसके शव को शोमरोन ले आए। उन्होंने उसे वहीं
दफना दिया। 38लोगों ने अहाब के रथ को शोमरोन
में जल के कुंड में धोया। राजा अहाब के खून को रथ
से, कुत्तों ने चाटा और वेश्याओं ने पानी का उपयोग
नहाने के लिये किया। ये बातें वैसे ही हुई जैसा यहोवा
ने होने को कहा था।
39अपने राज्यकाल में अहाब ने जो कुछ किया
वह “इस्राएल के राजाओं के इतिहास” नामक पुस्तक
में लिखा है। उसी पुस्तक में राजा ने अपने महल को
अधिक सुन्दर बनाने के लिये जिस हाथी–दाँत का
उपयोग किया था, उसके बारे में कहा गया है और
उस पुस्तक में उन नगरों के बारे में भी लिखा गया है
जिसे उसने बनाया था। 40अहाब मरा, और अपने
पूर्वजों के पास दफना दिया गया। उसका पुत्र अहज्याह
राजा बना।

यहूदा का राजा यहोशापात

41इस्राएल के राजा अहाब के राज्यकाल के चौथे
वर्ष यहोशापात यहूदा का राजा हुआ। यहोशापात आसा
का पुत्र था। 42यहोशापात जब राजा हुआ तब वह
पैंतीस वर्ष का था। यहोशापात ने यरूशलेम में पच्चीस
वर्ष तक राज्य किया। यहोशापात की माँ का नाम
अजूबा था। अजूबा शिल्ही की पुत्री थी। 43यहोशापात
अच्छा व्यक्ति था। उसने अपने पूर्व अपने पिता के
जैसे ही काम किये। वह उन सबका पालन करता था
जो यहोवा चाहता था। किन्तु यहोशापात ने उच्च स्थानों
को नष्ट नहीं किया। लोगों ने उन स्थानों पर बलि–भेंट
करना और सुगन्धि जलाना जारी रखा।
44यहोशापात ने इस्राएल के राजा के साथ एक
शान्ति–सन्धि की। 45यहोशापात बहुत वीर था और
उसने कई युद्ध लड़े। जो कुछ उसने किया वह, “यहूदा

के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा है। [46]यहोशापात ने उन स्त्री पुरुषों को, जो शारीरिक सम्बन्ध के लिये अपने शरीर को बेचते थे, पूजास्थानों को छोड़ने के लिये विवश किया। उन व्यक्तियों ने उन पूजास्थानों पर तब सेवा की थी जब उसका पिता आसा राजा था।

[47]इस समय के बीच एदोम देश का कोई राजा न था। वह देश एक प्रशासक द्वारा शासित होता था। प्रशासक यहूदा के राजा द्वारा चुना जाता था।

यहोशापात का समुद्री बेड़ा

[48]राजा यहोशापात ने ऐसे जहाज बनाए जो महासागर में चल सकते थे। यहोशापात ने ओपीर प्रदेश में जहाजों को भेजा। वह चाहता था कि जहाज सोना लाएँ। किन्तु जहाज एश्योनगेबेर में नष्ट हो गए। जहाज कभी सोना प्राप्त करने में सफल न हो सके। [49]इस्राएल का राजा अहज्याह यहोशापात को सहायता देने गया। अहज्याह ने यहोशापात से कहा था कि वह कुछ ऐसे व्यक्तियों को उनके लिये प्राप्त करेगा जो जहाजी काम में कुशल हों। किन्तु यहोशापात ने अहज्याह के व्यक्तियों को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया।

[50]यहोशापात मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। वह दाऊद नगर में अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। तब उसका पुत्र यहोराम राजा बना।

इस्राएल का राजा अहज्याह

[51]अहज्याह अहाब का पुत्र था। वह राजा यहोशापात के यहूदा पर राज्यकाल के सत्रहवें वर्ष में राजा बना। अहज्याह ने शोमरोन में दो वर्ष तक राज्य किया। [52]अहज्याह ने यहोवा के विरुद्ध पाप किये। उसने वे ही पाप किये जो उसके पिता अहाब उसकी माँ ईज़ेबेल और नबात के पुत्र यारोबाम ने किये थे। ये सभी शासक इस्राएल के लोगों को और अधिक पाप की ओर ले गए। [53]अहज्याह ने अपने से पूर्व अपने पिता के समान असत्य देवता बाल की पूजा और सेवा की। अत: अहज्याह ने यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर को बहुत अधिक क्रोधित किया। यहोवा अहज्याह पर वैसा ही क्रोधित हुआ जैसा उसके पहले वह उसके पिता पर क्रोधित हुआ था।

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center
Last Updated: September 21, 2006

Copyright © 2006 by World Bible Translation Center
All rights reserved.

These Scriptures:

- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center
P.O. Box 820648
Fort Worth, Texas 76182, USA
Telephone: 1-817-595-1664
Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE
E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

Order online – To order a copy of our texts online, go to: http://www.wbtc.org

Current license agreement – *This license is subject to change without notice. The current license can be found at:* http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from: http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from: http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html